केन्द्रीय विद्यालय संगठन
जबलपुर संभाग

सहायक सामग्री

विषय - इतिहास

कक्षा–बारहवीं

2012-13

केन्द्रीय विद्यालय संगठन: जबलपुर संभाग

सहायक–सामग्री, कक्षा – बारहवीं (इतिहास) 2012-13.

मुख्य संरक्षक

मान्नीय श्री अविनाश दीक्षित, आई.डी.ए.एस.
आयुक्त, के.वि. सं (मुख्यालय), नई दिल्ली

संरक्षक

श्री वी.के. श्रीवास्तव
उपायुक्त, के.वि.सं, क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

कार्यशाला निदेशक

श्रीमती पीबीएस उषा

सहायक आयुक्त, के.वि.सं, क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

स्थल–निदेशक

डा. ए.के. पाण्डेय
प्राचार्य के.वि.1 जीसीएफ

संयोजक

श्री एस.के. पाण्डेय
प्राचार्य ग्रेड–2, के.वि. डिंडोरी

निर्माण तथा समीक्षा समिति के सदस्य

1 डा. (श्रीमती) वर्षा पांडेय, पीजीटी (इतिहास) के.वि.क्र.1, सागर
2 श्रीमती माया रत्नेश सिंह पी.जी.टी. (इतिहास) के.वि. क. 1 जी.सी.एफ जबलपुर
3 श्रीमती रेखा पथारिया, पी.जी.टी. (इतिहास) के.वि ओ.एफ.के,जबलपुर
4 श्री गिरीश बाबू कुस्तवार, पीजीटी (इतिहास) के.वि. 1 एसटीसी, जबलपुर
5. श्रीमती मनीषा वैद्य, पी.जी.टी. (इतिहास) के.वि क्र. 1, रीवा

तकनीकी सहायक

विवेक कुमार शर्मा, (पीजीटी कम्प्यूटर), के.वि. क्र.1, जीसीएफ, जबलपुर

कार्यशाला स्थल के.वि.क्र.1जीसीएफ, जबलपुर **दिनॉक 16 से 17 अगस्त 2012**

प्रस्तावना

इस सहायक सामग्री का निर्माण केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित कक्षा, बारहवीं (इतिहास) के नवीन पाठ्यक्रम के आधार पर किया गया है । इस सहायक सामग्री में तीन मॉडल प्रश्न पत्र, ब्लू प्रिंट तथा पर्याप्त व्याख्या और संकेतों के साथ मार्किंग स्कीम का समावेश किया गया है । विगत वर्ष के बोर्ड परीक्षा के प्रश्न पत्रों को हल सहित एवं सी.बी.एस.ई. के दिशानिर्देशों और नवीन पाठ्यक्रम में होने वाली कठिनाइयों के समाधान के लिए आवश्यक सामग्री जोड़ी गई है । इस सहायक सामग्री में दोनों हिन्दी अग्रेंजी के कुल 10 मानचित्र संलग्न किये गए है । विभिन्न कठिनाई स्तर पर अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए सारांश में महत्वपूर्ण बिन्दु, स्पष्टीकरण तथा संकेत दिए गए हैं ।

इस सहायक सामग्री का निर्माण हिन्दी और अंग्रेंजी में किया गया है । विद्यार्थियों को सुझाव दिया जाता है कि वे इस सहायक सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें । इसका नियमित अध्ययन और अभ्यास इतिहास में अच्छें अंक प्राप्त करने में सहायक होगा ।

संयोजक के निष्ठापूर्ण एवं समर्पित प्रयास तथा सहायक सामग्री का निर्माण,समीक्षा करने वाले विषय शिक्षक प्रशंसा के पात्र हैं ।

श्री वी.के. श्रीवास्तव
उपायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय सगंठन
क्षेत्रीय कार्यालय जबलपुर संभाग (म.प्र.)

विषय सूची

भाग – 1

विषय एक .....

ईटे, मनके तथा अस्थियॉ – हडप्पा सभ्यता

विषय दो .....

राजा, किसान और नगर
आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ
(लगभग 600 ई. पू. 600 ईसवी)

विषय तीन .....

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग – आरंभिक समाज
(लगभग 600 ई. पू. 600 ईसवी)

विषय चार .....

विचारक, विश्वास और इमारते – सांस्कृतिक विकास (लगभग 600 ईसा पूर्व से ईसा संवत् 600 तक)

विषय पॉच .....

यात्रियों के नजरिए – समाज के बारे में उनकी समझ (लगभग दसवी से सत्रहवी सदी तक)

विषय छः .....

भक्ति – सूफी परंपराएँ
धार्मिक विश्वासों में बदलाव और श्रध्दा ग्रंथ (लगभग आठवी से अठारहवी सदी तक)

विषय सात .....

एक साम्राज्य की राजधानी : विजयनगर (लगभग चौदहवीं से सोलहवीं सदी तक)

विषय आठ .....

किसान, जमींदार और राज्य
कृषि समाज और मुगल साम्राज्य (लगभग सोलहवी और सत्रहवी सदी)

विषय नौ .....

राजा और विभिन्न वृतांत – मुगल दरबार (लगभग सोलहवी और सत्रहवी सदी)

विषय दस .....

उपनिवेशबाद और देहात – सरकारी अभिलेखों का अध्ययन्

विषय ग्यारह .....

विद्रोही और राज
1857 का आंदोलन और उसके व्याख्यान

विषय बारह .....

औपनिवेशिक शहर – नगर – योजना, स्थापत्य

विषय तेरह .....

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन सविनय अवज्ञा और उससे आगे

विषय चौदह .....

विभाजन को समझना– राजनीति, स्मृति, अनुभव

विषय पंद्रह .....

संविधान का निर्माण – एक नए युग की शुरूआत

भाग – 2

अ. आदर्श प्रश्न –पत्र
ब. विगत वर्ष के बोर्ड प्रश्न पत्र 2011–12 (हल सहित)

भाग – 3

मानचित्रों की सूची

पाठ – 01
ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ
हड़प्पा सभ्यता

महत्वपूर्ण बिन्दु

- हड़प्पा सभ्यता का काल
  - पूर्व हड़प्पा 2600 ई पू से पहले
  - परिपक्क हड़प्पा 2600 ई पू से 1900 ई पू तक
  - उत्तर हड़प्पा 1900 ई पू के बाद
- हड़प्पा सभ्यता का विस्तार
  उत्तरी छोर मॉडा दक्षिणी छोर दैमाबाद
  पूर्वी छोर आलमगीरपुर पश्चिमी छोर सुत्कागेदडोर
- हड़प्पा सभ्यता की विशेषताएँ
- बस्तियो के दो भाग थे 1. दुर्ग 2. निचला शहर
- पूर्व नियोजित जल निकास व्यवस्था ।
- हडपा स्थलों से मिले शवाधानों में आमतौर पर मृतको को गर्तो में दफनाया जाता था ।
- मुहरों के द्वारा सुदूर क्षेत्रों के साथ संपर्क संभव हुआ ।
- विनिमय बाट के द्वारा किए जाते थे । बाट चर्ट नामक पत्थर से बनाए जाते थे । ये घनाकार होते थे और इनपर कुछ भी अंकित नहीं होता था ।
- कुछ पुरातत्वबिदों को यह मानना था कि हडप्पाई समाज का कोई शासक नही था, जबकि दूसरे पुरातत्वबिद का यह मानना था कि वहॉ कोई एक शासक के बजाए कई शासक होते थे ।
- सड़कों तथा गलियों को लगभग एक'ग्रिड' पद्वति में बनाया गया था और ये एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं।
- शिल्प कार्यों में मनके बनाना, शंख की कटाई, धातुकर्म, मुहर निर्माण तथा बाट बनाना सम्मिलित थे।

प्रश्नः– 1 हड़प्पा सभ्यता में मनके बनाने के लिए प्रयुक्त पदार्थो की सूची बनाइए। चर्चा करें कि इन पदार्थो को कैसे प्राप्त किया जाता था ? (2)

उत्तरः–मनकों के निर्माण में प्रयुक्त पदार्थों की विविधता उल्लेखनीय हैः कार्नीलियन (सुंदर लाल रंग का), जैस्पर, स्फटिक, क्वार्ट्ज तथा सेलखड़ी जैसे पत्थर; ताँबा, काँसा तथा सोने जैसी धातुएँ; तथा शंख, .फयॉन्स और पक्की मिट्टी, सभी का प्रयोग मनके बनाने में होता था।

दो तरीके जिनके द्वारा हड़प्पावासी शिल्प–उत्पादन हेतु माल प्राप्त करते थे

1 उन्होंने नागेश्वर और बालाकोट में जहॉ शॅख आसानी से उपलब्ध था, बस्तियॉ स्थापित कीं ।

2 उन्होंने राजस्थान के खेतड़ी अॅचल (तॉबे के लिए) तथा दक्षिण भारत (सोने के लिए) जैसे क्षेत्रों में अभियान भेजा ।

प्रश्नः– 2 अन्य सभ्यताओं की अपेक्षा सिन्धु घाटी की सभ्यता के विषय में हमारी जानकारी कम क्यों है ? अपने तर्क से व्याख्या करें। (2)

उत्तरः–अन्य सभ्यताओं की अपेक्षा सिन्धु घाटी की सभ्यता के विषय में हमारी कम जानकारी निम्नलिखित कारणों से है

- उस काल की लिपि आज तक पढ़ी नहीं जा सकी है।
- केवल पुरातात्विक अवशेषों का अध्ययन करते हुए अनुमान के आधार पर ही

सिन्धु घाटी सभ्यता के विषय में (सभ्यता का समय व विकास आदि का) ज्ञान प्राप्त कर पाए है जबकि अन्य सभ्यताओं के सम्बन्ध में जानकारी का मुख्य आधार उनकी लिपि का पढ़ा जाना है।

प्रश्नः— 3 हडप्पा सभ्यता के अध्ययन के दौरान कनिंघम के मन में क्या भ्रम था ? (2)

उत्तरः—

- आरंभिक बस्तियों की पहचान के लिए उन्होंने चौथी से सातवीं शताब्दी ईसवी के बीच उपमहाद्वीप में आए चीनी बौद्ध तीर्थयात्रियों द्वारा छोड़े गए वृतांतों का प्रयोग किया।
- यहाँ तक कि कनिंघम की मुख्य रुचि भी आरंभिक ऐतिहासिक ;लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व से चौथी शताब्दी ईसवी तथा उसके बाद के कालों से संबंधित पुरातत्व में थी।
- कई और लोगों की तरह ही उनका भी यह मानना था कि भारतीय इतिहास का प्रारंभ गंगा की घाटी में पनपे पहले शहरों के साथ ही हुआ था

प्रश्नः—4 हड़प्पा सभ्यता के अध्ययन के दौरान मार्शल और कनिंघम के द्वारा अपनाए गए तकनीक में क्या अंतर था ? (2)

उत्तरः—

- मार्शल, पुरास्थल के स्तर विन्यास को पूरी तरह अनदेखा कर पूरे टीले में समान परिमाण वाली नियमित क्षैतिज इकाइयों के साथ—साथ उत्खनन करने का प्रयास करते थे। इसका यह अर्थ हुआ कि अलग—अलग स्तरों से संबद्ध होने पर भी एक इकाई विशेष से प्राप्त सभी पुरावस्तुओं को सामूहिक रूप से वर्गीकृत कर दिया जाता था। परिणामस्वरूप इन खोजों के संदर्भ के विषय में बहुमूल्य जानकारी हमेशा के लिए लुप्त हो जाती थी।
- आर.ई.एम. व्हीलर ने इस समस्या का निदान किया। व्हीलर ने पहचाना कि एकसमान क्षैतिज इकाइयों के आधार पर खुदाई की बजाय टीले के स्तर विन्यास का अनुसरण करना अधिक आवश्यक था।

प्रश्नः—5 शवाधान हड़प्पा सभ्यता में व्याप्त सामाजिक विषमताओं को समझने का एक बेहतर स्रोत है । व्याख्या करें । (2)

डतरः—1 शवाधान का अध्ययन सामाजिक विषमताओं को परखने की एक विधि है ।

2 हड़प्पा स्थलों से मिले शवाधानों में आमतौर पर मृतकों को गर्तो में दफनाया जाता था । इन गर्तो की बनावट एक दुसरे से भिन्न होती थी ।

3 कुछ कब्रों में कंकाल के पास मृदभाण्ड तथा आभूषण मिले हैं जो इस ओर संकेत करते हैं कि इन वस्तुओं का प्रयोग मृत्युपरांत किया जा सकता है । पुरूष एवं स्त्री दोनों के शवाधानों से आभूषण मिले है ।

प्रश्नः—6 हड़प्पाई जल निसारण प्रबंध के बारे में लेख लिखें । (5)

उतरः—इस नगर की एक प्रमुख विशेषता, इसका जल निकास प्रबंध था । इस नगर की नालियॉ मिट्टी के गारे, चुने और जिप्सम की बनी हुई थी । इनको बड़ी ईटों और पत्थरों से ढ़का जाता था । जिनको ऊपर उठाकर उन नालियों की सफाई की जा सकती थी । धरों से बाहर की छोटी नालियॉ , सड़कों के दोनो ओर बनी हुई थी, जो बड़ी और पक्की नालियों में आकर मिल जाती थी । वर्षा के पानी के निकास के लिए बड़ी नालियों का घेरा ढ़ाई से पॉच फुट तक था। घरों से गंदे पानी के निकास के लिए सड़कों के दोनों ओर गड्ढे बने हुए थे । इस तथ्यों से यह प्रतीत होता है कि सिंधु घाटी के लोग अपने नगरो की सफाई की ओर बहुत ध्यान देते थे ।

प्रश्नः—7 हड़प्पाई समाज में शासकों द्वारा किये जाने वाले संभावित कार्यो की चर्चा कीजिए। (5)

उत्तरः— विद्वानों की राय है —

- हड़प्पाई समाज में शासकों द्वारा जटिल फैसले लेने और उन्हें कार्यान्वित करने जैसे महत्वपूर्ण कार्य किये जाते थे। वे इसके लिए एक साक्ष्य प्रस्तुत करते हुए कहते है कि हड़प्पाई पुरावस्तुओं में असाधारण एकरूपता को ही ले, जैसा कि मृदमांडों, मुहरों, बांटों तथा ईंटों से स्पष्ट है।
- बस्तियों की स्थापना के बारे में निर्णय लेना बड़ी संख्या में ईंटों को बनाना, शहरो में विशाल दीवारें, सार्वजनिक इमारतें, उनके नियोजन करने का कार्य, दुर्ग के निर्माण से पहले चबूतरों का निर्माण कार्य के बारे में निर्णय लेना, लाखो की संख्या में विभिन्न कार्यो के लिए श्रमिकों की व्यवस्था करना जैसे महत्वपूर्ण ओर कठिन कार्य संभवतः शासक ही करता था।
- कुछ पुरातत्वविद यह मानते है कि सिन्धु घाटी की समकालीन सभ्यता मैसोपोटामिया के समान हड़प्पाई लोगों में भी एक पुरोहित राजा होता था जो प्रासाद (महल) में रहता था। लोग उसे पत्थर की मूर्तियो में आकार देकर सम्मान करते थे। संभवतः धार्मिक अनुष्ठान उन्हीं के द्वारा किया या कराया जाता था।
- कुछ पुरातत्वविद इस मत के है कि हड़प्पाई समाज में शासक नही थे तथा सभी की सामाजिक स्थिति समान थी। दूसरे पुरातत्वविद यह मानते है कि यहां कोई एक नही बल्कि कई शासक थे जैसे मोहनजोदडों, हड़प्पा आदि के अपने अलग—अलग राजा होते थे।
- कुछ और यह तर्क देते थे कि यह एक ही राज्य था जैसा कि पुरावस्तुओ में समानाओं, नियोजित बस्तियों के कच्चे माल, ईंटों के आकार निश्चित अनुपात तथा बस्तियों के कच्चे माल के स्त्रोतों के समीप संस्थापित होने से स्पष्ट है।

प्रश्नः—8 आप यह कैसे कह सकते है कि हड़प्पा संस्कृति एक नागरीय सभ्यता थी ? (5)

उत्तरः—हॉ, हम कह सकते है कि हड़प्पा संस्कृति एक नागरीय सभ्यता थी। निम्नलिखित उदाहरण उस बात को दर्शाते है

- नगर सुनियोजित और घनी आबादी वाले थे।

- सड़के सीधी और चौड़ी थी।
- घर पक्की लाल ईंटों के बने थे और एक से अधिक मंजिला में थे।
- प्रत्येक घर में कुंआ व स्नानघर थे।
- जल निकासी की उत्तम व्यवस्था थी जो मुख्य जल निकासी से जुड़ी थी।
- हड़प्पा नगर में सार्वजनिक भवन देखने को मिले है।
- लोथल में डोकयार्ड मिले है जिससे पता चलता है कि मुख्य व्यापारिक केन्द्र रहे थे।
- हड़प्पा संस्कृति के पतन के बाद नगर नियोजन लगभग भूल गये और नगर जीवन लगभग हजार वर्ष तक देखने को नहीं मिला।

प्रश्नः—9 हड़प्पाई लोगों की कृषि प्रौद्योगिकी पर एक लेख लिखें । (5)

उतरः—हड़प्पाई लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था । उत्खनन के दौरान अनाज के दानों का पाया जाना इस ओर संकेत करता है । किंतु कृषि की विधियों का स्पष्ट जानकारी नही मिली है । खेंतों के जोतने के संकेत कालीबंगन से मिले है ।

मुहरों पर वृषभ का चित्र पाया जाना भी इस ओर ही संकेत करता है । इस आधार पर पुरातत्वविद अनुमान लगाते हैं कि खेत जोतने के लिए बैलों का प्रयोग होता था कई स्थलों से मिट्टी के बने हल भी मिले हैं । ऐसे भी प्रमाण मिले हैं, जिससे यह पता चलता है कि दो फसलें एक साथ भी उगाया जाती थीं ।

मुख्य कृषि उपकरण कुदाल थी तथा फसल काटने के लिए लकड़ी के हत्थों पर पत्थर या धातु के फलक लगाए जाते थे । अधिकांश हड़प्पा क्षेत्रों में सिंचाई के साधनों को विकसित किया गया था क्योंकि यह क्षेत्र अर्ध शुष्क प्रवृत्ति का है । सिंचाई के मुख्य साधन नहर और कुएँ थें । अफगानिस्तान में नहरों के अवशेष मिले हैं । प्रायः सभी जगह कुएँ मिले हैं और धौलावीरा में जलाशय मिला है । संभवतः सिंचाई हेतु इसमें जल संचय किया जाता होगा ।

प्रश्नः—10 चर्चा कीजिए कि पुरातत्वविद किस प्रकार अतीत का पुननिर्माण करते है ? (10)
उतरः—

1 कई बार अप्रत्यक्ष साक्ष्य का भी सहारा लेना पड़ता है और वे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष साक्ष्य में समानता ढूँढ़ते हैं ।
2 भोजन अथवा भोज्य पदार्थो की पहचान के लिए मिले अवशेषों में अन्न अथवा अनाज पीसने या पकाने के यंत्र अथवा बरतनों का अध्ययन किया जाता है ।
3 पुरातत्वविद पुरावस्तुओं को ढूँढकर उनका अध्ययन कर अतीत का पुननिर्माण करते है । पुरावस्तुओं की खोज उद्यम का आरंभ मात्र है ।
4 इसक बाद पुरातत्वविद अपनी खोजों को वर्गीकृत करते है ।
5 पुरातत्वविदों को संदर्भ की रूपरेखा भी विकसित करनी पड़ती है ।
6 शिल्प उत्पादन के केन्द्रों की पहचान के लिए प्रस्तर पिण्ड,औजार, तॉबा—अयस्क जैसा कच्चा माल इत्यादि ढूँढते है ।

7 वर्गीकरण का एक सामान्य सिद्धांत प्रयुक्त पदार्थो जैसे पत्थर, मिट्टी, धातु, अस्थि से संबंधित होता है ।

8 किसी भी वस्तु को उसकी वर्तमान उपयोग से जोड़ा जाता है ।

9 सांस्कृतिक एवं सामाजिक भिन्नता को जानने के लिए कई अन्य विधियों का प्रयोग करते है । शवाधानों का अध्ययन ऐसा ही एक प्रयोग है ।

10 पुरातत्वविद किसी पुरावस्तु की उपयोगिता को समझने का प्रयास उसके उत्खनन स्थल से भी करते है ।

प्रश्नः— 11 अनुच्छेद आधारित प्रश्न

निम्नलिखित अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखिएः—

एक 'आक्रमण' के साक्ष्य

डैडमैन लेन एक सँकरी गली है, जिसकी चौड़ाई 3 से 6 फीट तक परिवर्ती है . . . . वह बिदु जहाँ यह गली पश्चिम की ओर मुड़ती है, 4 फीट तथा 2 इंच की गहराई पर एक खोपड़ी का भाग तथा एक वयस्क की छाती तथा हाथ के ऊपरी भाग की हडिडयाँ मिली थीं। ये सभी बहुत भुरभुरी अवस्था में थीं। यह धड़ पीठ के बल, गली में आड़ा पड़ा हुआ था। पश्चिम की ओर 15 इंच की दूरी पर एक छोटी खोपड़ी के कुछ टुकड़े थे। इस गली का नाम इन्हीं अवशेषों पर आधारित है।

जॉन मार्शल, मोहनजोदड़ो एंड द इंडस सिविलाईजेशन, 1931 से उद्धत।

1925 में मोहनजोदड़ो के इसी भाग से सोलह लोगों के अस्थि—पंजर उन आभूषणों सहित मिले थे जो इन्होंने मृत्यु के समय पहने हुए थे।

बहुत समय पश्चात 1947 में आर.ई.एम. व्हीलर ने जो भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के तत्कालीन डायरेक्टर जनरल थे, इन पुरातात्विक साक्ष्यों का उपमहाद्वीप में ज्ञात प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद के साक्ष्यों से संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने लिखाः

ऋग्वेद में पुर शब्द का उल्लेख है जिसका अर्थ है प्राचीर, किला या गढ़। आर्यो के युद्ध के देवता इंद्र को *पुरंदर,* अर्थात् गढ़—विध्वंसक कहा गया है। ये दुर्ग कहाँ हैं .... या थे ....? पहले यह माना गया था कि ये मिथक मात्र थे ....हड़प्पा में हाल में हुए उत्खननों ने मानो परिदृश्य बदल दिया है। यहाँ हम मुख्यतः अनार्य प्रकार की एक बहुत विकसित सभ्यता पाते हैं जिसमें अब प्राप्त जानकारी के अनुसार विशाल किलेबंदियाँ की गई थीं .... यह सुदृढ़ रूप से स्थिर सभ्यता कैसे नष्ट हुई ? हो सकता है जलवायु संबंधी, आर्थिक अथवा राजनीतिक ह्रास ने इसे कमजोर किया हो, पर अधिक संभावना इस बात की है कि जानबूझ कर तथा बड़े पैमाने पर किए गए विनाश ने इसे अंतिम रूप से समाप्त कर दिया। यह मात्र संयोग ही नहीं हो सकता कि मोहनजोदड़ो के अंतिम चरण में आभास होता है कि यहाँ पुरुषों, महिलाओं तथा बच्चों का जनसंहार किया गया था। पारिस्थितिक साक्ष्यों के आधार पर इंद्र अभियुक्त माना जाता है।

आर.ई.एम. व्हीलर, हड़प्पा 1946, *एंशिएंट इंडिया* (*जर्नल*) 1947 *से उद्धत।*

1960 के दशक में जॉर्ज डेल्स नामक पुरातत्वविद ने मोहनजोदड़ो में जनसंहार के साक्ष्यों पर सवाल उठाए। उन्होंने दिखाया कि उस स्थान पर मिले सभी अस्थि–पंजर एक ही काल से संबद्ध नहीं थेः

हालाँकि इनमें से दो से निश्चित रूप में संहार के संकेत मिलते हैं, ... पर अधिकांश अस्थियाँ जिन संदर्भों में मिली हैं वे इंगित करती हैं कि ये अत्यंत लापरवाही तथा श्रद्धाहीन तरीके से बनाए गए शवाधान थे। शहर के अंतिम काल से संबद्ध विनाश का कोई स्तर नहीं है, व्यापक स्तर पर अग्निकांड के चिह्न नहीं हैं, चारों ओर फैले हथियारों के बीच कवचधारी सैनिकों के शव नहीं हैं। दुर्ग से जो शहर का एकमात्र किलेबंद भाग था, अंतिम आत्मरक्षण के कोई साक्ष्य नहीं मिले हैं।

जी.एफ.डेल्स, 'द मिथिकल मैसेकर एट मोहनजोदड़ो', *एक्सपीडीशन,* 1964 से उद्धत।

जैसा कि आप देख सकते हैं कि तथ्यों का सावधानीपूर्वक पुनर्निरीक्षण कभी–कभी पूर्ववर्ती व्याख्याओं को पूरी तरह से उलट देता है।

(क) किस पुरातत्वविद ने यह साक्ष्य प्रस्तुत किया है ? (1)

उत्तर जन मार्शल ने यह साक्ष्य अपनी पुस्तक मोहनजोदड़ो एंड द इंडस सिविलाईजेशन में दिया है ।

(ख) हड़प्पा सभ्यता के विनाश के किस तर्क की ओर यह अनुच्छेद इशारा करता है ? (1)

उत्तर यह साक्ष्य हड़प्पा के विनाश में विदेशी हमलो की भूमिका की ओर इशारा करता है ।

(ग) कौन इस प्रमाण को ऋग्वेद के साथ जोड़ता है और क्यों ? (3)

उत्तर आर. ई एम व्हीलर इस प्रमाण को ऋग्वेद के साथ जोड़ता है । । क्योंकि ऋग्वेद में *पुर शब्द* का उल्लेख है जिसका अर्थ है प्राचीर, किला या गढ़। आर्यों के युद्ध के देवता इंद्र को *पुरंदर,* अर्थात् गढ़–विध्वंसक कहा गया है।

(घ) किसने और कैसे इसकी एक अलग व्याख्या की है ? **(3)**

उत्तर जॉर्ज डेल्स ने इस प्रमाण के विपरीत सिद्धांत का प्रतिपादन किया है । वो इस बात को मानने से हिचकते है कि यह हमला आर्यो ने किया था । उनके अनुसार जो कंकाल यहॉ मिलें है वो हड़प्पा काल के नही है । इस मात्रा में कंकाल मिलें है तथा उनकी जो अवस्था है उससे यह भी कहा जा सकता है कि यह एक बूचड़खाने का शवाधान हो । किसी भी शव पर शस्त्र के घाव, कोई हथियार जलने के अवशेष नही प्राप्त हुए है ।

पाठ – 2
राजा किसान और नगर
महत्वपूर्ण बिन्दु

– हड़प्पा सभ्यता के बाद लगभग 1500 वर्षो के दौरान उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में कई प्रकार के विकास हुए जैसे –ऋग्वेद का लेखन कार्य कृषक बस्तियों का उदय अंतिम संस्कार के नये तरीके, नगरों का उदय आदि ।

– ऐतिहासिक स्त्रोत अभिलेख, ग्रंथ, सिक्के, चित्र आदि

– अशोक के अभिलेख – ब्राह्मी तथा खरोष्ठी लिपियों में लिखे गए है ।

– छठी शताब्दी में ई0 पू0 को एक महत्वपूर्ण परिवर्तन काल माना जाता है । इसको राज्यों, नगरों लोहे के प्रयोग और सिक्कों के विकास से जोड़ा गया है इस समय बौद्व – जैन धर्म तथा अन्य दार्शनिक विचारधाराओं का विकास हुआ ।

– बौद्व – जैन धर्मो के ग्रंथो में सोलह महाजनपदों का उल्लेख मिलता है । मुख्य है – वज्जि, मगध, कौशल, कुरू, पांचाल, गांधार और अवंति जैसे आदि ।

अतिलघु प्रश्न (02 अंक)

प्रश्नः– 1 महापाषाण क्या है ?

उत्तरः– अ. ई. पू.प्रथम सहस्त्राब्दी के दौरान मध्य और दक्षिण भारत में पाए जाने वाले पत्थरों के बडे – बडे ढॉचे हैं ।

ब. इन्हें कब्रगाहों के ऊपर रखा जाता था । शवों के साथ विभिन्न प्रकार के लोहें के उपकरण और औजारों को दफनाया जाता था ।

प्रश्नः–2 छठी शताब्दी ई. पू. को प्रारंभिक भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी काल क्यों कहा जाता था ?

उत्तरः– अ. इस काल को प्रायः आरंभिक राज्यों, लोहे के बढते प्रयोग और सिक्कों के साथ जोडा जाता है ।

ब. इसी काल में बौद्व और जैन सहित विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं का उदय हुआ ।

प्रश्नः– 3 धम्म महामात्त कौन थे ?

अ. सम्राट असोक द्वारा नियुक्त विशेष अधिकारी ।

ब. धम्म के प्रचार के लिए इनकी नियुक्ति की गई थी ।

प्रश्नः–4 मौर्यो के बारे में जानने के लिए कोई दो स्रोतों के नाम लिखिए ?

उत्तरः— कौटिल्य का अर्थशास्त्र

अ. मेगस्थनीज का विवरण — इंडिका ।

ब. असोक का अभिलेख ।

प्रश्नः—5 कुषाण कौन थे ?

उत्तरः— चीन में रहने वाले एक कबायली जाति ।

अ. मध्य एशिया से लेकर पश्चिमोत्तर भारत तक एक विशाल साम्राज्य में शासन ।

ब. भारत में सोने के सिक्के सबसे पहले कुषाणों ने जारी किया था ।

प्रश्नः—6 असोक के अभिलेख किन —किन भाषाओं व लिपियों में लिखे जाते थे ?

उत्तरः— क भाषा—प्राकृत भाषा ब्राहमी लिपि में और यूनानी भाषा—खरोष्ठी लिपि में ।

लघु प्रश्न (05 अंक)

प्रश्नः—7 मगध के एक शक्तिशाली राज्य के रूप में उदय के कारणों की चर्चा कीजिए ?

उत्तरः— महत्वाकांक्षी शासक जैंसे विम्बिसार, अजातशत्रु, महापद्मनन्द ।

2. लोहे की खाने
1. उपजाऊ मिट्टी
2. जंगली क्षेत्रों में हाथी उपलब्ध थे, जो सेना का महत्वपूर्ण अंग था ।
3. दो राजधानियॉ थीं, राजगृह किले बंद शहर था । पाटली पुत्र — गंगा के किनारे बसी हुई थी ।

प्रश्नः—8 महाजनपदों की प्रमुख पॉच विशेषताओं की व्याख्या कीजिए ?

उत्तरः— 1. अधिकांश महाजनपदों पर राजा का शासन होता था, लेकिन गण और संघ के नाम से प्रसिद्व राज्यों में कई लोगों का समूह शासन था ।
2. प्रत्येक महाजनपदों की एक किलेबंद राजधानी होती थी ।
3. स्थायी सेना जिन्हें प्रायः कृषक वर्ग से नियुक्त किया जाता था और नियमित नौकरशाही ।
4. धर्मशास्त्र में शासक सहित अन्य के लिए नियमों का निर्धारण, राजा क्षत्रिय वर्ग से ।
5. शासकों का काम किसानों, व्यापारियों और शिल्पकारों से कर वसूलना ।

प्रश्नः—9 अशोक के धम्म के बारे में लिखे ? 5

उत्तरः— 1. बडों का आदर करना
2. सन्यासियों और ब्राहमणों के प्रति उदारता
3. सेवकों और दासों के साथ उदार व्यवहार
4. दूसरे के धर्मों और परंपराओं का आदर
5. धम्म महामात की नियुक्ति

प्रश्नः—10 छठी शताब्दी ई. पू. से छठी शताब्दी ई तक कृषि क्षेत्र में हुए मुख्य परिवर्तनों की उल्लेख कीजिए ?

उत्तरः— 1. कृषि उत्पादकता को बढ़ाने के लिए लोहे के फाल वाले हल का प्रयोग ।
2. गंगा की घाटी में धान की रोपाई
3. सिंचाई के लिए कुओं,तालाबों व नहरों का प्रयोग ।
4. पंजाब और राजस्थान जैसे अर्धशुष्क जमीनवाले क्षेत्रों में खेती के लिए कुदाल का प्रयोग ।
5. उपज बढ़ने से साधनों पर नियंत्रण के कारण बड़े – बड़े जमींदार और ग्राम प्रधान अधिक शक्तिशाली और किसानों पर नियंत्रण ।
6. शासक वर्ग भूमिदान के द्वारा कृषि को नए क्षेत्रों में प्रोत्साहित करने की नीति को अपनाया ।

प्रश्नः—11 इतिहास की पुनः निर्माण में अभिलेख किस तरह सहायता करते हैं ?

उत्तरः— 1. शासकों एवं उनकी उपलब्धियों के बारे में जानकारी ।
2. लिपि और भाषा की जानकारी
3. भूमिदान और अर्थव्यवस्था के बारे में जानकारी ।
4. साम्राज्य का विस्तार ।
5. सामाजिक और धार्मिक जीवन के बारे में जानकारी ।

प्रश्नः—12 मौर्य प्रशासन की प्रमुख विशेषताएँ क्या थी ? 10

उत्तरः— 1. केन्द्रीय शासन – राजा का नियंत्रण विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, सेना तथा वित्त पर था ।
2. प्रांतीय शासन – प्रांतीय शासन कई प्रांतों में बांट दिया गया था।
3. स्थानीय शासन – पाटलीपुत्र नगर का शासन 30 सदस्यों के एक आयोग द्वारा किया जाता था।
4. राजा साम्राज्य को उच्च अधिकारियों की सहायता से चलाता था ।
5. मौर्य साम्राज्य के पॉच प्रमुख राजनैतिक केंद्र
6. कानून और व्यवस्था
7. संगठित सेना – मेगस्थनीज ने सैनिक गतिविधियों के संचालन के लिए एक समिति और छः उपसमितियों का उल्लेख किया है ।
8. धम्म प्रचार के लिए धम्म महामात्त की नियुक्ति ।
9. भूमिकर, सिंचाई और सड़कों के प्रबंध के लिए विभिन्न अधिकारी होते थे।
10. गुप्तचर विभाग – गुप्तचर विभाग बहुत सुदृढ़ था।

प्रश्नः—13 निम्नलिखित अनुच्छेंद को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उनके अंत में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

सम्राट के अधिकारी क्या – क्या कार्य करते थे ।

मेगस्थनीज के विवरण का एक अंश दिया गया है । साम्राज्य के महान अधिकारियों में से कुछ नदियों की देख – रेख और भूमि मापन का काम करते हैं । जैसा कि मिस्र में होता था । कुछ प्रमुख नहरों से उपनहरों के लिए छोड़े जाने वाले पानी के मुखद्वार का निरीक्षण करते हैं ताकि वह हर स्थान पर पानी की समान पूर्ति हो सकें । यही अधिकारी शिकारियों का संचालन करते हैं । और शिकारियों के कृत्यों के आधार पर उन्हें इनाम या दंड देते हैं । वे कर वसूली करते हैं और भूमि से जुड़े सभी व्यवसायों का निरीक्षण करते हैं। साथ ही लकड़हारों, बढ़ई, लोहारों और खननकर्ता का भी निरीक्षण करते हैं ।

प्रश्नः– क. साम्राज्य के महान अधिकारियों के कर्त्तव्यों की व्याख्या कीजिए ? (3)

उत्तरः– 1. साम्राज्य के महान अधिकारियों में से कुछ नदियों की देख–रेख और भूमि मापन का काम करते थे ।

2. कुछ प्रमुख नहरों से उपनहरों के लिए छोडे जाने वाले पानी के मुखद्वार का निरीक्षण करते थे ताकि हर स्थान पर पानी का समान पूर्ति हो सके

3. यही अधिकारी शिकारियों का संचालन करते थे, शिकारियों के कृत्यिों के आधार पर ईनाम या दंड़ देते थे, कर वसूली करते थे, भूमि से जुड़े सभी व्यवसायों का निरीक्षण करते थे, साथ ही लकडहारों बढ़ई लोहारों और खनन कर्ताओं का भी निरीक्षण करते थे ।

प्रश्नः– ख. सैनिक गतिविधियों के संचालन के लिए नियुक्त उपसमितियों की भूमिका की व्याख्या कीजिए ? (3)

उत्तरः– 1. सैनिक गतिविधियों के संचालन के लिए एक समिति और छः उपसमिति का उल्लेख मेगास्थनिज ने किया हैं इन उपसमिति का काम नौसेना, यातायात और खानपान, पैदल सेना, अश्वारोही, रथारोहियों और हाथियों का संचालन करना था ।

2. दूसरी समिति का दायित्व विभिन्न प्रकार का था – उपकरणों को ढ़ोने के लिए बैलगाड़ियों की व्यवस्था सैनिकों के लिए भोजन जानवरों के लिए चारे की व्यवस्था तथा सैनिकों के देखभाल के लिए सेवकों और शिल्पकारों की नियुक्ति करना ।

प्रश्नः– ग असोक ने अपने साम्राज्य को एकजुट रखने के लिए क्या किया ? (2)

उत्तरः– 1. असोंक ने धम्म के प्रचार के द्वारा अपने साम्राज्य को एकजुट रखने की कोशिश की ।

2. धम्म के प्रचार के लिए धम्म महामात्त नाम से विशेष अधिकारियों की नियुक्ति की ।

पाठ – 3
बंधुत्व, जाति तथा वर्ग
आरभिक समाज
(लगभग 600 ई. पू. 600 ई.)

महात्वपूर्ण बिन्दु

- सामाजिक इतिहास – महाभारत का उपयोग, सामाजिक इतिहास की समस्याएं, जाति वर्ग, कबिले आदि की पुनर्रचना हेतु अन्य स्त्रोत
- ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि रचना के साधन – परिवर्तनो के प्रभाव
- अभिलेख, महाभारत के स्त्रोत तथा विषय
- बंधुता एव विवाह, परिवार, पितृवंशिक व्यवस्था, विवाह के नियम, स्त्री का ग्रोत्र, माता का स्थान
- सामाजिक विशेषताएं, वर्ण व्यवस्था, अक्षत्रिय राजा, जाति, एकीकरण, अधीनता और संघर्ष

प्रश्न : 1 महाकाव्य का अर्थ स्पष्ट कीजिए । (2)

उत्तरः– एक लम्बी कविता जिसमें किसी नायक अथवा राष्ट्र के जीवन व उपलब्धियों का वर्णन हो । रामायण तथा महाभारत इसके उदाहरण है ।

प्रश्न :–2 मनुस्मृति का दो महत्व बताइए । (2)

उत्तरः– 1. यह तात्कालिक समाज के नियमों तथा प्रथाओं का वर्णन देता है ।
2. इसका प्रभाव आज भी हिन्दुओं की जीवन शैली में दिखाई देता है ।

प्रश्नः– 3 महाभारत का युद्व क्यों हुआ था ? इसका क्या परिणाम हुआ ? (2)

उत्तरः– महाभारत का युद्व जमीन तथा अधिकारों को लेकर हुआ था । इसमें पाण्डवों की विजय हुई ।

प्रश्नः– 4 कुल तथा जाति का क्या अर्थ है। (2)

उत्तरः– संस्कृत ग्रन्थों में कुल शब्द का प्रयोग परिवार के लिए और जाति का बाधंवों के बडे समूह के लिए होता था ।

प्रश्न :–5 अर्तविवाह से क्या तात्पर्य है (2)

उत्तरः– अर्तविवाह में वैवाहिक सबंध समूह के मघ्य ही होते है । यह समूह गोत्र, कुल अथवा जाति या फिर एक ही स्थान पर बसने वालो का हो सकता है ।

प्रश्नः–6 चाडांल किसे कहा जाता था ? (2)

उत्तरः– प्राचीन काल में वह कार्य करने वाले लोग जिन्हें उच्च वर्ग वर्जित मानता था जैसे शवों को दफन करना या जलाना मृत्य पशुओं को उठाना तथा उनका चमडा निकालना इत्यादि ।

प्रश्नः–7 महाभारत की भाषा तथा विषयवस्तु पर प्रकाश डालिए ? (5)

उत्तरः– 1.महाभारत को मूलरूप में संस्कृत में लिखा गया है ।
2.भाषा सरल व सुबोध है ?
3.यह एक गतिशील ग्रंथ है ?
4.इसके अनेक पुर्नव्याख्याऍं आस्तित्व में आई ?
5.इसके अनेक प्रसंगो को मूर्तिकला नाट्य कला तथा नृत्य कला में देखा जा सकता है ।

प्रश्नः–8 महाभारत के महत्व पर प्रकाश डालिए ? (5)

उत्तरः– 1.भारतीय संस्कृति तथा हिन्दू धर्म के विकास का लेख जोखा है ।
2.यह एक बहुआयामी ग्रंथ है ।
3.समाज के सभी अंग जैसे राजनीति, धर्म, दर्शन तथा आदर्श की झलक मिलती है ।
4.इसमें युद्व व शांति, सदगुण व दुर्गुण की व्याख्या की गई है ।
5.भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण स्त्रोत है।रूपक कथाऍं संभवतः काल्पनिक है ।

प्रश्नः–9 महाभारत काल के द्वितीय चरण में (बारहवी से सातवी शताब्दी ई. पू. में) मिलने वाले घरों के बारे में बी.बी. लाल ने क्या लिखा है ? (5)

उत्तरः– 1. बी.बी. लाल को यहॉ आबादी के पॉच स्तरों के साक्ष्य मिलें है ।
2. इनमें से दूसरा व तीसरा स्तर महत्वपूर्ण है ।
3. दूसरे स्तर के बारे में बी.बी. लाल ने पाया कि आवास घरों की कोई निश्चित परियोजना नहीं थी ।
4. मिट्टी की बनी दीवारे तथा कच्ची मिट्टी की ईटे अवश्य मिली है ।
5. कुछ घरों की दीवारे सरकन्डो की बनी थी ।

प्रश्नः–10 किन मायनों में सामाजिक अनुबंध की बौद्ध अवधारणा समाज के उस ब्रहमणीय दृष्टिकोण से भिन्न थी जो पुरूषसुक्त पर आधारित था ? (5)

उत्तरः– 1. बौद्वधर्म में समाज की विषमता को सत्य माना है ।
2. यह विषमता नैसर्गिक नही थी और न ही स्थाई ।
3. ब्राहमणीय दृष्टि से इस असमानता का आधार जन्म है ।
4. बौद्व धर्म में मानव तथा वनस्पति को शुरू से एक दूसरे पर परस्पर निर्भर माना है ।
5. राजा लोगों द्वारा चुना जाता था जिसे सेवाओं के बदले में कर दिया जाता था ।

प्रश्नः–11 प्राचीनकाल के सामाजिक मूल्यों के अध्ययन के लिए महाभारत एक अच्छा स्त्रोत है । (10)

उत्तरः–

1. महाभारत मुख्य रूप से सबंधियों के बीच युद्व की कहानी है इसलिए इसमें सामाजिक जीवन का झलक मिलती है ।
2. समाज में पितृवंशिक्ता का पालन होता था । पैतृक सम्पति पर केवल पुत्रों का अधिकार था ।
3. पुत्रियों का विवाह गौत्र के बाहर उचित समय पर करना पिता का कर्तव्य था ।
4. विशिष्ट परिवारों में बहुपति प्रथा भी प्रचलित थी द्रौपदी के पॉच पति थे ।
5. पुत्र के जन्म को ज्यादा महत्वपूर्ण समझा जाता था ।
6. कन्यादान पिता का महत्वपूर्ण कर्त्तव्य माना जाता था।
7. विवाह के अनेक प्रकार थे। राक्षसी हिडिम्बा का भीम से विवाह हुआ था।
8. माता का स्थान सर्वोच्च था। पाण्डवों ने अपनी मां कुन्ती की आज्ञा का सम्मान करते हुये द्रोपती से विवाह किया था।
9. महाभारत वर्णों तथा उनसे जुड़े व्यवसायों की जानकारी देता है।
10. परिवार में वृध्द पुरूष का अधिपत्य था।

प्रश्नः–12 निम्नलिखित अनुच्छेद को पढिए और उसके अंत में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

(8)

द्रौपदी का विवाह

उत्तरः– पांचाल नरेश दुपद ने एक स्वयंवर का आयोजन किया जिसमें यह शर्त रखी गई कि धनुष की चाप चढा कर निशाने पर तीर मारा जाये विजेता उनकी पुत्री द्रोपदी से विवाह करने के लिये चुना जायेगा । अर्जुन ने यह प्रतियोगिता जीती और द्रौपदी ने उसे वरमाला पहनाई । पाण्डव उसे लेकर अपनी माता कुन्ती के पास गये जिन्होंने बिना देखे ही उन्हें लाई गई वस्तु को आपस में बाट लेने को कहा । जब कुन्ती ने द्रौपदी को देखा तो उन्हें अपनी भूल का अहसाह हुआ । किन्तु उनकी आज्ञा की अवेहलना नही की जा सकती थी । बहुत सोचविचार के बाद युधिष्ठिर ने निर्णय लिया कि द्रौपदी उन पॉचो की पत्नी होगी । जब दुपद को यह बताया गया तो उन्होंने इसका विरोध किया किन्तु ऋषि व्यास ने उन्हे इस तथ्य से अवगत कराया कि पाण्डव वास्तव में इन्द्र के अवतार थे और उनकी पत्नी ने ही द्रौपदी के रूप में जन्म लिया था । अतः नियति ने ही उन सबका साथ निश्चित कर दिया था । व्यास ने यह भी बताया कि एक बार एक युवा स्त्री ने पति प्राप्ति के लिए शिव की आराधना की और उत्साह के अतिरेक में एक की बजाय पांच बार पति प्राप्ति का बर मॅाग लिया । इसी स्त्री ने द्रौपदी के रूप में जन्म लिया तथा शिव ने उसकी प्रार्थना को परिपूर्ण किया है । इन कहानियों से संतुष्ट होकर द्रुपद ने इस विवाह को अपनी सहमति प्रदान की ।

1. पंचाल नरेश द्रुपद ने अपनी पुत्री का विवाह करने के क्यो प्रतियोगिता रखी ?

(2)

2. व्यास ने राजा द्रुपद को द्रौपदी का पॉचों पाण्डव की पत्नी बनने के लिए कौन से दो तथ्य दिये ? (3)

3. द्रौपदी का विवाह किस प्रकार का विवाह था ? इस प्रकार के विवाह के प्रति इतिहासकारो के दो विचार बताइये ? (3)

उत्तर :–

1. स्वंयर का आयोजन किया गया था । जिसके विजेता से वे अपनी पुत्री का विवाह कर देते ।

2. व्यास ने बताया कि पाण्डव इन्द्र के अवतार थे तथा उनकी पत्नी ने ही द्रौपदी के रूप में जन्म लिया था । शिव न एक युवा स्त्री को वर दिया था जिसने गलती से पॉच वार पति का वर माग लिया था । उस स्त्री ने ही द्रौपदी के रूप में जन्म लिया

3 द्रौपदी का विवाह बहुपति का उदाहरण था । इस प्रकार का विवाह विशिष्ट था ब्राहमणीय परंपरा के अनुरूप न होने के कारण इस प्रकार के विवाह को ब्राहमणों का समर्थन नही था ।

पाठ – 4

विचारक, विश्वास और इमारतें

महत्वपूर्ण बिन्दु

- बौद्ध धर्म का इतिहास – सांची स्तूप पर बल
- विस्तृत संदर्भ – वैदिक धर्म, जैन धर्म, वैषणवमत, शैवमत, बौद्ध धर्म पर बल
- सांची स्तूप की खोज, सांची की मूर्तिया
- धार्मिक वाद –विवाद बौद्ध धर्म की पुर्नरचना
- प्राचीन वैदिक धर्म, जैन, बौद्ध, वैषणव, शैल
- महावीर, सिद्धार्थ, वैदिककाल की उपासना रीति
- हीनयांन, महायान (बौद्ध धर्म), श्वेतांम्बर, दिगम्बर (जैन धर्म)
- त्रिपिटक, जातक पिटक, उपनिषद – लिखित स्त्रोत
- जैन, बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार, मथुरा – गांधार मूर्तिकलाएं
- बिहार, चैत, स्तूप, आष्टांगिक मार्ग, बौद्ध के चार आर्य सत्य

(02 अंको वाले प्रश्न)

प्रश्नः–1 बौद्ध धर्म के चार मूल सत्य (आर्य सत्य) कौन से है?

उत्तरः–1. सम्पूर्ण संसार दुखों से परिपूर्ण हैं।

2. सारे दुःखों का कोई–न–कोई कारण है।

3. दुखों को राकने का एक मार्ग है। मनुष्य आष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करके इन दुखों और कष्टों से छुटकारा पा सकता है।

प्रश्नः– 2. छठी शताब्दी ई.पू. के काल में उत्पन्न होने वाले धार्मिक सम्प्रदायों का वर्गीकरण कितने भागों में किया जा सकता है?

उत्तरः– छठी शताब्दी ई.पू. के धार्मिक सम्प्रदायों का वर्गीकरण दो भागों में किया जा सकता हैः

उत्तरः– 1. वे सम्प्रदाय जिन्होने वैदिक धर्म का खुला प्रतिरोध किया।

2. वे सम्प्रदाय जिन्होंने वैदिक धर्म का खुला प्रतिरोध न करके किसी पुराने देवी–देवता को केंद्र बनाकर नवीन सिद्धातों का प्रतिपादन किया।

प्रश्नः– 3. "धर्म चक्रप्रवर्तन" से आप क्या समझते हैं?

उत्तरः– "धर्म चक्रप्रवर्तन" का अर्थ है, धर्म के चक्र को घुमाना। ज्ञान प्राप्ति के बाद महात्मा बुद्ध ने वाराणसी के पास सारनाथ के मृगदाव में मृगदाव में आषाढ़ पूर्णिमा को अपना जो प्रथम धर्मोपदेश दिया, उसे "धर्म चक्रप्रवर्तन" के नाम से जाना जाता है।

प्रश्नः– 4. वेदों के महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तरः– वैदिक साहित्य के सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रंथ वेद है। वेद संख्या में चार हैं– ऋगवेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। ऋगवेद वैदिक साहित्य में सबसे प्राचीन ग्रंथ है। यह ग्रंथ प्राचीन आर्यो के धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक जीवन पर प्रकाश डालता है।

प्रश्नः– 5. स्तूप क्यों बनाए जाते थे?

उत्तरः– स्तूप महात्मा बुद्ध अथवा किसी अन्य पवित्र भिक्षु के अवशेषों, जैसे–दॉत, भस्म आदि अथवा किसी पवित्र ग्रन्थ पर बनाए जाते थे। अवशेष स्तूप के आधार के केन्द्र में बनाए गए एक छोटे से कक्ष में एक पेटिका में रख दिए जाते थे।

(05 अंकों वाले प्रश्न)

प्रश्नः– 6. आपके विचारानुसार स्त्री–पुरूष संघ में क्यों जाते थे?

उत्तरः– 1. वे संसारिक विषयों से दूर रहना चाहते थे।

2. वहॉ का जीवन सादा व अनुशासित था।

3. वहां लोग बौद्ध दर्शन का अध्ययन कर सकते थे।

4. संघ में सभी का समान दर्जा था।

5. वहॉ लोग धर्म्म के शिक्षक (उपदेशक) बनाना चाहत थे।

प्रश्नः– 7. जैन धर्म की महत्वपूर्ण शिक्षाओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तरः– 1. अहिंसा पर जोर दिया गया।

2. जातिवाद के विरूद्ध था, कोई भी व्यक्ति इस धर्म को अपना सकता था।

3. उन्होंने भगवान के अस्तित्व को अस्वीकार किया।

4. आत्मा में विश्वास करते थे।

5. कर्म व कार्य के सिद्धांत में विश्वास करते थे।

प्रश्नः– 8. सॉंची स्तूप के संरक्षण में भोपाल की बेगमों ने क्या योगदान दिया?

उत्तरः– 1. उन्होंने सॉंची के स्तूप के रख–रखाव के लिए धन का अनुदान किया।

2. सुल्तानजहां बेगम ने वहां पर एक संग्रहालय और अतिथिशाला बनाने के लिए भी अनुदान दिए।
3. यहां रहकर सर जॉन ने सांची पर पुस्तकें लिखीं। जिन्हें सुल्तानजहां बेगम ने अनुदान दिया।
4. यदि यह स्तूप जीवित हैं तो केवल बेगमों के योगदान से।
5. यह सॉंची का स्तूप हमारे देश की महत्वपूर्ण वास्तुकला है जिसकी सुरक्षा भोपाल की बेगमों द्वारा की गई।

प्रश्नः– 9. महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का उल्लेख कीजिए।

महात्मा बुद्ध की शिक्षाएँ–

उत्त्रः– 1. विश्व अनित्य अर्थात् क्षणभंगुर है और यह निरन्तर परिवर्तित हो रहा है।

2. विश्व आत्माविहीन है क्योंकि यहॉं कुछ भी स्थायी अथवा शाश्वत नहीं हैं।
3. विश्व में 'चार आर्य (श्रेष्ठ) सत्य' हैं। ये हैं– दुःख, दुःख समुदाय, दुःखनिरोध और दुःख निरोध मार्ग।
4. महात्मा बुद्ध कठोर तपस्या के विरूद्ध थे।
5. महात्मा बुद्ध ने दस शीलों के पालन पर बल दिया, हैं।

प्रश्नः– 10. बौद्ध धर्म के शीघ्रतम विकास के क्या कारण थे? 10

उत्तरः–1. धर्म की भाषा सरल थी। जैसा कि भगवान बुद्ध हमेशा अपने उपदेश आम बोलचाल भाषा में दिया करते थे।
2. साधारण व शुद्ध धर्म, रीति–रिवाजों से परे था।
3. अनुकूल वातावरण क्योंकि हिन्दू धर्म में अवगुण की उत्पत्ति।
4. हिन्दू धर्म में बुराईया, कर्मकांड एवं बलि ।
5. पुरोहितों का वर्चस्व।
6. हिन्दू धर्म में धन का अपव्यय।
7. जातिवाद एवं छुआछूत का न होना।
8. महात्मा बुद्ध का महान व्यक्तित्व अन्य व्यक्तियों को प्रभावित करता था।
9. भिक्षु का अच्छा व्यवहार व चरित्र।
10. राजाओं द्वारा संरक्षण जैसे अशोक, हर्षवर्धन।

स्तूप क्यों बनाए जाते थे ?

यह उद्धरण महापरिनिब्बान सुत्त से लिया गया है जो सुत्त पिटक का हिस्सा है ।

परिनिर्वाण से पूर्व आंनद ने पूछा :–
भगवान हम तथागत (बुद्व का दूसरा नाम) के अवशेषों का क्या करेगे ?
बुद्ध ने कहा " तथागत के अवशेषों को विशेष आदर देकर खुद को मत रोको । धर्मोत्साही बनों, अपनी भलाई के लिए प्रयास करो"
लेकिन विशेष आग्रह करने पर बुद्ध बोले –
" उन्हें तथागत के लिए चार महापथो के चौक पर थूप (स्पूत का पालि रूप)" बनाना चाहिए । जो भी वहॉ धूप या माला चढ़ाएगा ..... या वहॉ सिर नवायेगा, या वहॉ पर हृदय में शांति लायेगा, उन सबके लिए वह चिरकाल तक सुख और आंनद का कारण बनेगा ।

1. यह उद्धरण किस मूल पाठ से लिया गया है ? यह किस ग्रंथ का हिस्सा है ? 2
2. स्तूप क्या होते है ? आंनद को स्तूप बनाने की सलाह किसने दी थी ? 2
3. तथागत कौन थे ? उन्होंने स्तूप का क्या महत्व बताया था ? 2
4. किन्हीं तीन स्थानों के नाम बताओं जहॉ स्तूप बनाए गये । 2

उत्तरः– 1 यह उद्धरण महापरिनिब्बान सुत्त नामक मूल पाठ से लिया गया है । यह सुत्तपिटक नामक ग्रंथ का हिस्सा है ।

2. स्तूप बुद्व धर्म से जुड़े पवित्र टीले है । इनमें बुद्व के शरीर के कुछ अवशेष अथवा उनके द्वारा प्रयोग की गई किसी वस्तु को गाड़ा गया था । आंनद को स्तूप बनाने की सलाह बुद्व ने दी थी ।
3. तथागत स्वंय बुद्व थे । उन्होंने आंनद को बताया कि जो कोई स्तूप में धूप या माला चढायेगा या शीश नवायेगा अथवा वहॉ पर मन में शांति लायेगा उसके लिए स्तूप चिरकाल तक शांति का कारण बनेगा ।
4. भरहुत, सांची तथा सारनाथ ।

पाठ – 5
यात्रियों के नजरिए

1 अल–बिरूनी तथा किताब–उल–हिन्द

1.1 ख्वारिज्म से पंजाब तक

- अल–बिरूनी का बचपन, शिक्षा
- ख्वारिज्म के आक्रमण के पश्चात् सुल्तान द्वारा अल–बिरूनी को बंधक के रूप में गज़नी लाना
- अल–बिरूनी की भारत के प्रति रूचि उत्पन्न होना
- अल–बिरूनी के यात्रा वृत्तांत
- विभिन्न भाषाओं का ज्ञाता

1.2 किताब–उल–हिन्द

- विशिष्ट शैली का प्रयोग
- दंतकथाओं से लेकर ख्गोल विज्ञान और चिकित्सा संबंधी कृतियां

2. इब्न–बतूता का रिह्ला

2.1 रिहला इब्न–बतूता द्वारा लिखा गया यात्रा वृत्तांत

- सामाजिक तथा प्राकृतिक जीवन की जानकारियों से भरपूर
- मध्य रशिया के रास्ते सिन्ध पहुँचना
- दिल्ली आकर मुहम्मद बिन तुगलक से मिलना
- दिल्ली का काज़ी नियुक्त होना
- मध्यभारत के रास्ते मालाबार पहुँचना
- भारत के अनेक स्थानों का भ्रमण
- चीन की यात्रा
- भारत के सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक जीवन का विवरण प्रस्तुत करना
- यात्रा मार्गों का सुरक्षित न होना

2.2 जिज्ञासाओं का उपयोग

- मोरक्को वापस जाने के बाद अनुभवां को दर्ज किए जाने का आदेश

3 फांस्वा बर्नियर

- एक विशिष्ट चिकित्सक
- एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी जौहरी
- भारत की 6 बार यात्रा
- बहुआयामी व्यक्तित्व
- मुगल दरबार से जुड़े रहना
- दाराशिकोह का चिकित्सक

3.1 पूर्व और पश्चिम की तुलना

- भारतीय स्थिति की तुलना यूरोपीय स्थिति
- भारतीय स्थिति को दयनीय बताना
- उसकी कृति का अनेक भाषाआं में अनुवाद

4 एक अपरिचित संसार की समझ

- अल–बिरूनी तथा संस्कृतवादी परंपरा
- अनेक समस्याओं का सामना
- पहली समस्या भाषा, धार्मिक अवस्था, प्रथा में भिन्नता, तीसरा अभिमान का होना
- संस्कृत ग्रंथों का सहारा लेना

4.2 अल–बिरूनी का जाति व्यवस्था का वर्णन

- भारत में ब्राह्मणवादी व्यवस्था
- प्राचीन फारस के सामाजिक वर्गो को दर्शाना

5 इब्न बतूता तथा अनजाने को जानने की उत्कंठा : उपमहाद्वीप एक वैश्विक संचार तंत्र का हिस्सा

- नारियल और पान
- इब्नबतूता द्वारा नारियल और पान का विवरण
- इब्नबतूता और भारतीय शहर
- उपमहाद्वीप के शहरों का विवरण
- दिल्ली की प्रशंसा
- दिल्ली तथा दौलताबाद की तुलना
- बाजार विभिन्न गतिविधियां के केन्द्र
- शहरों की समृद्धि का विवरण
- भारतीय मालों का निर्यात

5.3 संचार की एक अनूठी प्रणाली

- व्यापारियां की सुविधा के लिए व्यापारिक मार्गों पर पूरी सुविधाएं
- कुशल काम प्रणाली
- कुशल गुप्तचरों का होना

6 वर्नियर तथा अपविकसित पूर्व

- वर्नियर द्वारा भारत की तुलना यूरोप की विशेषकर फ्रांस से
- वर्नियर का आलोकचनात्मक अन्तःदृष्टि तथा गहन चिन्तन
- भारत को पश्चिमी दुनिया की तुलना में निम्न कोटि का बताना

महत्वपूर्ण बिन्दु –
अतिलघु प्रश्न (02 अंक)

प्रश्नः– 1 कोई दो यात्रियें के नाम बताइए जिन्होंने मध्यकाल (11से 17 वी शताब्दी) में भारत की यात्रा की ।

उत्तरः– 1. अल – बिरूनी, ग्यारहवी शताब्दी में उज्बेकिस्तान से आया था
4. इब्न बतूता चौदहवी शताब्दी में मोरक्कों से आया था ।
3. फ्रांस्वा बर्नियर, सत्रहवीं शताब्दी में फ्रांस से आया था ।

प्रश्न :–2 अल – बिरूनी के भारत आने का क्या उद्देश्य था ।
उत्तरः– 1. उन लोगों के लिए सहायक जो उनसे (हिन्दुओं) धार्मिक विषयों पर चर्चा करना चाहते थे ।
2. ऐसे लोगों के लिए एक सूचना का संग्रह जो उनके साथ संबद्व होना चाहते है ।

प्रश्न :–3 क्या आपको लगता है कि अल– बिरूनी भारतीय समाज के विषय में अपनी जानकारी और समझ के लिए केवल संस्कृत के ग्रंथों पर आश्रित रहा ।

उत्तरः– अल – बिरूनी लगभग पूरी तरह से ब्राहणों द्वारा रचित कृतियों पर आश्रित रहा उसने भारतीय समाज को समझने के लिए अकसर वेदों, पुराणों भगवतगीता, पतंजलि की कृतियों तथा मनुस्मृति आदि से अंश उद्वत किए ।

प्रश्न :–4 भारत में पाये जाने वाले उन वृक्षों का नाम बताइए जिन्हें देखकर इब्न बतूता को आश्चर्य हुआ ।

उत्तरः– 1. नारियल – नारियल के वृक्ष का फल मानव सिर से मेल खाता है ।
2. पान – पान एक ऐसा वृक्ष हैं जिसे अगूंर – लता की तरह उगाया जाता है । पान का कोई फल नहीं होता और इसे केवल इसकी पत्तियों के लिए ही उगाया जाता है ।

प्रश्न :–5 बर्नियर ने मुगल साम्राज्य में कौन सी अधिक जटिल सच्चाई की ओर इशारा किया ?

उत्तरः– 1. वह कहता है कि शिल्पकारों के पास अपने उत्पादों को बेहतर बनाने का कोई प्रोत्साहन नही था क्योंकि मुनाफे का अधिग्रहण राज्य द्वारा कर लिया जाता था
2. साथ ही वह यह भी मानता है कि पूरे विश्व से बड़ी मात्रा में बहुमूल्य धातुऍ भारत में आती थी । क्योंकि उत्पादों का सोने और चॉदी के बदले निर्यात होता था ।

लघु प्रश्न (05 अंक)

प्रश्न :–6 अल – बिरूनी ने किन "अवरोधो " की चर्चा की है । जो उसके अनुसार समझ में बाधक थे ।

उत्तरः– अल – बिरूनी ने भारत को समझने में निम्नलिखित अवरोघों का सामना किया –

1. भाषा की समस्या – उसके अनुसार संस्कृत, अरबी और फारसी से इतनी भिन्न थी कि विचारों और सिद्वांतों को एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवादित करना आसान नही था ।

2. धार्मिक अवस्था और प्रथा में भिन्नता – अल – बिरूनी मुसलमान था और उसके धार्मिक विश्वास और प्रथाए भारत से भिन्न थी ।

3. स्थानीय लोगों की आत्मलीनता तथा प्रथक्करण की नीति – अल – बिरूनी के अनुसार उसका तीसरा अवरोध भारतीयों की आत्मलीनता तथा प्रथक्करण की नीति थी ।

प्रश्न :–7 बर्नियर के अनुसार राजकीय भू – स्वामित्व के क्या बुरे प्रभाव पड़े ?

उत्तरः– 1. भूधारक अपने बच्चों को भूमि नहीं दे सकते थे इसलिए वे उत्पादन के स्तर को बनाए रखने और उसमें बढ़ोतरी के लिए दूरगामी निवेश के प्रति उदासीन थे ।
2. इस प्रकार इसने निजी भू–स्वामित्व के अभाव ने " बेहतर " भूधारको के वर्ग के उदय को रोका
3. इसके कारण कृषि का विनाश हुआ ।
4. इसके चलते किसानो का असीम उत्पीड़न हुआ
5. समाज के सभी वर्गो के जीवन स्तर में अनवरत पतन की स्थिति उत्पन्न हुई ।

प्रश्न :–8 सती प्रथा के विषय में बर्नियर ने क्या लिखा है ?

उत्तरः– 1. यह एक क्रूर प्रथा थी जिसमें विधवा को अग्नि की भेंट चढ़ा दिया जाता था
2. विधवा को सती होने के लिए विवश किया जाता था ।
3. बाल विधवाओं के प्रति भी लोगों के मन में सहानुभूति नहीं थी ।
4. सती होने वाली स्त्री की चीखें भी किसी का दिल नहीं पिघला पाती थी ।
5. इस प्रकिया में ब्राम्हण तथा घर की बड़ी महिलाए हिस्सा लेती थी ।

प्रश्न :– 9 " किताब – उल – हिंन्द " किसने लिखी ? इसकी मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ?

उत्त्रः– " किताब – उल – हिंन्द " की रचना अल – बिरूनी ने की ।
इसकी मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार है –

1. यह किताब अरबी में लिखी गई है ।

2. इसकी भाषा सरल और स्पष्ट है ।
3. यह एक विस्तृत ग्रंथ है जो सामाजिक और धार्मिक जीवन, दर्शन खगोल विज्ञान कानून आदि विषयों पर लिखी गई हैं ।
4. इसे विषयों के आधार पर अस्सी अध्यायो में विभाजित किया गया है ।
5. प्रत्येक अध्याय का आरंभ्भ एक प्रश्न से होता है और अंत में संस्कृतवादी पंरमपराओं के आधार पर उसका वर्णन किया गया है ।

विस्तृत प्रश्न (10 अंक)

प्रश्न :– 10 इब्न बतूता द्वारा दास प्रथा के संबंध में दिए गए साक्ष्यों का विवेचन कीजिए ?

उत्तरः– 1 बाजारों में दास किसी भी अन्य वस्तु की तरह खुले – आम बेचे जाते थे ।
2. ये नियमित रूप से भेटस्वरूप दिये जाते थे ।
3. जब इब्न बतूता सिंध पहुॅचा तो उसने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के लिए भेट स्वरूप "घोड़े,ऊंट तथा दास" खरीदे ।
4. जब वह मुल्तान पहुंचा तो उसने गर्वनर को किशमिश तथा बदाम के साथ एक दास और धोड़ा भेंट के रूप में दे दिया था।
5. इब्न बतूता कहता है कि सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक ने नसीरूद्दीन नामक एक धर्म उपदेशक के प्रवचन से प्रसन्न होकर उसे एक लाख टके (मुद्रा) तथा 200 दास दिये थे।
6. इब्न बतूता के विवरण से प्रतीत होता है कि दासों में काफी विभेद था ।
7. सुल्तान की सेवा में कार्यरत कुछ दासियॉ संगीत और गायन में निपुण थी ।
8. सुल्तान अपने अमीरों पर नजर रखने के लिए दासियों को नियुक्त करता था ।
9. दासों को समान्यतः घरेलु श्रम के लिए ही स्तेमाल किया जाता था और इब्न बतूता ने इनकी सेवाओं को, पालकी या डोले मे ंपुरूषों और महिलाओं को ले जाने मे ंविशेष रूप से अपरिहार्य पाया ।
10. दासों की कीमत, विशेष रूप से उन दासियों की, जिनकी अवश्यकता घरेलू श्रम के लिए थी, बहुत कम होती थी ।

स्त्रोत पर आधरित प्रश्न

घोड़े पर और पैदल

डाक व्यवस्था का वर्णन इब्न बतूता इस प्रकार करता है :–

भारत में दो प्रकार की डाक व्यवस्था है । अश्व डाक व्यवस्था जिसे उलुक कहा जाता है, इर चार मील की दूरी पर स्थापित राजकीय घोडों द्वारा चालित होती है । पैदल डाक व्यवस्था के प्रति मील तीन अवस्थान होते थे । इसे दावा कहते थे और यह एक मील का एक तिहाई होता है ..... अब, हर तीन मील पर घनी आबादी वाला एक गॉव होता है । जिसके बाहर तीन मंडप होते है जिसमें लोग कार्य आरंभ्भ के लिए तैयार बैठे रहते है । उनमें से प्रत्येक के पास दो हाथ लम्बी एक छड़ होती है । जिसके ऊपर तांबे की घंटियॉ लगी होती है । जब संदेशवाहक शहर से यात्रा आंरभ्भ करता है तो एक हाथ में पत्र तथा दूसरे मे

घंटियों सहित छड़ लिये वह क्षमतानुसार तेज भागता है । जब मंडप में बैठे लोग घंटियों की आवाज सुनते है तो वे तैयार हो जाते है । जैसे ही संदेशवाहक उनके पास पहुॅचता है, उनमें से एक उससे पत्र लेता है और वह छड़ हिलाते हुए पूरी ताकत से दौडता है, जब तक वह अगले दावा तक नहीं पहुॅच जाता । पत्र के अपने गन्तव्य स्थान तक पहॅचने तक यही प्रकिया चलती रहती है । यह पैदल डाक व्यवस्था अश्व डाक व्यवस्था से अधिक तीव्र होती है, और इसका प्रयोग अकसर खुरासान के फलों के परिवहन के लिए होता है, जिन्हें भारत में बहुत पसंद किया जाता है ।

1. दो प्रकार की डाक प्रणालियों के नाम बताओं । 1
2. पैदल डाक व्यवस्था किस प्रकार काम करती थी ? व्याख्या कीजिए । 3
3. इब्न बतूता ऐसा क्यों सोचता है कि भारत की डाक व्यवस्था कुशल है ? 3
4. 14वी शताब्दी में राज्य व्यापारियों को किस प्रकार प्रोत्साहित करता था ? 1

उत्तरः— 1. दो प्रकार की डाक प्रणालियॉ थी — अश्व डाक प्रणाली तथा पैदल डाक प्रणाली

2. पैदल डाक व्यवस्था में प्रतिमील तीन अवस्थान होते थे इसे दावा कहते थे जो एक मील का तिहाई भाग होता था । अब, हर तीन मील पर घनी आबादी वाला एक गॉव होता है । जिसके बाहर तीन मंडप होते है जिसमें लोग कार्य आरंभ्भ के लिए तैयार बैठे रहते है । उनमें से प्रत्येक के पास दो हाथ लम्बी एक छड़ होती है । जिसके ऊपर तांबे की घंटियॉ लगी होती है । जब संदेशवाहक शहर से यात्रा आंरभ्भ करता है तो एक हाथ में पत्र तथा दूसरे मे घंटियों सहित छड़ लिये वह क्षमतानुसार तेज भागता है । जब मंडप में बैठे लोग घंटियों की आवाज सुनते है तो वे तैयार हो जाते है । जैसे ही संदेशवाहक उनके पास पहुॅचता है, उनमें से एक उससे पत्र लेता है और वह छड़ हिलाते हुए पूरी ताकत से दौडता है, जब तक वह अगले दावा तक नहीं पहुॅच जाता । पत्र के अपने गन्तव्य स्थान तक पहॅचने तक यही प्रकिया चलती रहती है ।
3. इब्न बतूता के अनुसार सिंध से दिल्ली की यात्रा करने में जहॉ 50 दिन लग जाते थे वही सुल्तान तक गुप्तचरों की सूचना पहुॅचने में मात्र पॉच दिन लगते थे । इब्न बतूता डाक प्रणाली की कुशलता पर हैरान था इस प्रणाली से व्यापारियों के पास लम्बी दूरी तक सूचनाऍ भेजी जाती थी ।
4. 14वी शताब्दी में राज्य व्यापारियों को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष पग उठाता था उदाहरण के लिए लगभग सभी व्यापारिक मार्गो पर सराय तथा विश्रामगृह बनाए गए थे ।

वर्ण व्यवस्था

अल — बिरूनी वर्ण व्यवस्था का इस प्रकार उल्लेख करता है —
सबसे ऊची जाति ब्राहमणों की है जिनके विषय में हिन्दुओं के ग्रंथ हमें बताते है कि वे ब्रह्मन् के सिर से उत्पन्न हुए थे क्योंकि ब्रह्म, प्रकृति नामक शक्ति का ही दूसरा नाम है, और सिर ..... शरीर का सबसे ऊपरी भाग है, इसलिए ब्राहमण पूरी प्रजाति के सबसे चुनिंदा भाग है । इसी कारण से हिन्दु उन्हें मानव जाति में सबसे उत्तम मानते है ।

अगली जाति क्षत्रियों की है जिनका सृजन, ऐसा कहा जाता है, ब्रह्मन् के कंधो और हाथो से हुआ था उनका दर्जा ब्राहमणों से अधिक नीचे नही है ।

उनके पश्चात् वैश्य आते है जिनका उद्भव ब्रह्मन् की जंघाओं से हुआ था ।

शूद्र जिनका सृजन उनके चरणों से हुआ था ।

अंतिम दो वर्गो के बीच अधिक अन्तर नहीं है । लेकिन इन वर्गो के बीच भिन्नता होने पर भी ये एक साथ ही शहरों एक गॉवों में रहते है, समान घरों और आवासों में मिल – जुल कर ।

1. अल – बिरूनी द्वारा वर्णित वर्ण व्यवस्था का वर्णन कीजिए । 4
2. क्या आप इस प्रकार के वर्ण विभाजन को उचित समझते है ? तर्क सहित व्याख्या कीजिए । 2
3. वास्तविक जीवन में यह व्यवस्था किस प्रकार इतनी कड़ी भी नही थी ? व्याख्या कीजिए । 2

उत्तरः– 1. अल – बिरूनी ने भारत की वर्ण–व्यवस्था का उल्लेख इस प्रकार किया है –

(1) ब्राहमण – ब्राहमणों की जाति सबसे ऊंची थी । हिन्दू ग्रंथो के अनुसार उनकी उत्पति ब्राहमण के सिर से हुई थी । क्योकि ब्रह्म प्रकृति का दूसरा नाम है और सिर शरीर का ऊपरी भाग है, इसलिए हिन्दू उन्हें मानव जाति में सबसे उत्तम मानते है ।

(2) क्षत्रीय – माना जाता है कि क्षत्रीय ब्रह्मन् के कंधो और हाथों से उत्पन्न हुए थे । उनका दर्जा ब्राम्हणों से अधिक नीचे नही है ।

(3) वैश्य – वैश्य जाति व्यवस्था में तीसरे स्थान पर आते है । वे ब्राह्मन् की जंघाओं से जन्में थे ।

(4) शूद्र – इनका जन्म ब्रह्मन् के चरणों से हुआ था ।
अंतिम दो वर्णो में अधिक अन्तर नही है । ये शहर और गॉवों में मिल – जुल कर रहते थे ।

2. नहीं, मैं इस प्रकार के वर्ण विभाजन को उचित नहीं मानता, क्योंकि जन्म से कोई ऊॅचा – नीचा नहीं होता । मनुष्य के अपने कर्म उसे ऊॅचा – नीचा बनाते हैं ।
3. जाति व्यवस्था के विषय में अल – बिरूनी का विवरण पूरी तरह से संस्कृत ग्रंथों के अध्ययन से प्रभावित था । इन ग्रंथों में ब्राम्हणवादी जाति व्यवस्था को संचालित करने वाले नियमों का प्रतिपादन किया गया था । परन्तु वास्तविक जीवन में यह व्यवस्था इतनी कड़ी नहीं थीी उदाहरण के लिए जाति – व्यवस्था के अन्तर्गत न आने वाली श्रेणियों से प्रायः यह अपेक्षा की जाति थी कि वे किसानों और जमीदारों को सस्ता श्रम प्रदान करें । भले ही ये श्रेणियॉ प्रायः

सामाजिक प्रताड़ना का शिकार होती थी, फिर भी उन्हें आर्थिक तंत्र में शामिल किया जाता था ।

मध्यकाल के तीन यात्रियों का तुलनात्मक अध्ययन्

यात्री का नाम	अल – बिरूनी	इब्न – बतूता	फ्रांस्वा बर्नियर
यात्रा की तारीख	ग्यारहवी शताब्दी	चौदहवी शताब्दी	सत्रहवी शताब्दी
देश जिससे वह आए	उज्वेकिस्तान	मोरक्को	फ्रांस
किताब जिसकी रचना की	किताब – उल – हिन्द	रिह्ला	ट्रैवल्स इन द मुगल एम्पायर
किताब की भाषा	अरबी	अरबी	अग्रेंजी
शासक जिसके शासनकाल में यात्रा की	सुल्तान महमूद ग़ज़नी	सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक	मुगल शासक शाहजहॉ और औंरगजेब
विषयवस्तु जिस पर उन्होंने लिखा	समाजिक और धार्मिक जीवन, भारतीय दर्शन, खगोलशास्त्र, मापतंत्र विज्ञान, न्यायिक व्यवस्था ऐतिहासिक ज्ञान, जाति प्रथा	नारियल और पान, भारतीय शहरों, कृषि, व्यापार, तथा वाणिज्य, संचार तथा डाक प्रणाली, दास प्रथा	सती प्रथा, भूमि स्वामित्व, विभिन्न प्रकार के नगर, राजकीय कारखाने, मुगल शिल्पकार
कार्य की प्रमाणिकता	प्रमाणिक मानते है ।	प्रमाणिक नही मानते है	प्रमाणिक मानते है ।

पाठ 6
भक्ति सूफी परंपराएँ

1. धार्मिक विश्वासों और आचरणां की गंगा–जमुनी बनावट
साहित्य और मूर्तिकला में देवी देवता का दृष्टिकांत होना
आराधना की परिपाटी का विस्तृत होना

1.1 पूजा प्रणालियों का समन्वय
दो प्रक्रियाओं का कार्यरत होना
एक ब्राह्मणीय विचारधारा दूसरा ब्राह्मणों द्वारा, स्त्री, शूद्रों, सामाजिक वर्गों की भाषाओं को स्वीकार करना
मुख्य देवता को जगन्नाथ के एक स्वरूप में प्रस्तुत करना उदा. उड़ीसा में पुरी
स्थानीय देवियों को मुख्य देवताओं की पत्नी के रूप में मान्यता

1.2 भेद और संघर्ष
देवी आराधना पद्धति को तांत्रिक नाम देना
वर्ग और वर्ण भेद की अवहेलना
वैदिक देव गांज होना पर प्रामाणिकता बने रहना
भक्ति रचनाएँ भक्ति उपासना के अंश होना

2. उपासना की कविताएँ
प्रारंभिक भक्ति परंपरा
भक्ति परंपरा में विविधता
भक्ति परंपरा के 2 वर्ग–सगुण और निर्गुण

2.1 तमिलनाडु के अलवार और नयनार संत
तमिल में विष्णु और शिवजी स्तुति
इष्ट का निवासस्थल घोषित करना

2.2 जाति के प्रति दृष्टिकोण
अस्पृश्य जातियों का द्वेष
अलवार और नयनार की रचनाओं के वेदों समान महत्व

2.3 स्त्रीभक्ति
स्त्रियों द्वारा पितृसत्तात्मक आदर्शों को चुनौती

2.4 राज्य के साथ संबंध
तमिल भक्ति रचनाओं बौद्ध और जैन धर्म के प्रति विरोध
विरोध का राजकीय अनुदान की प्रतिस्पर्द्धा
कांस्य माओं का ढालना
सुंदर रां का निर्माण
चोल सम्राटों की संत कवियों पर विशेष कृपा

3 कर्नाटक की वीर शैव परंपरा
नवीन आंदोलन का उदय
अनुयायी वीर शैव का लिंगायत कहलाए
लिंगायतों द्वारा पुनर्जन्म पर प्रश्नचिन्ह

4 उत्तरी भारत में धार्मिक उफान
उत्तर भारत में शिव और विष्णु की उपासना
उत्तर भारत के राजपूत राज्यों का उत्थान
धार्मिक नेताआं का रूढ़िवादी साँचे से बाहर होने के कारण दस्तकारी उत्पादन का विस्तार
तुर्कों का आगमन

5 दुशालं के नए ताने–बाने : इस्लामी परंपराएँ
711 ई. में मुहम्मद बिन कासिम अरब सेनापति द्वारा सिंध विजय
सल्तनत की सीमा का प्रसार
16वीं शताब्दी में मुगल सल्तनत की स्थापना
मुसलमान शासकों द्वारा उलझा के मार्गदर्शन पर चलना

5.2 लोक प्रचलन में इस्लाम
इस्लाम के जाने के बाद परिवर्तनां का पूरे उपमहाद्वीप में प्रभाव
इस्लाम का सैद्धांतिक बातों पर बल देना
मालाबार तट पर बसने वाले मुसलमान व्यापारियों द्वारा स्थानीय आचारां का मानना

5.3 समुदायों के नाम
लोगों का वर्गीकरण जन्मस्थान के आधार पर
वर्ष नियमां का पालन न होना

6 सूफी मत का विकास
ईश्वर की भक्ति और उसके आदर्शों के पालन पर बल सूफियों द्वारा कुरान की व्याख्या निजी अनुभवों पर

6.1 खानगाह और सिलसिला
12वीं शताब्दी में सूफी सिलसिलों का गठन
पीर की मृत्यु के पश्चात् दरगाह भक्तिस्थल के रूप में

6.2 खानगाह के बाहर
रहस्यवादी फकीर का जीवन
शरियां की अवहेलना करने पर बे शरिया कहलाना

7 उपमहाद्वीप में चिश्ती सिलसिला

7.1 चिश्ती खानगाह में जीवन
स्थानीय परंपराओं को आत्मसात करना

7.2 चिश्ती उपासना : जियारत और कव्वाली
मुईनुद्दीन दरगाह में 14 बार आना
कव्वालों द्वारा रहस्यवादी गुणगान
चिश्ती उपासना पद्धति

7.3 भाषा और संपर्क
चिश्तियों द्वारा स्थानीय भाषा अपनाना
सूफी कविता का आरंभ

7.4 सूफी और राज्य
चिश्ती संप्रदाय द्वारा – सादगी का जीवन
सूफ संतों की धर्मनिष्ठा विद्वता उनकी लोकप्रियता का कारण ऑलिया का मध्यस्थ होना

8 नवीन भक्ति पंथ
उत्तरी भारत में संवाद और असहमति

8.1 दैवीयवस्त्र की बुनाई : कबीर
कबीर बानी में तीन विशिष्ट परिपाटियों का संकलन
कबीर द्वारा परम सत्य का वर्णन
इस्लामी दर्शन के ईश्वरवाद को समर्थन हिंदुओं के बहु देववाद का खंडन
कबीर को भक्ति मार्ग दिखाने वाले गुरू रामानन्द

8.2 बाबा गुरूनानक और पवित्र शब्द
गुरूनानक द्वारा निर्णुण भक्ति का प्रचार
भगवान उपासना के लिए निरंतर स्मरण व नाम का जाप
आदि ग्रंथ साहिब का संकलन

8.3 मीराबाई भक्तिमय राजकुमारा
भक्ति परंपरा का सुप्रसिद्ध कवियत्रा
मारा द्वारा जातिवादी सामाजिक रूढ़ियां का उल्लंघन

9 धार्मिक परंपराओं के इतिहासां का पुनर्निर्माण
विचारों, आस्थाओं और आचारां को समझना
धार्मिक परंपराओं का अन्य परंपराओं के अनुसार परिवर्तित होना

प्रश्न 1– भक्ति आंदोलन का क्या अर्थ है।

उ0 कई हिन्दू संतो और सुधारको ने धार्मिक सुधार लाने के लिए आंदोलन चलाए जो भक्ति आंदोलन के नाम में प्रसिद्ध हुआ। अपनी भक्मि को दर्शाने के लिए मंदिरो में देवताओ के समक्ष उनकी स्तुति में गीतो के माध्यम से लीन हो जाते थे।

प्रश्न 2– अलवार कौन थ ?

उ0 दक्षिण भारत के विष्णु की उपासना करने वालो को अलवार कहा जाता था।

प्रश्न 3– भक्ति आंदोलन के चार प्रसिद्ध संतो के नाम लिखे

उ0 रामानन्द स्वामी, कवीर, गुरूनानक देव, मीरा बाई

प्रश्न 4– सूफीवाद से आप क्या समझते है ?

उ0 सूफी मत के मूल सिद्धान्त कुरान और हजरत मुहम्मद की हदीस से मिलते है सूफी शब्द मुस्लिम संतो के लिए प्रयोग किया जाता है। सुफियो ने कुरान की व्याख्या अपने के आधार पर की। सूफी संतो के विचारो को सूफी वाद कहा जाता है।

प्रश्न 5– सूफी विचार धारा में मुर्शीद का क्या महत्व है ?

उ0 सूफी विचार धारा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का कोई धार्मिक गुरू (मुर्शीद) होना चाहिए जो कि उसका ईश्वर से संपर्क करवा सके। उनके आनुसार जिन व्यक्तियो का कोई गुरू अथवा मुर्शीद नही उनका कोई धर्म नही।

5 नं0 के प्रश्न –

प्रश्न 6– भक्ति आंदोलन के उदय के कारणों का विवरण दीजिए ।

उ0 1– वैष्णव मत का प्रभाव
2– हिन्दु धर्म की त्रुटियॉ
3– इस्लाम के फैलने का भय
4– सूफी मत का प्रभाव
5– महान सुधारको का उदय

प्रश्न 7– भक्ति आंदोलन के मूल सिद्धान्त पर प्रकाश डालिए।

उ0 1– एक ईश्वर में विश्वास
2– शुद्ध कार्य करना
3– विश्व भातृत्व की भावना पर बल देना
4– प्रेम भाव से पूजा करना
5– मूर्ति पूजा का खंण्डन करना
6–जात पात का खंण्डन करना
7– गुरू भक्ति करना

प्रश्न 8– भक्ति आंदोलन के प्रभाव और महत्व की चर्चा करें।

धार्मिक प्रभाव

1– हिन्दू धर्म की रक्षा
2– ब्राहमणें के प्रभाव में कमी
3– इस्लाम के प्रसार में वाध
4– सिख मत का उदय
5– बौद्ध मत का पतन

सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रभाव –

1– हिन्दू, मुसलमानो के सामाजिक सम्बन्धो मे सुधार।
2– निम्न वर्ग में सुधार
3– समाज सेवा की भावना को प्रोत्साहन –
4– लोगो में मिश्रण कला का विकास
5– साहित्यिक विकास

प्रश्न 9–सूफी मत के मुख्य सिद्धान्त क्या थे ?

उ0 1–अल्लाह से प्रेम
2– सांसारिक सुखो का त्याग
3– अहिसां तथा शांतिवाद में विश्वास
4– मानवता से प्रेम
5– मुर्शीद की महत्ता
6– भौतिक सिद्धान्त
7– अल्लाह की भक्ति में संगीत तथा नृत्य का महत्व

प्रश्न 10– अलवारो एवं नयनारो का जाति के प्रति क्या ट्टष्टि कोण था।

उ0 – नयनारो तथा अलवारो ने जाति प्रथा ब्राहमणों की सर्वोच्चता के विरूद्ध सुधार के लिए प्रवल आंदोलन चलाया। भक्ति आंदोलन के सुधारक भिन्न भिन्न जातियों से सम्बन्ध रखते थे। कुछ लोग निचली जातियों जैसे किसानो मिस्त्रियों तथा अछुत जातियों से थे। कुछ ब्राहमण जातिसे भी थें।उनका विश्वास था कि उनकी धार्मिक पुस्तके उतनी ही महान थी जितना कि वेद। अलवारो के तमिल भजन सच्चाई और पवित्रता के गहरे विचारो से भरे हुए है उनको वैष्नौ वेद जाना जाता है नयनारो का भजन आध्यात्मिकता से भरे है। उनके भजन दक्षिण भारत में शिव के सम्मान में गाये जाते है।

प्रश्न 10 अंक (8+2)

प्रश्न 11– कवीर की शिक्षाओ की व्याख्या कीजिये । उन्होने अपनी कविताओं के माध्यम से ''परम सत्य'' का वर्णन किस प्रकार किया है।

1– कवीर ने आध्यत्यिकता पर वल दिया
2– उन्होने हिन्दू और मुसलमन दोनो की रूढियों की कटु अलोचना की।
3– कवीर ने ईश्वर की एकता पर वलदिया।
4– मूर्ति पूजा, तीर्थ यात्रा एवं अन्य आडम्बरों की आलोचना की।
5– सती प्रथा और पर्दा प्रथा का विरोध किया।
6– अच्छे कर्मो का फल अवश्य मिलता है।
7– उन्होने परमात्मा को निराकार बताया है।
8– उनके अनुसार भक्ति के माध्यम से मोक्ष अर्थात मुक्ति प्राप्त हो सकती है।

''परम सत्य'' का विस्तार

1. विभिन्न परिपाटियों का सहारा लेना
2. इस्लामी दर्शन से प्रभावित होकर सत्य को अल्लाह, खुदा, हजरत और पीर कहते है।
3. वेदांत दर्शन से प्रभावित होकर सत्य को अलख, निराकार, ब्रम्हन और आत्मन कह कर भी सम्बोधित करते है।

प्रश्नः– 12– स्त्रोत पर आधारित प्रश्न एवं उत्तर –

निम्नलिखित अनुच्छेद को पढिए तथा उस पर आधारित प्रश्नो के उत्तर दीजिए।

यह उद्वरण उस फरर्मान (बादशाह के हुक्म नामे) का अंश है । जिसे 1598 में अकबर ने जारी किया

हमारे बुलंद और मुकंद्स (पवित्र) ज़ेहन में पहुचा है कि यीशु की मुकंदस जमात के पादरी खम्बायत गुजराज के शहर में इबादत के लिए (गिरजाघर) एक इमारत की तामीर (निर्माण) करना चाहते है । इसलिए यह शाही फरमान ..... जारी किया जा रहा हैं ..... खम्बायत के महानुभाव किसी भी तरह उनके रास्ते में न आए और उन्हें गिरजाघर की तामीर करने दे जिससे वे, अपनी इबादत कर सकें । यह जरूरी है कि बादशाह के इस फरमान की हर तरह से तामील (पालन) हो ।

प्रश्नः– 1 यह उद्वरण कहॉ से लिया गया है ? 2

प्रश्न :– 2 इस फरमान द्वारा अकबर ने गुजरात के लोगों को क्या आदेश दिया ? 2

प्रश्न :– 3 यह आदेश अकबर की किस धार्मिक प्रवृत्ति को दर्शाता है 2

प्रश्न :– 4 वे कौन से लोग थे जिनकी ओर बादशाह के फरमान को न मानने की आंशका थी 2

उत्तरः– 1. यह उद्वरण सम्राट अकबर के उस फरमान से लिया गया हैं जो उन्होंने 1598 में जारी किया था

2. इस फरमान के द्वारा अकबर ने गुजरात के लोगों को आदेश दिया कि वे उस ईसाई पादरी को गिरजाघर बनाने दें जो उसे बनाना चाहते हैं ।
3. यह आदेश अकबर की धार्मिक सहनशीलता की प्रवृत्ति को दर्शाता हैं कि वह सभी धर्मो का समान आदर करता था ।
4. बादशाह को आंशका थी कि संभवतः गैर ईसाई इस फरमान को न माने ।

पाठ – 7

एक साम्राज्य की राजधानी : विजयनगर

1. हम्पी की खोज

कर्नल मैकेन्जा द्वारा हम्पी भग्नावेष का सर्वेक्षण

2. राय, नायक तथा सुलतान

विजयनगर साम्राज्य की स्थापना

भवन निर्माण की तकनीकों का विकास

2.1 शासक और व्यापारी

युद्धकला अश्वसेना पर आधारित होना

पुर्तगालियों द्वारा पश्चिमी तट पर व्यापारिक और सामाजिक केंद्रों की स्थापना

2.2 राज्य का चरमोत्कर्ष तथा पतन

राजनीति में सत्ता के दावेदार

कृष्णदेव राय द्वारा राज्य का विस्तार तथा दृढ़ीकरण

कृष्णदेव राय द्वारा माँ के नाम पर उपनगर की स्थापना

कृष्णदेव राय के उत्तराधिकारियों को चुनौतियों का सामना

तालीकोट का युद्ध

रामराय की जोखिम भरी नीति

2.3 राय तथा नायक

सेना द्वारा किलों पर नियंत्रण

नायक, अमरनायक की भूमिका

3. विजयनगर राजधानी तथा उसके परिच्छेद

3.1 जलसंपदा

कमलपुरम जलाशय का निर्माण

3.2 किले बंदियाँ तथा सड़कें

फारस के शासक द्वारा अब्दुर रज्जाक को दूत के रूप में कालीकट भेजना
दूत का कालीकट की किलेबंदी से प्रभावित होना

कृषि क्षेत्रों का किलेबंद भूभाग

नगरीय भाग की आंतरिक किलेबंदी

सुरक्षित प्रवेशद्वार विशिष्ट स्थापत्य के नमूने

इंडो इस्लामिक शैली का प्रयोग

3.3 शहरी केन्द्र

शहरी केन्द्र का उत्तरी पूर्वी कोना अमीरों का रिहायशी क्षेत्र

कुरूँ जलाशय नगर निवासियों के पानी के स्रोत

4. राजकीय केन्द्र

संप्रदायों और मंदिरों को राजा का संरक्षण

संरचनाओं तथा मंदिरों में अंतर

4.1 महानवमी डिब्बा

संरचनाओं का नामकरण भवनों के आकार तथा कार्यों के आधार पर विशालकाय मंच

4.2 राजकीय केन्द्र में स्थित अन्य भवन

(कमल) लोटस् महल परिषदीय सदन

मंदिर धार्मिक केन्द्र तथा राजकीय केन्द्र

5. धार्मिक केन्द्र

5.1 राजधानी का चयन

विरूपाक्ष मंदिर धार्मिक मान्यताओं से संबंध

5.2 गोपुरम् और मण्डप

गोपुरम् अथवा राजकीय प्रवेशद्वार

मंदिर परिसरों की चारित्रिक विशेषता रथ गलियां

6. महलों, मंदिरों तथा बाजारों का अंकन

प्रश्न 1 हम्पी नगर किस नदी के किनारे बसा हुआ है ? 2

उत्तर तुँगभद्रा नदी के किनारे हम्पी नगर बसा हुआ है ।

प्रश्न 2 पम्पा किस देवी का नाम है ? 2

उत्तर देवी पम्पा पार्वती का नाम है ?

प्रश्न 3 कॉलिन मैंकेंजी कौन था ? उसका भारतीय इतिहास में योगदान बताओं । 2

उत्तर कॉलिन मैंकेंजी इस्ट इंडिया कंपनी में काम करते थे। 1754 मे कॉलिन मैकेंजी का जन्म हुआ था । कॉलिन मैंकेंजी एक अभियंता, सर्वेक्षक तथा मानचित्रकार के रूप में प्रसिद्धि हासिल की । 1815 मे उन्हे भारत का पहला सर्वेयर जनरल बनाया गया और 1821 मे उनकी मृत्यु तक वे इस पद पर बने रहे । भारत के अतीत को बेहतर ढंग से समझने के लिए और उपनिवेश के प्रशासन को आसान बनाने के लिए उन्होंने इतिहास से संबंधित स्थानीय परंपराओं का संकलन तथा ऐतिहासिक स्थलों का सर्वेक्षण करना आरंभ किया ।

प्रश्न 4 हंपी के मंदिरों की विशेषताओं का वर्णन करें । 2

उत्तर हंपी के मंदिर अत्यंत अलंकृत स्तंभयुक्त मंडप थे । विशिष्ट अभिलक्षणों में मंडप तथा लंबे स्तंभो वाले गलियारे को अकसर मंदिर परिसर में स्थित देव स्थलों के चारो ओर बने थे, सम्मिलित है । विटठल और हजारा राम मंदिर यहॉ प्रमुख है ।

प्रश्न 5 विजयनगर की जल आवश्यकताओं को किस प्रकार पूरा किया जाता था ? 2

उत्तर तुँगभद्रा द्वारा निर्मित एक प्राकृतिक कुंड है । यह नदी उत्तर में उत्तर पूर्व दिशा में बहती है । आसपास कि पहाड़ियों से कई जलधाराएँ आकर नदी में मिलती है । लगभग सभी धाराओं पर बॉध बनाकर अलग अलग हौज बनाए गए थे । शुष्क क्षेत्र होने के कारण पानी के संचय और इसे शहर तक ले जाने के लिए व्यापक प्रबंध करना आवश्यक है। सबसे महत्वपूर्ण हौज का निर्माण प्रारंभिक शताब्दी के आरंभिक वर्षो में हुआ, जिसे कमलपुरम जलाशय कहा जाता है ।

प्रश्नः– 6 शहर के किलेबंद क्षेत्र में कृषि क्षेत्र को रखने के आपके विचार में क्या फायदे और नुकसान थे ? 5

उत्तर विजयनगर शहर के किलेबंद क्षेत्र में कृषि क्षेत्र को चारदीवारी के अंदर रखने से हमारे विचार से अनेक लाभ और हानियाँ थी। इसका विवरण इस प्रकार है–

- कृषि क्षेत्र में खेतों के आसपास सामान्यतः साधारण जनता और किसान रहते थे। बागों और खेतों की रखवाली करना आसान था।

- प्रायः मध्यकालीन घेराबंदी का मुख्य उद्देश्य प्रतिपक्ष को खाद्य सामग्री से वंचित कर जल्दी से जल्दी आत्मसमर्पण (हथियार डालने के लिए) के लिए करना होता था।

- युद्धकाल में शत्रुओं द्वारा घेराबंदी कई महीनों तक जारी रखी जाती थी यहाँ तक कि वर्षों तक चल सकती थी। आमतौर पर शासक ऐसी परिस्थितियों से निपटने के लिए किलेबंद क्षेत्रों के भीतर ही विशाल अन्नगारों का निर्माण करवाते थे। विजयनगर के शासकों ने पूरे कृषि भू–भाग को बचाने के लिए एक अधिक महंगी तथा व्यापक नीति को अपनाया।

- किलाबंद खेती योग्य भूमि को चार दीवारी के अंदर रखने से नुकसान यह था कि प्रायः बाहर रहने वाले किसानों को आने जाने में द्वारपालों से इजाजत लेनी होती थी। साथ ही शत्रु द्वारा घेराबंदी होने पर बाहर से कृषि के लिए आवश्यक जरूरत पड़ने पर बीज, उर्वरक, यंत्र आदि बाहर के बाजारों से लाना प्रायः कठिन था।

- यदि शत्रु पक्ष के द्वारा काटी गई फसल को आग लगाकर जला दिया जाता तो आर्थिक हानि बहुत व्यापक हो सकती थी।

प्रश्नः– 7 आपके विचार में महानवमी डिब्बा से संबद्ध अनुष्ठानों का क्या महत्त्व था ? 5

उत्तर हमारे विचार में महानवमी डिब्बा से संबद्ध अनुष्ठानों का व्यापक महत्त्व था। विजयनगर शहर के सबसे ऊँचे स्थानों पर महानवमी डिब्बा नामक विशाल मंच होता था इसकी संरचना से जुड़े अनुष्ठान संभवतः सितम्बर तथा अक्टूबर के शरद मासों में मनाए जाने वाले दस दिन के हिन्दू त्यौहार, जिसे दशहरा (उत्तर भारत), दुर्गापूजा (पं. बंगाल) तथा नवरात्रि या महानवमी (प्रायद्वीपीय भारत में) नामों से जाना जाता है, के महानवमी के अवसर पर निष्पादित किए जाते थे। इस अवसर पर विजयनगर शासक अपने रूतबे, ताकत और अधिराज्य का प्रदर्शन करते थे।

- इस अवसर पर होने वाले धर्मानुष्ठानों में मूर्ति की पूजा, राज्य के अश्व की पूजा तथा भैंसों और अन्य जानवरों की बलि सम्मिलित थी। नृत्य, कुश्ती प्रतिस्पर्धा तथा साज लगे घोड़ों, हाथियों तथा रथों और सैनिकों की शोभायात्रा और साथ ही प्रमुख नायकों और अधीनस्थ राजाओं द्वारा राजा और उसके अतिथियों को दी जाने वाली औपचारिक भेंट इस अवसर के प्रमुख आकर्षण थे।

- त्यौहार के अन्तिम दिन राजा अपनी तथा अपने नायकों की सेना का खुले मैदान में आयोजित भव्य समारोह में निरीक्षण करता था। इस अवसर पर नायक, राजा के लिए बड़ी मात्रा में भेंट तथा साथ ही नियत कर भी लाते थे।

प्रश्न 8 विजयनगर साम्राज्य के विभिन्न विवरणों से आप विजयनगर के सामान्य लोगों के जीवन की क्या छवि पाते हैं ? 5

उत्तर सामान्य लोगों के बारे में बहुत ज्यादा विवरण प्राप्त नहीं होते क्योंकि सामान्य लोगों के आवासों, जो अब अस्तित्व में प्राप्त नहीं हुए हैं –

- क्षेत्र सर्वेक्षण इंगित करते हैं कि इस पूरे क्षेत्र में बहुत से पूजा स्थल और छोटे मंदिर थे जो विविध प्रकार के संप्रदायों के प्रचलन की ओर संकेत करते हैं।
- विजयनगर साम्राज्य में साधारण लोग विभिन्न सम्प्रदायों जैसे हिन्दू शैव, वैष्णों, जैन, बौद्ध और इस्लाम के अनुयायी रहते थे। वह विभिन्न भाषाओं जैसे कन्नड़, तमिल, तेलगू, संस्कृत आदि का प्रयोग करते थे।
- सामान्य लोगों में कुछ छोटे व्यापारी और कुछ सौदागर भी थे जो गांवों, कस्बों और छोटे शहरों में रहते थे। इनमें कुछ व्यापारी बंदरगाह शहरों में भी रहते थे। स्थानीय वस्तुओं जैसे मसाले, मोती, चंदन आदि के साथ–साथ कुछ व्यापारी घोड़े और हाथियों का व्यापार भी करते थे।
- किसान, श्रमिक, दास आदि को भी साधारण लोगों में शामिल किया जा सकता था। साम्राज्य में कुछ सामान्य ब्राह्मण, व्यापारी और दास, दासियाँ भी थे। साधारण लोग कृषि कार्यों के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के तथाकथित छोटे समझे जाने वाले कार्य भी किया करते थे।

प्रश्न 9 विजय नगर साम्राज्य के उत्थान में अमरनायक प्रणाली के महत्त्व का मूल्यांकन कीजिए। **10**

उत्तरः– इस सैनिक प्रणाली का विजयनगर साम्राज्य के उत्थान में महत्त्वपूर्ण योगदान था जिसका मूल्यांकन निम्नलिखित बिन्दुओं में दिखाया गया है –

1. अमर नायक प्रणाली विजयनगर साम्राज्य की एक प्रमुख राजनीतिक खोज थी। ऐसा प्रतीत होता है कि इस प्रणाली के कई तत्त्व दिल्ली सल्तनत की इक्ता प्रणाली से लिए गए थे।
2. अमर नायक सैनिक कमांडर थे जिन्हें राय द्वारा प्रशासन के लिए राज्य क्षेत्र दिये जाते थे।
3. वे किसानों, शिल्पकर्मियों तथा व्यापारियों से भू–राजस्व तथा अन्य कर वसूल करते थे।
4. राजस्व का कुछ भाग मंदिरों तथा सिंचाई के साधनों के रख रखाव के लिए भी खर्च किया जाता था।
5. अमर नायकों के दल आवश्यकता के समय विजयनगर के शासकों को भी एक प्रभावी सैनिक सहायता प्रदान करते थे।
6. अमर नायक राजस्व का कुछ भाग व्यक्तिगत उपयोग तथा घोड़ों और हाथियों के निर्धारित दल के रख–रखाव के लिए अपने पास रख लेते थे।

7. ये दल विजयनगर शासकों को एक प्रभावी सैनिक शक्ति प्रदान करने में सहायक होते थे जिसकी मदद से उन्होंने पूरे दक्षिणी प्रायद्वीप को अपने नियंत्रण में किया।

8. अमर नायक राजा को वर्ष में एक बार भेंट भेजा करते थे और अपनी स्वामिभक्ति प्रकट करने के लिए राजकीय दरबार में उपहारों के साथ स्वयं उपस्थित हुआ करते थे।

9. ये अमर नायक राजा के नियंत्रण में रहते थे राजा कभी–कभी उन्हें एक से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित कर उन पर अपना नियंत्रण दर्शाते थे।

10. 17 वीं शताब्दी में इनमें से कई नायकों ने अपने स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिए।

अनुच्छेद आधारित प्रश्न

प्रश्न 11 कॉलिन मैंकेंजी

1754 ई. में जन्में कॉलिन मैंकेंजी एक अभियंता, सर्वेक्षक तथा मानचित्रकार के रूप में प्रसिद्धि हासिल की । 1815 मे उन्हे भारत का पहला सर्वेयर जनरल बनाया गया और 1821 मे उनकी मृत्यु तक वे इस पद पर बने रहे । भारत के अतीत को बेहतर ढंग से समझने के लिए और उपनिवेश के प्रशासन को आसान बनाने के लिए उन्होंने इतिहास से संबंधित स्थानीय परंपराओं का संकलन तथा ऐतिहासिक स्थलों का सर्वेक्षण करना आरंभ किया । वे कहते है– ब्रिटिश प्रशासन के सुप्रभाव में आने से पहले दक्षिण भारत खराब प्रबंधन की दुर्गति से लंबे समय तक जुझता रहा । विजयनगर के अध्ययन से मैंकेंजी को यह विश्वास हो गया कि कंपनी – स्थानीय लोंगों के अलग अलग कबीलों जो इस समय भी जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा थे, को अब भी प्रभावित करने वाले इनमें से कई संस्थाओं, कानूनो तथा रीति रिवाजो के विषय में बहुत महत्वपूर्ण जानकारियॉ हासिल कर सकते थे ।

(क) कॉलिन मैंकेंजी कौन था ? **2**

उत्तर कॉलिन मैंकेंजी इस्ट इंडिया कंपनी में काम करते थे । 1754 मे कॉलिन मैकेंजी का जन्म हुआ था। कॉलिन मैंकेंजी एक अभियंता, सर्वेक्षक तथा मानचित्रकार के रूप में प्रसिद्धि हासिल की ।

(ख)कॉलिन मैंकेंजी नें किस प्राचीन शहर की खोज की ? 1

उत्तर हंपी

(ग) उन्होने सर्वेक्षण क्यों प्रारंभ किया ? 2

उत्तरः– भारत के अतीत को बेहतर ढंग से समझने के लिए और उपनिवेश के प्रशासन को आसान बनाने के लिए उन्होंने इतिहास से संबंधित स्थानीय परंपराओं का संकलन तथा ऐतिहासिक स्थलों का सर्वेक्षण करना आरंभ किया ।

(घ) कॉलिन मैंकेंजी ने अपना कार्य किन चरणों में पूरा किया ? 3

उत्तर :– सर्वप्रथम उन्होने मानचित्र तैयार किए विरूपाक्ष मंदिर एवं पंपादेवी के पुजारियों से जानकारियॉ इकटठी की । उन्होंने स्थानीय परंपराओं कानूनो तथा रीति रिवाजो के विषय में बहुत महत्वपूर्ण जानकारियॉ हासिल की ।

विषय – 08
किसान, जमींदार और राज्य

1. किसान और कृषि उत्पादन
   भौगोलिक विविधता
1.1 स्रोतां की तलाश
   ऐतिहासिक ग्रंथ आइने–ए–अकबरी
   गुजरात, महाराष्ट्र तथा राजस्थान से मिलने वाले दस्तावेज
1.2 किसान और उनकी जमीन
   खेती व्यक्तिगत मिल्कियत के सिद्धांत पर आधारित होना
1.3 सिंचाई और तकनीक
   कृषि का विस्तार
   मानसून पर कृषि पर आश्रित होना
   सिंचाई के कृत्रिम उपाय अपनाना
   कृषि पशुबल पर आधारित होना
1.4 फसलों की भरमार
   खरीफ व रब की फसल
   यूरिया के अलग–अलग हिस्सों से भारत के फसलां का आना
2. ग्रामीण समुदाय
2.1 जाति और ग्रामीण माहौल
   आबादी का समूहां तथा जाति व्यवस्था को बंधनी में बंटना
   राजपूतों की चर्चा किसानों के रूप में
2.2 पंचायत और मुखिया
   पंचायत में विविधता
   गांव के मुखियों का चुनाव गांव के बुजुर्गों द्वारा
   जाति की अवहेलना रोकने का मुख्य दायित्व गांव के मुखिया की शादियाँ जातिगत मानदंडों के आधार पर
   पंचायतों द्वारा झगड़ों के समझौते
2.3 ग्रामीण दस्तकार
   दस्तकारों का अधिक संख्या में गाँवों में होना
   दस्तकारों को जमीन का महाराष्ट्र में पुश्तैनी अधिकार
   सेवाओं का विनिमय
2.4 एक छोटा गणराज्य
   सामाजिक लिंग के नाम पर समाज में गहरी विषमताएं
3. कृषि समाज में महिलाएँ
   उत्पादन प्रक्रिया में योगदान
   कुछ क्षेत्र महिलाओं के लिए सुरक्षित करना
   कुपोषण के कारण महिलाओं की मृत्यु दर अधिक होना

महिलाओं द्वारा न्याय के लिए पंचायत से अपील
हिंदु मुसलमान द्वारा न्याय के लिए पंचायत से अपील
हिंदू मुसलमान महिलाओं को जमीदारी उत्तराधिकार के रूप में

4. जंगल और कबीले

4.1 बसे हुए गाँवों के परे
यहाँ के लोगों को गुजारा जंगल के उत्पादां, शिकार और स्थानांतरीय खेती
राज्य के जंगल रक्षाकवच

4.2 जंगलों में घुसपैठ
हाथियों का प्रयोग
मुगलों द्वारा शिकार अभियानों का आयोजन
वाणिज्यिक खेती का प्रसार
सामाजिक कारणों से जंगलवासियों के जीवन में बदलाव आना
जगल के इलाकों में नई संस्कृति का विस्तार

5. जमींदार
जमींदारों को आर्थिक और सामाजिक सुविधाएँ होना
सैनिक संसाधन ताकत का हिस्सा होना
मुगलकालीन गाँवों में सामाजिक संबंध एक पिरामिड के रूप में
जमींदारी द्वारा बाजारी (हाटों) की स्थापना
जमींदारी का किसानों से आत्मीयता होना

6. भूराजस्व प्रणाली
राज्य का प्रशासन तंत्र
भूराजस्व के इंतजामात में 2 चरण
1. कार निर्धारण
2. वास्तविक वसूली

7. चांदी का बहाव
व्यापार में विस्तार
समुद्री व्यापार से नयी वस्तुओं का व्यापार

8. अबुलफज़ल की आइन–ए–अकबरी
अकबर के शासनकाल में 5 संशोधनों के पश्चात् पूरा होना
ऐतिहासिक दास्तान का आइन अकबरी में वर्णन शाही नियम, राजपत्रों का संकलन
सिलसिलेवार संकलन एक शाही कवायद
तीन भाग प्रशासन का विवरण
सूबों के नीचे इकाईयों का
संख्यात्मक आंकड़ों में विशषताएँ
आइन लोगो, उनके पेशों और व्यवसायों, साम्राज्यवादी व्यवस्था और उसके उच्चाधिकारियों की सूचनाएँ देनेवाला ग्रंथ

अति संक्षिप्त प्रश्न (02 अंक)

प्रश्न 1. 16 वी. सदी के राज्य अफसरो द्वारा किए जाने वाले विभिन्न कार्यो का वर्णन करें ?
उत्तर :– भू राजस्व वसूल करना, भूमि की नाप करना, रिकॉर्ड रखना आदि ।

प्रश्न 2. आइन ए– अकबरी के लेखक कौन थ ?
उत्तर :– अबुल फजल, अकबर का दरबारी लेखक थे, नवरत्नों में से एक थे ।

प्रश्न 3. रैयत कौन थे, ये कितने प्रकार के थे ?
उत्तर :– वे किसान थे, दो प्रकार :– खुद काश्त और पाहि काश्त । खुद काश्त उन्हीं गॉव मे रहते थे

जिनमें उनकी जमीन दी और पाहि काश्त वे खेतिहर थे जो दूसरे गॉवों से ठेके पर खेती करने आते थी ।

प्रश्न 4. आइन के मुताबिक कितने प्रकार की फसल श्रृतुएँ थी ?
उत्तर आइन – ए – अकबरी के अनुसार कृषि व्यवस्था में मुख्य रूप से दो कृषि ऋतुएं थी, खरीफ और रबी । खरीफ का उदाहरण चावल और ज्वार और रबी का उदाहरण गेहूँ और चना ।

प्रश्न 5. जिन्स –ए– कामिल से क्या अभिप्राय है ?
उत्तर :– सर्वोत्तम फसले जैसे – कपास और गन्ना।

संक्षिप्त प्रश्न (5 अंक)

प्रश्न 6. पंचायत के कार्यो का वर्णन कीजिए।
(1) सामुदायिक कार्य जैसे कि मिट्टी के छोटे–छोंटे बाँध बनाना या नहर खोदना।
(2) प्राकृतिक आपदाओं से निपटने की व्यवस्था करना।
(3) ग्रामीण समाज के लिए नियम बनाना।
(4) जाति की अवहेलना रोकना।
(5) सजा देना जैसे – जुर्माना लगाना और समुदाय से निष्कासित करना।

प्रश्न 7. आइन ए– अकबरी का वर्णन कीजिए।
(1) अकबर के साम्राज्य का झलक दर्शाना
(2) सैनिक संगठन का वर्णन करना ।
(3) सरकार के विभागों और प्रांन्तों के बारे में विस्तार से जानकारी देना ।
(4) राजस्व के स्त्रोत तथा हिसाब रखना ।
(5) खेतिहर समाज का वर्णन करना ।

प्रश्न 8. कृषि उत्पादन में महिलाओं की भूमिका का विवरण कीजिए।
(1) महिलाएँ और मर्द कंधे से कंधा मिलाकर खेतो मे काम करते थे ।
(2) बुआई, निराई और कटाई के साथ – साथ पकी हुई फसल का दाना निकालना।
(3) सूत कातना, बरतन बनाने के लिए मिट्टी को साफ करना और गूँथना, कपड़ो पर कढ़ाई करना, जैसे दस्तकारी के काम करना ।
(4) बच्चा पैदा करना तथा उनका पालन पोषण करना।
(5) प्रतिबंध, जैसें पश्चिमी भारत में महिलाओं को हल या कुम्हार का चाक छूने की इजाजत नही थी, बंगाल में पान के बागान में प्रवेश नहीं कर सकती थीं ।

प्रश्न 9. भू– राजस्व कैसे निर्धारित किया जाता था ?

(1) दीवान पूरे राज्य की वित्तीय व्यवस्था की देख रेख करता था ।
(2) भू– राजस्व के दो चरण :– जमा और हासिल । जमा निर्धारित रकम और हासिल सचमुच वसूली की गई रकम ।
(3) जुती हुई जमीन और जोतने लायक जमीन दोनो की नपाई की गई ।
(4) राजस्व कर्मचारियों की नियुक्ति, भू – राजस्व वसूल करने के लिए की गई ।
(5) वार्षिक रिर्पोट तैयार करना।

प्रश्न 10. जब्ती व्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए ?

(1) जमीन की नाप अनिवार्य ।
(2) भूमि का वर्गीकरण –पोलज, परौती, चचर, और बंजर।
(3) औसत उपज का ज्ञान रखना ।
(4) राज्य का भाग निश्चित करना।
(5) नकद मूल्य निश्चित करना।
(6) भूमिकर एकत्रित करना।

लम्बे प्रश्न 10 अंक (2+8)

प्रश्न 11. जमींदार कौन थे ? उनके क्या कार्य थें ?

जमींदार ग्रामीण समाज के अभिन्न अंग थे जो अपनी जमीन के मालिक होते थे वे कृषि उत्पादन में प्रत्यक्ष भागीदारी नहीं करते थे ग्रामीण समाज में उँची हैसियत के कारण उन्हें कुछ विशेष सामाजिक और आर्थिक सुविधायें मिली हुई थी। समाज में उनकी उच्च स्थिति के दो कारण थे। पहला – जाति, दूसरा– उनके द्वारा राज्य को दी जाने वाली विशेष सेवायें ।

कार्य :–

(1) भूराजस्व वसूल करना।
(2) राजा और किसान के बीच मध्यस्थता करना।
(3) सैनिक टुकड़ियों की व्यवस्था।
(4) कृषि भूमि का विकास करना।
(5) किसानो को कृषि के लिए ऋण देना।
(6) अपनी जमीनों की फसल को बेंचना।
(7) गांव में बाज़ार (हाट) लगाने की व्यवस्था करना ।
(8) जमींदारी की खरीद बेच से गांव की आर्थिक स्थित में सुधार लाना ।

श्रोत आधारित प्रश्न :–

निम्नलिखित अनुच्छेदों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उनके अंत में पूछे गए प्रश्नो के उत्तर दीजिए।

नकद या जीन्स ?

आइन से यह एक और अनुच्छेद है :–

अमील – गुजार सिर्फ नकद लेने की आदत न डाले बल्कि फसल भी लेने के लिए तैयार रहै। यह बाद वाला तरीका कई तरह से काम मे लाया जा सकता है। पहला, कणकुत : हिन्दी जुबान में कण का मतलब है, अनाज, और कुत, अंदाजा ..... अगर कोई शक हो, फसल को तीन अलग.अलग पुलिंदो मे काटना चाहिए – अच्छा, मध्यम और बदतर, और इस तरह शक दूर करना चाहिए। अकसर अंदाज से किया गया जमीन का आकलन भी पर्याप्त रुप से सही नतीजा देता है। दूसरा, बटाई जिसे भाओली भी कहते है (में) फसल काट कर जमा कर लेते है और फिर सभी पक्षों की मौजूदगी मे व रजामंदी में बँटवारा करते है लेकिन इसमें कई समझदार निरीक्षकों की जरुरत पड़ती है, वर्ना – दुष्ट – बुद्वि और मक्कार घोखेबाजी की नीयत रखते है । तीसरे खेत बटाई जब वे बीज बोने के बाद खेत बाँट लेते है।चौथे लाँग बटाई फसल काटने के बाद वे उसका ढेर बना लेते है और फिर उसे अपने में बाँट लेते है, और हरेक (पक्ष) अपना हिस्सा घर ले जाता है और उससे मुनाफा कमाता है।

प्रश्न 1. कणकुत का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (2)
उत्तर :– हिन्दी जुबान में कण का मतलब है अनाज और कुत का मतलब अंदाजा है ।

प्रश्न 2. भू राजस्व वसूली की बटाई अथवा भाओली प्रथा को स्पष्ट कीजिए। (2)
उत्तर :– इसमे फसल काट कर जमा कर लेते है और फिर सभी पक्षों की उपस्थिति में व रजामंदी मे बँटवारा करते है, लेकिन इसमें कई समझदार निरीक्षको की जरुरत पड़ते है।

प्रश्न 3. लाँग बटाई प्रथा की व्याख्या कीजिए (2)
उत्तर :– फसल काटने के बाद, वे उसका ढेर बना लेते है और फिर उसे अपने में बाँट लेते है और हरेक अपना – अपना हिस्सा घर ले जाता है और उससे मुनाफा कमाता है।

प्रश्न 4. भू राजस्व वसूली की कौन सी प्रथा आप अच्छी समझते है और क्यो? स्पष्ट कीजिए (2)
उत्तर :– लाँग बटाई क्योकि सबको अपना – अपना हिस्सा मिलता है और मुनाफा मिलता है।

पाठ - 9
शासक और इतिवृत्त

शासक और इतिवृत्त
मुगल दरबार (16वीं 17वीं शताब्दियां)
मुगल दरबार (पुराने संदर्भों द्वारा इतिहास की पुनर्रचना)
विस्तृत सर्वेक्षण–राजनीतिक इतिहास
खोज की कहानी–दरबारी कागजात (दस्तावेज़)
उदाहरण–अकबरनामा, बादशाहनामा
विचार–विमर्श–नय राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक इतिहास
बाबर से औरंगजेब तक औरंगजेब के अधिकारी, शेरशाह सूरी
प्रस्तावना–दरबारी इतिहासकार–अबुलफजल
मुगलशासक और साम्राज्य–उलमा वर्ग
इतिवृत्तों की रचना–शाहजहाँनामा, आलमगीरनामा, तुजुके जहाँगीरी आदि
तुर्की से फारसी की ओर
पांडुलिपियों की रचना
रंगीन चित्र
आदर्श राज्य–सुलह कुल–जन–कल्याण, मनसबदारी प्रथा
जहाँगीर तथा शाहजहाँ का काल वैभव–विलास का काल
अकबर की फार्मिक नीति, राजपूत नीति
औरंगजेब के समय कला को झटका
राजधानियाँ नये शहर
मुगल दरबार–झरोखा दर्शन
पदवियाँ, उपहार, भेंट, कोर्निश
शाही परिवार
सूचना तथा साम्राज्य
प्रांतीय शासन
सीमाओं से परे
तीर्थयात्रा और व्यापार गुरूओं के प्रति असीम आस्था–धर्म पर विमर्श
मुगल वास्तुकला, चित्रकला, सांस्कृतिक विकास
मुगलहरम, मुगल कारखाने
केन्द्रीय प्रशासन

अति लघु प्रश्न (2 अंक)

प्र.1 कोर्निश शब्द के अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. कोर्निश औपचारिक अभिवादन का एक ऐसा तरीका था जिसमें दरबारी दाएँ हाथ की तलहथी को ललाट पर रखकर आगे की ओर सिर झुकाते थें।

प्र.2 1526 से 1707 तक के बीच भारत में शासन करने वाले वंश का नाम बताइए और इस वंश के संस्थापक कौन थे ?

उत्तर. मुगल वंश और संस्थापक बाबर।

प्र.3 'किताबखाना' शब्द का अर्थ क्या है ?

उत्तर . 'किताबखाना' का शाब्दिक अनुवाद पुस्तकालय है। यह एक ऐसा लेखन गृह था, जहां शासकों द्वारा संकलित पांडुलिपियां रखी जाती तथा नई पांडुलिपियां तैयार की जाती थीं।

प्र.4 पांडुलिपियों की संरचना में संलग्न कुछ लोगों के कार्यो को बताइए ?

उत्तर. पांडुलिपियों की रचना के विविध कार्यों में बहुत लोग शामिल होते थे, इनमें से कुछ लोगों के द्वारा कागज बनाना, सुलेखन, घिसाई, चित्रकारी और जिल्दसाजी की जाती थी।

प्र.5 बाबर की आत्मकथा कौन–सी भाषा में लिखी गई थी ?

उत्तर. बाबर की आत्मकथा 'तुजके बाबरी' मूल रुप से तुर्की भाषा में लिखी गई थी। बाद में इसे फारसी भाषा में बाबरनामा के नाम से अनुवाद किया गया।

लघु प्रश्न (5 अंक)

प्र.6 मुगल साम्राज्य में शाही परिवार की स्त्रियों द्वारा निभाई गई भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर. 1. मुगल परिवार में शही परिवारों से आने वाली स्त्रियों, बेगमों, अगाहा में अंतर रखा जाता था।

2. पत्नियां और उनके अनेक महिलाएं साधारण से साधारण कार्य से लेकर बुद्धिमता से अलग–अलग कार्यों का संपादन करते थे।

3. नूरजहां के बाद मूल रानियों और राजकुमारियों ने महत्त्वपूर्ण वित्तिय स्रोतों पर नियंत्रण रखना शुरु किया।

4.जहाँआरा, रोशनआरा को ऊँचे शाही मनसबदारों के समान वार्षिक आय होती थी।

5. जहाँआरा को सूरत के बंदरगाह से राजस्व प्राप्त होता था।

6. संसाधनों पर नियत्रण ने मुगल परिवार की महत्त्वपूर्ण स्त्रियों को इमारतों या बागों के निर्माण का अधिकार दिया था।

7. चाँदनी चौक की रुपरेखा जहाँआरा के द्वारा बनवाई गई।

प्र.7 'बादशाहनामा' पर संक्षेप में टिप्पणी लिखिए।

उत्तर. अबुलफज़ल एक शिष्य अब्दुल हमीद लाहौरी बादशाह नामा के लेखक के रुप में जाना जाता है। इसकी योग्यताओं के बारे में सुनकर बादशाह शाहजहाँ ने उसे अकबर नामा के नमूने पर अपने शासन का इतिहास लिखने के लिए नियुक्त किया। बादशाह नामा भी सरकारी इतिहास है। इसकी तीन जिल्दें (दफतर) हैं और प्रत्येक जिल्द 10 चंद्र वर्षों का ब्योरा देती हैं। लाहौरी ने बादशाह के शासन (1627. 47) के पहले के दो दशकों पर पहला व दूसरा दफतर लिखा इन जिल्दों में बाद में शाहजहाँ के वजीर सादुल्ला खाँ ने सुधार किया।

विस्तृत उत्तर 10 (5+5 अंक)

प्र.8. मनसबदारी के प्रणाली के गुण और दोषों की विवेचना कीजिए।

उत्तर. मनसबदारी प्रणाली के गुण

1- सम्राट को सैन्य संगठन संबंधी परेशानियों से छुटकारा दिलाना ।

2- योग्यतानुसार पद प्रदान किया जाना

3- प्रशासनिक व्यय को सीमित करना ।

4- साम्राज्य का विस्तार एवं स्थायित्व प्रदान करना।

5- मनसबदार कला और साहित्य के पोषक थे।

मनसबदारी प्रणाली के दोष

1- वैभवशाली जीवन से धन को दुरूपयोग होना।

2- निर्धारित संख्या से कम सैनिक

3- सम्राट के प्रति स्वामी भक्ति का विकास नहीं होना।

4- अमीरों तथा सरदारों में विद्रोह की भावना पनपना।

5- मुगल सेना का राष्ट्रीय सेना न बन पाना।

6- शासक और सैनिकों के मध्य सीधे सम्पर्क की कमी।

अध्याय . 10
उपनिवेशवाद और देहात

1. बंगाल और वहाँ के जमींदार

1.1 बर्दवान में की गई नीलामी की घटना
- इस्तमरारी बंदोबस्त
- नीलामी में बोली लगाना
- फर्जी बिक्री

1.2 अदान किए गए राजस्व की समस्या
- जमींदारियों का हस्तांतरण
- अकाल
- जमींदार भूस्वामी न होकर राजस्व समाहर्ता

1.3 राजस्व राशि के भुगतान में जमींदार क्यों चूक करते थे?
- जमींदारों की असफलता के विभिन्न कारण

1.4 जोतदारों का उदय

1.5 जमींदारों की ओर से प्रतिरोध
- फ़र्जी बिक्री के अंतर्गत स्त्रियों के नाम पर संपत्ति को सुरक्षित करना

1.6 पाँचवीं रिपोर्ट
- ईस्ट इंडिया कंपनी के चीन और भारत में व्यापार के एकाधिकार को रद्द करना
- कंपनी का कुशासन और अव्यवस्थित प्रशासन
- प्रवर समिति

2. कुदाल और हल

2.1 राजमहल की पहाड़ियों में
- बुकानन के अनुभव
- पहाड़ी लोगों का निवास, व्यवसाय
- स्थायी कृषि का विस्तार
- पहाड़िया मुखियाओं को वार्षिक भत्ता देकर क्षेत्र में शांति स्थापित करना
- संथाल लोगों का आगमन

2.2 संथाल : आगुआ बाशिंदे
- पहाड़िया लोग जहाँ उपद्रवी थे संथाल आदर्श बाशिंदे
- संथालों के गाँवों की वृद्धि

2.3 बुकानन का विवरण
- ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए बुकानन द्वारा प्राकृतिक साधनों की खोज
- वनों को कृषि भूमि में बदलने के प्रयास

3. देहात में विद्रोह
- बम्बई दक्कन
- किसानों द्वारा साहूकारी के बही–खातें जलाना और अनाज़ लूटना
- अहमदनगर में विद्रोह
- अंग्रेजों के सामने 1857 के विद्रोह का दृश्य उपस्थित होना
- गिरफ्तारियों का दौर

3.2 एक नई राजस्व प्रणाली
- 1810 के बाद खेती की कीमतें बढ़ना
- औपनिवेशिक सरकार द्वारा भू–राजस्व में उपाय सोचना
- जमींदारों द्वारा जमीनपट्टे पर देना और किराए कि आमदनी पर निर्भर होना
- बंबई दक्कन में रैतयवाड़ी का लागू होना

3.3 राजस्व की माँग और किसान का कर्ज
- बंबई में कठोरतापूर्वक राजस्व वसूल करना
- 1832 के बाद कृषि उत्पादों की कीमतों में तेजी से गिरावट आना
- अकाल की चपेट में कृषि, पशुधन और मनुष्य का आना
- 1840 के बाद कृषि और आर्थिक स्थिति में सुधार

3.4 फिर कपास में तेजी आई
- अमेरिका से कच्चा माल (कपास) लेने पर ब्रिटिश का चिंतित होना
- 1857 में ब्रिटेन में कपास आपूर्ति संघ की स्थापना
- 1859 में मैनचेस्टर कॉटन कंपनी की स्थापना
- भारत में कपास की खेती आरम्भ करना
- 1861 में अमेरिका में गृहयुद्ध
- बम्बई में कपास की खेती को प्रोत्साहन देना
- दक्कन में गाँवों के किसानों को असीमित ऋण उपलब्ध कराना

3.5 ऋण का स्रोत सूख गया
- अमेरिका के गृहयुद्ध के बाद वहाँ कपास का उत्पादन आरम्भ हुआ
- भारतीय कपास के निर्यात में गिरावट
- किसानों से ऋण वापस माँगना और राजस्व की मांग को बढ़ाना

3.6 अन्याय का अनुभव
- ऋणदाता का संवेदनहीन होना
- ब्याज का मूलधन से अधिक होना
- 1859 में अंग्रेजों द्वारा परिसीमन कानून बनाना
- दस्तावेज और बंधपत्र अत्याचार प्रणाली से प्रतीक होना

4. दक्कन दंगा आयोग

बम्बई सरकार द्वारा 1878 में ब्रिटिश पार्लियामेंट में दक्कन दंगा आयोग का रिपोर्ट पेश करना।

2 अंक के प्रश्न

प्र.1 स्थायी बंदोबस्त क्या था ? **2**

उत्तर– भूमिकर या लगान इकट्ठा करने की प्रथा जो 1793 में अंग्रेजी गवर्नर जनरल लार्ड कार्नवालिस (1786–1793) ने चलाई उसे स्थायी बंदोबस्त कहते हैं । इस व्यवस्था के अंतर्गत भूमि जमीदारों को स्थायी रूप से दे दी गई इस भूमि कर व्यवस्था को स्थायी बंदोबस्त का नाम दिया गया ।

प्र.2 रैयतबारी बन्दोबस्त क्या था? **2**

उत्तर– अंग्रेजी कम्पनी ने भारत में लगान वसूल करने के अनेक ढंग चलाये । उनमें रैयतबारी भी एक था । इसमें सरकार का संबंध जमींदारों से न होकर रैयत या किसानों से सीधा होता था इसलिए जमींदारों को बीच में कुछ नहीं देना पड़ता था । इस प्रथा को मद्रास और बम्बई में लागू किया गया । इस व्यवस्था में लगान की दर काफी ऊँची थी जिसके परिणामस्वरूप किसान कर्ज लेने के लिए मजबूर हो जाते थे ।

प्र.3 भाड़ा पत्र क्या था ? **2**

उत्तर– भाड़ा पत्र एक ऐसा दस्तावेज था जिसमें रैयत यह लिखकर देते थे कि वे साहूकारों से जमीन और पशु खेती करने के लिए भाड़े पर ले रहे हैं । वास्तव में यह जमीन और पशु रैयत के ही होते थे जो ऋण न चुका पाने के कारण ऋणदाता ने हथिया लिए थे ।

प्र.4 संथाल कौन थे ? उनके जीवन की दो विशेषताऐं क्या थीं ? **2**

उत्तर– संथाल लोग राजमहल पहाड़ियों की तलहटी या निचले भागों में रहते थे । वे हल से जुताई करके खेती करते थे । उन्हें मैदानों के जमींदार लोग खेती के लिए नई भूमि तैयार करने और खेती का विस्तार करने के लिए भाड़े पर लगा लेते थे ।

प्र.5 दक्कन दंगा आयोग से आप क्या समझते हैं? **2**

उत्तर– 1875 के बाद जो दक्कन में किसानों द्वारा दंगे किए गए उनकी छानबीन करने के लिए भारत सरकार के दबाव डालने पर बम्बई की सरकार ने जो जाँच आयोग बैठाया उसे दक्कन दंगा आयोग कहा जाता है । इसकी रिर्पोट 1878 में ब्रिटिश पार्लियामेंट के सामने पेश की गई ।

प्र.6 जोतदार कौन थे ? **2**

उत्तर– धनी किसानों के समूह को जोतदार कहा जाता था जो 18वीं शताब्दी के अंत में जमींदारों की बड़ी मुसीबतों का लाभ उठाकर अपनी शक्ति बढ़ाने में लगे हुए थे ।

5 अंक के प्रश्न

प्र.7 राजस्व राशि के भुगतान में जमींदार क्यों चूक करते थे? **5**

उत्तर– इसके अनेक कारण थे–

1 आरम्भ में राजस्व की दरें और मांगे बहुत ऊँची रखी गई थी क्योंकि सरकार सोचती थी कि बाद में राजस्व की मांगों को बढ़ाया नहीं जा सकेगा ।

2 शुरू–शुरू में जमीदारों को अपनी–अपनी भूमियों के सुधार में अपने पास से बहुत धन व्यय करना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप लगान का भुगतान करने के लिए उनके पास धन की कमी हो गई ।

3 जमींदार लोग नए कानूनों को समझने में असमर्थ रहे इसलिए वे राजस्व देने में कोताही करने लगे जिसके कारण राजस्व की राशि बढती चली गई ।

4 1790 के दशक में कृषि उपज की कीमतें प्रायः काफी कम थी इसलिए किसान जमींदारों को अपना कर चुकान में असफल रहे । ऐसे में जब किसानों से धन प्राप्त नही हुआ तो वे आगे अंग्रेजी राजस्व अधिकारियों को धन कैसे चुका सकते थे ।

5 राजस्व की राशि तो एक समान रहती थी परन्तु कई बार सूखा, अकाल पड़ने या अधिक वर्षा के कारण फसलें बर्बाद हो जाती थी परन्तु राजस्व वैसे का वैसा ही बना रहता था जिसे प्रतिकूल परिस्थितियों में चुकाना काफी कठिन हो जाता था ।

6 जमींदारों से सभी प्रशासनिक अधिकार छीन लिए गए थे और वे अपनी सैन्य टुकड़ियाँ भी नहीं रख सकते थे । इस प्रकार किसानों पर उनका नियंत्रण काफी ढीला पड़ गया था । ऐसे में किसानों से पैसा कैसे वसूल किया जा सकता था?

7 जमींदारों को कमजोर होता देखकर अनेक गाँव के मुखिया–जोतदार या पंडत बड़े प्रसन्न होते थे क्योंकि अब उनके विरूद्ध शक्ति का प्रयोग नही कर सकते थे ऐसे में जमीदारों या उनके प्रतिनिधियों जिन्हें ''अमला'' कहते थे किसानों से भूमिकर एकत्रित करना काफी कठिन हो जाता था ।

प्र.8 संथालों ने ब्रिटिश शासन के विरूद्ध विद्रोह क्यों किया? **5**

उत्तर– संथालों के बिटिश शासन के विरूद्ध विद्रोह के निम्न कारण थे –

1 संथालो ने जिस जंगली भूमि को बड़ी कठिनाई से साफ करके खेती योग्य बनाया था अब उस पर अंग्रेजी सरकार भारी कर लगा रही थी ।

2 उधर साहूकार लोग भी, ब्रिटिश सरकार के अधिकारियों से मिलकर ऊँची दर से संथालों को कर्ज देने लगे थे और कर्ज न मिलने पर वे उनकी भूमियों को हथियाने लगे थे । साहूकार की इस कुचेष्ठा के पीछे ब्रिटिश सरकार का हाथ था ऐसा संथाल लोगों ने महसूस किया । इसलिए वे साहूकारों को नहीं

ब्रिटिश सरकार को दोषी मानने लगे थे ।

3 उधर जब जमींदारों ने संथालों के निश्चित इलाके जिसे दामिन–इ–कोह कहा जाता था, पर अपने अधिकार का दावा किया तो संथाल लोग ब्रिटिश नीतियों से और भयभीत हो गए क्योंकि उनके विचार में इस कुचेष्ठा के पीछे भी ब्रिटिश सरकार का हाथ था ।

4 ब्रिटिश सरकार जैसे–जैसे सुदृढ़ होती गई उसने पहाड़ी क्षेत्रों को भी अपने दृढ. नियंत्रण में लेने का प्रयत्न किया । ऐसा ब्रिटिश साम्राज्य की सुरक्षा और आर्थिक स्थिति के लिए आवश्यक माना गया । ऐसे में जब संथालों के इलाके पर ब्रिटिश सरकार ने अपना नियंत्रण करने की सोची तो संथाल भड़क उठे और उन्होंने 1855–56 में ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध विद्रोह कर दिया ।

प्र.9 पहाड़िया लोगों के बारे में आप क्या जानते हैं । **5**

उत्तर– 1 पहाड़िया लोग राजमहल पहाड़ियों के असली निवासी थे । वे इस जगह को अपनी निजी संपत्ति समझते थे ।

2 पहाड़िया लोग झूम खेती करते थे । वे जंगल के छोटे से हिस्से में झाड़ियां आदि को काट कर और घास–फूस को जलाकर जमीन साफ कर लेते थे और राख की पोटाश से उपजाऊ बनी भूमि पर अपनी फसले उगाते थे । कुछ समय उस जमीन को खाली छोड़ देते थे ताकि मिट्टी की उर्वरता बनी रहे ।

3 कुदाल पहाड़िया लोगों के जीवन का प्रतीक बन गया था ।

4 इनका जीवन पूरी तरह जंगल की उपज पर निर्भर था । वे जंगलों से खाने के लिए फल तथा महुआ के फूल इकट्ठा करते थे और बेचने के लिए लकड़ियां इकट्ठी करते थे ।

10 अंक के प्रश्न

प्र.10 किसानों का इतिहास लिखने में सरकारी स्त्रोतों के उपयोग के बारे में क्या समस्याऐं आती हैं ?

उत्तर– किसानों संबंधी इतिहास लिखने में सरकारी स्त्रोतों के उपयोग के दौरान आने वाली समस्याएँ–

1 किसानों से संबंधित इतिहास लिखने में कई स्त्रोत हैं जिनमें सरकार द्वारा रखे गए राजस्व अभिलेख, सरकार द्वारा नियुक्त सर्वेक्षणकर्त्ताओं के द्वारा दी गई रिपोर्टो व पत्रिकाऐं जिन्हें हम सरकार की पक्षधर कह सकते है, सरकार द्वारा नियुक्त जांच आयोग की रिपोर्ट अथवा सरकार के हिम तें पूर्वागृह या

सोच रखने वाले अंग्रेज यात्रियों के विवरण और रिपोर्ट आदि शामिल है ।

2 ऐसे ऐतिहासिक स्त्रोतों पर दृष्टिपात करते समय हमें यह याद रखना होगा कि ये सरकारी स्त्रोत हैं और वे घटनाओं के बारे में सरकारी सरोकार और अर्थ प्रतिबिंबित करते हैं । उदाहरणार्थ – दक्कन दंगा आयोग से विशेष रूप से यह जाँच करने के लिए कहा गया था कि क्या सरकारी राजस्व का स्तर विद्रोह का कारण था, संपूर्ण साक्ष्य प्रस्तुत करने के बाद आयोग ने यह सूचित किया था कि मांग किसानों के गुस्से की वजह नहीं थी ।

3 रिपोर्ट का मुख्य सार एवं दोष – इसमें सारा दोष ऋणदाताओं या साहूकारों का ही था इससे यह बात स्पष्ट होती है कि औपनिवेशिक सरकार यह मानने को कभी भी तैयार नहीं थी कि जनता में असंतोष या रोष कभी सरकारी कार्यवाही के कारण भी उत्पन्न हुआ था ।

4 सरकारी रिपोर्ट इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए बहुमूल्य स्त्रोत सिद्ध होती है लेकिन उन्हें हमेशा सावधानीपूर्वक पढ़ा जाना चाहिए और समाचार पत्रों, गैर–सरकारी वृतांतों, वैधिक अभिलेखों और यथासंभव मौखिक स्त्रोतो से संकलित साक्ष्य के साथ उनका मिलान करके उनकी विश्वसनीयता की जाँच की जानी चाहिए ।

5. औपनिवेशिक सरकार जनता में व्याप्त असंतोष तथा रोष के लिए स्वयं को उत्तरदायी मानने के लिए तैयार नहीं थी।

प्र.11 ईस्ट इंडिया कंपनी ने जमींदारों पर अपना नियंत्रण बढ़ाने के लिए क्या–क्या कदम उठाए ? **10**

उत्तर– 1 जमीदारों की सैन्य टुकड़ियों को भंग कर दिया गया ।

2 सीमा शुल्क समाप्त कर दिया गया ।

3. उनकी कचहरियों को कम्पनी द्वारा नियुक्त कलेक्टर की देखरेख में रख गया ।

4 जमीदारों से स्थानीय न्याय और स्थानीय पुलिस की व्यवस्था करने की शक्ति छीन ली गई ।

5 समय के साथ–साथ कलेक्टर का कार्यालय सत्ता के एक विकल्पी केन्द्र के रूप में उभर आया और जमींदार के अधिकार को पूरी तरह सीमित एवं प्रतिबंधित कर दिया गया ।

अनुच्छेद आधारित प्रश्न–

पांचवी रिपोर्ट से उदधृत–

जमीदारों की हालत और जमीनों की नीलामी के बारे में पांचवी रिपोर्ट में कहा गया है –

राजस्व समय पर नहीं वसूल किया जाता था और काफी हद तक जमीने समय–समय पर नीलामी पर बेचने के लिए रखी जाती थीं । स्थानीय वर्ष 1203, तदनुसार सन 1796–97 में बिक्री के लिए विज्ञापित जमीन की निर्धारित राशि (जुम्मा) 28,70,061 सिक्का रू. थी और वर वास्तव में 17,90,416 रू. में बेची गई और 1418756 रूपये राशि जुम्मा के रूप में प्राप्त हुई स्थानीय संवत् 1204 तदानुसार सन् 1797 – 98 में 26,66,1991 सिक्का रूपये के लिए जमीन विज्ञापित की गई 22,74,076 सिक्का रूपये की जमीन बेची गई और क्रय राशि 21,47,580 सिक्का रूपये थी । बाकीदारों में कुछ लोग देश के बहुत पुराने परिवारों में से थे । ये थे नादिया, राजशाही, विशनपुर (सभी बंगाल के) आदि के राजा । साल दर साल उनकी जागीरों के टूटते जाने से उनकी हालत विगड़ गई । उन्हें गरीबी और बर्बादी का सामना करना पड़ा और कुछ मामलों में तो सार्वजनिक निर्धारण की राशि को यथावत बनाए रखने के लिए राजस्व अधिकारियों को भी काफी कठिनाइयां उठानी पड़ी ।

प्र. 1 जमीदार समय पर ऋण चुकाने से क्यों चूक जाते थे ? **3**

प्र.2 उन पुराने परिवारों का उल्लेख कीजिए, जो राजस्व नही चुका पाते थे **2**

प्र.3 पॉचवी रिपोर्ट क्या थी ? **3**

उत्तर 1

(क) राजस्व की रकम अत्यधिक थी ।

(ख) 1790 में राजस्व की रकम में वृद्वि होने से इसका खराब प्रभाव कृषि उत्पादन पर पड़ा । किसान समय पर कर नही दे सके अतः जमीदार भी राजस्व नहीं चुका पाते थे ।

(स) उत्पादन हमेशा समान रूप से नहीं होता था इसलिए भू–राजस्व एव समान नही था, परन्तु भू–राजस्व नियमित रूप से देना पड़ता था

उत्तर 2

कुछ बाकीदार पुराने परिवार थेः नदिया, राजशाही, विशनपुर आदि । ये सभी बंगाल जिले से सबंधित थे ।

उत्तर 3

पॉचवी रिपोर्ट सन् 1813 में ब्रिटिश संसद में पेश की गई थी । जो भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रशासन में तथा कियाकलापो के बारे में तैयार की गई थी । यह रिपोर्ट 1,002 पृष्ठों में थी । 800 से अधिक पृष्ठों में जमीदारों और रैयतों की अर्जियॉ भिन्न – भिन्न जिलों के कलेक्टरों की रिपोटे राजस्व विवरण से सबंधित सांख्यिकीय तालिकाऍ और अधिकारियों द्वारा बंगाल और मद्रास के राजस्व तथा न्यायिक प्रशासन पर लिखित टिप्पणियॉ शामिल की गई थी ।

अध्याय – 11
विद्रोही और राज
1857 का आंदोलन और उसके व्याख्यान

1. विद्रोह का ढर्रा
   – विद्रोह की खबर एक शहर से दूसरे शहर पहुँचना
   – हर छावनी में विद्रोह का घटनाक्रम

1.1 सैन्य विद्रोह कैसे शुरू हुए
   – विद्रोह के विभिन्न संकेत
   – कहीं तोप का गोला दागना तो कहीं बिगुल बजाना
   – शास्त्रागार पर कब्जा और सरकारी खजाने को लूट लाना
   – समवेत स्वर फिरंगियों के खिलाफ अपीलें जारी करना
   – विद्रोह में आम लोगों को शामिल होना

1.2 संचार के माध्यम
   – अच्छा संचार का स्थापित होना
   – योजना समन्वित और असरदार होना
   – सामूहिक निर्णय

1.3 नेता 5 नेताओं का उभरकर आना

1.4 अफवाहें और भविष्यवाणियाँ
   – ब्रिटिश शासन के खिलाफ अफवाहें फैलाना
   – लार्ड हार्डिंग के विरूद्ध षड़यंत्र रचना

1.5 लोग अफवाहों में विश्वास क्यों कर रहे थे?
   – लोगों के जहन में डर संदेह मूल कारण
   – सती प्रथा और हिन्दू विधवा विवाह
   – अंग्रेजी प्रणाली का हृदयहीन, परायी और दमनकारी होना

2. अवध में विद्रोह

2.1 एक गिलास चेरीफल
   – 1801 में अवध से सहायक संधि की योजना
   – 1851 में लार्ड डलहौजी का बयान
   – 1851 में अवध का अधिग्रहण होना

2.2 देह से जान जा चुकी थी
   – वाजिद अली शाह को कलकत्ता निष्कासित करना
   – अवध से नवाब के निष्कासन से जनता को बेहद दुख और अपमान का सामना

2.3 फिरंगी राज का आना और एक दुनिया का खात्मा

– अवध के अधिग्रहण से केवल नवाब की गद्दी न छीनी जाना उसके ताल्लुकदार को भी लाचार करना

– 1857 में एकमुश्त बंदोबस्त का लागू होना

– एक पूरी सामाजिक व्यवस्था का भंग होना

– पुरानी दुनिया का खात्मा

3. विद्रोही क्या चाहते थे

3.1 एकता की कल्पना

– विद्रोही विद्रोहियों द्वारा सामाजिक एकता स्थापित करना

– हिन्दुस्तानी फौजियों को उनका हक दिलाना

– हिंदू धर्म और इस्लाम की रक्षा करना, इसाई धर्म को फैलाने से रोकना

3.2 उत्पीड़न के प्रतीकों के खिलाफ

– फिरंगी राज के उत्पीड़िन को रोकना

– ब्रिटिश भूराजस्व व्यवस्था को नकारना

– व्यापक सार्वजनिक भलाई को करन

3.3 वैकल्पिक सत्ता की तलाश

– ब्रिटिश शासन के ध्वस्त होने के बाद दिल्ली, लखनऊ, कानपुर में वैकल्पिक सत्ता की तलाश

– पुरानी दरबारी संस्कृति का सहारा लेना

– मुगल व्यवस्था से मिलती–जुलती व्यवस्था अपनाना

4. दमन

– अंग्रेजी द्वारा विद्रोह कुचलना आसान न होना

– मार्शल लॉ काम न आना

– अनेक टुकड़ियों द्वारा हरके इलाका छाना जाना

– जमींदारों को फुसलाने का प्रयत्न करना

– किसानों का बुरा हाल बनाना

5. विद्रोह की छावियाँ

– विद्रोहियों की घोषनाएँ, सूचनाएँ और पत्र

– केवल अंग्रेजी दस्तावेज ही आधार नहीं

– जनता की भावनाओं को भड़काना और प्रतिशोधण के लिए प्रेरित करना

5.1 रक्षकों का अभिनंदन

– अंग्रेजी पदाधिकारियों का अभिनंदन

– विद्रोह को कुचलने वाले अधिकारियों को महामड़ित करना

5.2 अंग्रेज औरतें और ब्रिटेन की प्रतिष्ठा

– अंग्रेज औरतों और बच्चों को मन में भय पैदा करना

– अंग्रेजियत और ईसाईयत की रक्षा

5.3 प्रतिशोध और प्रदर्शन

– अंग्रेजी द्वारा प्रतिशोधात्मक और सबक सीखने की योजना तैयार करना

5.4 दहशत का प्रदर्शन
– विद्रोहियों को मौत के घाट उतार जाना
5.5 दया के लिए कोई जगह नहीं
– अंग्रेजों के हृदय में दया की गुजारिश न होना
– खौफनाक दृश्य का उपस्थित होना
5.6 राष्ट्रवादी दृश्य कल्पना
– विद्रोहियों में राष्ट्रवादी भावना का कूट कूट कर भरना
– विद्रोही नेताओं को राष्ट्र नायकों के रूप में प्रस्तुत करना
– साहित्य और चित्र में राष्ट्रनायकों की वीरगाथा का गुणगान करना

अतिलघु प्रश्न (02 अंक)

प्रश्न 01	सहायक संधि को किस गवर्नर जनरल द्वारा लागू किया गया? इसे स्वीकार करने वाले चार प्रमुख शक्तियों के नाम लिखिए।
उत्तर	सहायक संधि को गवर्नर जनरल लॉर्ड वैलेस्ली द्वारा लागू किया गया। इसे स्वीकार करने वाले प्रमुख शक्तियाँ थीं – हैदराबाद, अवध, मैसूर इत्यादि।
प्रश्न 02	कानपुर में किस अंग्रेज महिला ने भारतीय सिपाहियों से वीरतापूर्वक अपनी रक्षा की?
उत्तर	मिस व्हीलर
प्रश्न 03	अवध का अंतिम नवाब कौन था? उसे पेंशन देकर कहाँ भेजा गया?
उत्तर	वाजिल अली शाह अवध का अंतिम नवाब था। उसे पेंशन देकर कलकत्ता भेज दिया गया
प्रश्न 04	सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम किस गवर्नर जनरल के शासनकाल में तथा कब पारित किया गया?
उत्तर	सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम 1856 में लॉर्ड कैनिंग के शासनकाल में लागू किया गया।

लघु प्रश्न (05 अंक)

प्रश्न 01	1857 विद्रोह के राजनैतिक एवं प्रशासनिक कारणों का वर्णन करें।
उत्तर	(क) ब्रिटिश शासकों की साम्राज्यवादी नीति (ख) राज्य अपहरण की नीति (ग) पेंशनों तथा उपाधियों की समाप्ति (घ) मुगल सम्राट के प्रति असम्मानजनक बर्ताव (ड.) अवध का विलय (च) सहायक संधि का दुरूपयोग
प्रश्न 02	1857 विद्रोह की असफलता के क्या कारण थे?
उत्तर	(क) विद्रोह का निश्चित तिथि से पूर्व विस्फोट (ख) अंग्रेजों को देशी शासकों का सहयोग प्राप्त होना (ग) उच्च वर्ग का सहयोग न मिलना (घ) विद्रोहियों के सीमित साधन (ड.) सामान्य आदर्श का अभाव (च) प्रतिभावान ब्रिटिश सेनापति (छ) संचार–साधनों पर अंग्रेजों का नियंत्रण

प्रश्न 03	1857 विद्रोह के स्वरूप का वर्णन करें
उत्तर	**(क) सैनिक विद्रोह मात्र :–** (अ) 1857 के विद्रोह की प्रमुख आधारभूमि सैनिकों द्वारा तैयार की गयी थी। (ब) विद्रोह का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा तात्कालिक कारण चर्बीवाले कारतूसों का मामला था। (स) विद्रोह का प्रसार संपूर्ण देश में नहीं हुआ। यह उन्हीं नगरों एवं क्षेत्रों तक सीमित रहा जहाँ सैनिक चौकियाँ और छावनियाँ थी। (द) विद्रोह का दमन करने में ब्रिटिश सरकार को अधिक कठिनाईयों का सामना नहीं करना पड़ा, क्योंकि इसे सामान्यजनों का सहयोग एवं समर्थन प्राप्त नहीं था। **(ख) प्रथम स्वतंत्रता संग्राम :–** (अ) लाखों कारीगरों, किसानों और सिपाहियों ने कन्धे से कन्धा मिलाकर ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ संघर्ष किया। घुमक्कड़ सन्यासियों, फकीरों एवं मदारियों द्वारा गांव–गांव में इसका प्रचार–प्रसार किया। (ब) आंदोलन में हिन्दू–मुसलमानों ने एकजुट होकर भाग लिया। सभी विद्रोहियों में एक मत से बहादुरशाह को अपना सम्राट स्वीकार किया। (स) विद्रोह के लगभग सभी केन्द्रों में जनसाधारण ने ब्रिटिश शासन के विरूद्ध सक्रिय भाग लिया। (द) विद्रोह का क्षेत्र काफी व्यापक था। अनेक देशी रियासतों एवं राज्यों में शासक वर्ग के ब्रिटिश सत्ता के सहयोग एवं समर्थक बने रहने पर भी सेना एवं जनता द्वारा विद्रोह में सक्रिय भाग लिया था।

विस्तृत प्रश्न (08 अंक)

प्रश्न 01		1857 विद्रोह के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सैनिक कारणों का वर्णन करो
उत्तर	**(क)**	**<u>आर्थिक कारण</u>** (अ) सम्पदा का निष्कासन (ब) भारतीय उद्योग–धन्धों तथा व्यापार–वाणिज्य का विनाश (स) भू–राजस्व की दर (द) इनाम में प्राप्त जागीरों को छीनना (य) जनसामान्य में बेकारी और दरिद्रता
	(ख)	**<u>सामाजिक कारण</u>** (अ) भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार (ब) भारतीयों के सामाजिक जीवन में हस्तक्षेप (स) पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार (द) ईसाई धर्म का प्रचार
	(ग)	**<u>सैनिक कारण</u>** (अ) भारतीय सैनिकों में असंतोष (ब) भारतीय सैनिकों की अपेक्षाकृत अधिक संख्या (स) सेना का दोषपूर्ण वितरण (द) सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम (य) चर्बीवाले कारतूस

अनुच्छेद पर आधारित प्रश्न

निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए और उत्तर दीजिए :–

विद्रोही क्या चाहते थे, इस विषय में हमें 25 अगस्त, 1857 ई0 की आजमगढ़ घोषणा से महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

भाग–।।। सरकारी कर्मचारियों के विषय में :–

''अब यह कोई रहस्य की बात नहीं है कि ब्रिटिश सरकार के अधीन प्रशासनिक एवं सैनिक सेवाओं में भर्ती हो वाले भारतीय लोगों को सम्मान नहीं मिलता। उनका वेतन कम होता है और उनके पास कोई शक्ति नहीं होती। प्रशासनिक और सैनिक दोनों सेवाओं में प्रतिष्ठा और धन वाले सभी पद केवल अंग्रेजों को ही दिये जाते हैं। इसलिए ब्रिटिश सेवा में काम करने वाले सभी भारतीयों को अपने मजहब और हितों की ओर ध्यान देना चाहिए तथा अंग्रेजों के प्रति अपनी वफादारी को छोड़कर बादशाही सरकार का साथ देना चाहिए। उन्हें 200–300 रूपये मासिक वेतन मिलेगा और भविष्य में ऊंचे पद मिलेंगे।''

भाग–। कारीगरों के विषय में :–

इसमें कोई संदेह नहीं कि इंग्लैंड में निर्मित वस्तुओं को ला–लाकर यूरोपीयों ने हमारे बुनकरों, सूती वस्त्र बनाने वालों, बढ़ईयों, लोहारों और मोचियों आदि को बेरोजगार कर दिया है। उनके काम–धन्धों पर इस प्रकार अधिकार जमा लिया है कि देशी कारीगरों की हर श्रेणी भिखमंगों की स्थिति में पहुँच गई है। बादशाही सरकार में देशी कारीगरों को राजाओं और अमीरों की सेवा में नियुक्त किया जाएगा। निःसंदेह, इससे उनकी उन्नति होगी। इसलिए इन कारीगरों को अंग्रेजों की सेवा छोड़ देनी चाहिए।''

प्रश्न 01 भारत में ब्रिटिश माल की पहुँच ने कारीगरों को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर भारत में ब्रिटिश में निर्मित वस्तुओं की पहुँच के कारण भारतीय बुनकर, सूती वस्त्र बनाने वाले, बढ़ई, लोहार, मोची आदि सभी दस्तकार एवं शिल्पकार बेरोजगार हो गए। ब्रिटेन के मशीन निर्मित सस्ते माल ने भारतीय बाजारों पर अधिकार कर लिया। परिणामस्वरूप देशी कारीगरों की प्रत्येक श्रेणी भिखमंगों की स्थिति में पहुँच गई।

प्रश्न 02 बादशाही सरकार की अधीनता में कारीगरों की दशा किस प्रकार उन्नत होगी?

उत्तर बादशाही सरकार में देशी कारीगरों एवं शिल्पकारों को अमीरों की सेवा में नियुक्त किया जायेगी। इससे उनकी उन्नति होगी।

प्रश्न 03 सरकारी सेवा में नियुक्त लोग ब्रिटिश सरकार से क्यों असन्तुष्ट थे?

उत्तर ब्रिटिश सरकार के अधीन प्रशासनिक एवं सैनिक सेवाओं में भर्ती होने वाले भारतीय लोगों को सम्मान नहीं मिलता। उनका वेतन कम होता है और उनके पास कोई शक्ति नहीं होती थी। प्रशासनिक एवं सैनिक दोनों सेवाओं में प्रतिष्ठा और धन वाले सारे पद केवल अंग्रेजों को ही दिये जाते थे। इसलिए सरकारी सेवा में नियुक्त भारतीय ब्रिटिश सरकार से असन्तुष्ट थे।

प्रश्न 04 विद्रोही घोषणा में बार–बार किस बात के लिए अपील की गई?

उत्तर विद्रोही घोषणा में बार–बार इस बात के लिए अपील की गई कि भारतीयों को अपने मजहब और हितों की ओर ध्यान देना चाहिए तथा अंग्रेजों के प्रति अपनी वफादारी को छोड़कर बादशाही सरकार का साथ देना चाहिए।

पाठ – 12
औपनिवेशिक शहर
नगरीकरण, नगर–योजना, स्थापत्य

महत्वपूर्ण बिन्दु

स्रोतः– 1. ईस्ट इंडिया कंपनी के रिकार्ड
2. जनगणना रिपोर्ट
3. नगरपालिकाओं के रिर्पोट

- 1900 – 1940 तक नगरीय जनसंख्या 10 प्रतिशत से बढ़कर 13 प्रतिशत हो गई ।
- 18वी शताब्दी के अंत तक मद्रास, बम्बई तथा कलकत्ता महत्वपूर्ण बदंरगाह नगर के रूप मे विकसित हो चुके थे ।
- यातायात के नए साधनों जैसें ट्राम, बसे, घोड़ गाड़ियॉ इत्यादि ने लोगों को अपने घरों से दूर काम करने के स्थान पर जाना संभव बना दिया ।
- कई भारतीय शासको ने यूरोपीय भवन निर्माण शैली को आधुनिकता तथा सम्यता का प्रतीक माना तथा इस शैली के भवन बनवाकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने का प्रयास किया ।
- स्थानीय लोगों की बस्तियों को " ब्लैक टाऊन" कहां जाता था । अग्रेजो की बस्तियों को ब्लैक टाऊन से अलग रखने के लिए बीच में दीवार बनाई गई थी ।
- पेठ एक तमिल शब्द है जिसका मतलब होता है बस्ती, जबकि पुरम शब्द गाँव के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

प्रश्न 1 औपनिवेशिक संदर्भ में शहरीकरण के रुझानों को समझने के लिए जनगणना संबंधी आंकड़े किस हद तक उपयोगी होते हैं ? (2)

उत्तर औपनिवेशिक संदर्भ में शहरीकरण के रुझान को समझने के लिए जनगणना संबंधी आँकड़े बहुत उपयोगी होते हैं :

(अ) इससे श्वेत और अश्वेत लोगों की कुल जनसंख्या या आबादी को जानने में सहयोग मिलता है।

(ब) श्वेत और अश्वेत टाऊन के निर्माण, विस्तार और उनके जीवन संबंधी स्तर, भयंकर बीमारियों के जनसंख्या पर पड़े दुष्प्रभाव आदि को जानने में भी जनगणना संबंधी आँकडे तुरन्त जानकारी देने वाले पट्टियों का कार्य करते हैं।

(स) जनगणना संबंधी आँकड़े विभिन्न समुदायों, कार्यों, जातियों की जानकारी देते हैं।

प्रश्न 2 ब्रिटिश भाासन के दौरान सिविल लाइन्स क्या थे ? (2)

उत्तर 1857 के विद्रोह के बाद भारत में अंग्रेजों का रवैया विद्रोह की लगातार आशंका से तय होने लगा था। उनको लगता था कि शहरों की और अच्छी तरह हिफाजत करना जरूरी है और अंग्रेजों को देशियों के ख़तरे से दूर, ज्यादा सुरक्षित व पृथक बस्तियों में रहना चाहिए। पुराने कस्बों के इर्द–गिर्द चरागाहों और खेतों को साफ

कर दिया गया। सिविल लाइन्स के नाम से नए शहरी इलाके विकसित किए गए। सिविल लाइन्स में केवल गोरों को बसाया गया।

प्रश्न 3 औपनिवेशिक शहरों में रिकार्ड संभालकर क्यों रखे जाते थे ? (2)

उत्तर 1. जनसंख्या में हुए बदलावों की जानकारी के लिए ।
2. औपनिवेशिक शहरों के विकास कि पुनर्रचना के लिए ।

प्रश्न 4 तीनों औपनिवेशिक शहरों यथा मद्रास, बम्बई और कलकत्ता का एक सामान्य विशेषता लिखे । (2)

उत्तर मद्रास, बम्बई और कलकत्ता तीनों शहरों की बस्तियों में अग्रेंजी ईस्ट इंडिया कम्पनी के व्यापारिक तथा प्रशासनिक कार्यालय स्थापित किये गए थे । तीनों शहरों के पास बंदरगाह विकसित हुए ।

प्रश्न 5 कोई तीन पर्वतीय स्थल के नाम लिखे जिनकी स्थपना अग्रेंजों ने भारत में की थी ।

उत्तर शिमला, दार्जिलिग, माऊंटआबू ।

प्रश्न 6 प्रमुख भारतीय व्यापारियों ने औपनिवे ाक शहरों में खुद को किस तरह स्थापित किया ? (5)

उत्तर प्रमुख भारतीय व्यापारियों ने औपनिवे ाक शहरों अर्थात् मद्रास (चेन्नई), बम्बई (मुंबई) और कलकत्ता (कोलकाता) में कम्पनी के एजेन्ट के रूप में रहना शुरू किया। ये सभी बस्तियाँ व्यापारिक और प्रशासनिक कार्यालयों वाली थी। इसलिए भारतीय व्यापारियों को यह शहर सुविधाजनक लगे। यह तीनों शहर बंदरगाह थे और इनमें सड़के, यातायात, जहाजरानी के साथ–साथ कालांतर में रेलों की सुविधा प्राप्त हो गई। भारतीय ग्रामीण व्यापारी और फेरी वाले शहरों में माल गाँव से खरीदकर भी लाते थे। अनेक भारतीय व्यापारी जब पुराने और मध्यकालीन शहर उजड़ गए तो उन्हें छोड़कर वे इन बड़े शहरों में आ गए। उन्होंने व्यापारिक गतिविधियाँ करने के साथ–साथ उद्योग–धंधे भी गाए। अपनी अतिरिक्त पूँजी इन शहरों में निवेश की। व्यापारिक गतिविधियों के बारे में रखे गए सरकारी रिकार्डो और विस्तृत ब्यौरों से कई प्रकार की जानकारी प्राप्त करते थे। शहरों की समस्याओं के समाधान के लिए नगरपालिकाओं से सहयोग लिया गया। अनेक व्यापारी इन बड़े शहरों के उपनगरीय क्षेत्रों में भी रहने लगे। उन्होंने घोड़ागाड़ी और नए यातायात के साधनों को भी प्रयोग किया। भारतीय व्यापारी कम्पनी के व्यापार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। मुम्बई के रहने वाले व्यापारी, चीन को जाने वाली अफीम के व्यापार में हिस्सेदार थे। उन्होंने मुम्बई की अर्थव्यवस्था को मालवा, राजस्थान और सिंध जैसे अफीम उत्पादक इलाकों से जोड़ने में सहायता दी। कम्पनी के साथ गठजोड़ एक मुनाफे का सौदा था जिससे कालांतर में एक पूँजीपति वर्ग का विकास हुआ। भारतीय व्यापारियों में सभी समुदाय–पारसी, मारवाड़ी, कोंकणी, मुसलमान, गुजराती बनिए, बोहरा, यहूदी आदि शामिल थे।

प्रश्न 7 औपनिवेशिक कलकत्ता में नगर नियोजन पर स्वास्थ्य और सुरक्षा की जरूरतों के प्रभाव का मूल्यांकन कीजिए। ? (5)

उत्तर भारत में उपनिवे ाावाद का सीधा प्रभाव नगर नियोजन पर दृष्टिगोचर होता था। कम्पनी एवं अंग्रेजी सरकार ने भारत के प्रमुख बंदरगाह वाले शहरों को नियोजित ढंग से बसाने का विचार किया। इन शहरों में एक शहर था–कलकत्ता, जो बंगाल सूबे का एक महत्वपूर्ण शहर, अंग्रेजी सत्ता की राजधानी एवं वाणिज्य का केन्द्र था। कलकत्ता शहर के नियोजन का प्रथम चरण लॉर्ड वेलेजली के कार्यकाल मे ंप्रारंभ हुआ।

(अ) **स्वास्थ्य** : स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से बहत सारे बाजारों, घाटों, कब्रिस्तानों और चर्मशोधन इकाइयों को साफ किया गया। इनमें से कुछ को हटा दिया गया। शहर का एक नवीन नक्शा तैयार किया गया। इसमें सड़क के किनारे एवं अन्य अवैध कब्जों को हटाने की सिफारिश की गई। 1817 में हैजा तथा 1896 में प्लेग महामारी ने कलकत्ता को अपनी चपेट में ले लिया। चिकित्सक इसकी ठोस वजह नहीं बता पाए, किंतु 'जनस्वास्थ्य' की अवधारणा को बल मिला। सरकार एवं जागरूक नागरिक (द्वारकानाथ टैगोर एवं रूस्तम जी कोवासजी) यह मानने लगे कि शहर को स्वास्थ्यवर्धक बनाना आवश्यक है। अत5 घनी आबादी वाली बस्ती तथा झोपड़ियों को हटाया गया। स्वास्थ्य के आधार पर व्हाइट एवं ब्लैक टाउन जैसे नस्ली विभाजन हुए।

(ब) **सुरक्षा** : कलकत्ता शहर के नियोजन का भार सरकार ने अपने ऊपर इसलिए लिया, क्योंकि यह शहर सुरक्षा के दृष्टिकोण से संवेदनशील था। 1756 में नवाब सिराजुद्दौला ने कलकत्ता पर हमला किया था तथा कम्पनी को करारी शिकस्त दी थी।

कम्पनी ने 1757 में जब सिराजुद्दौला कोपराजित किया उसके बाद उसने कलकत्ता शहर की किलांबदी शुरू की, ताकि आसानी से कलकत्ता पर हमला न किया जा सके। तीन गाँव सुतानाती, कोलकाता और गोविन्दपुर को मिला कर कलकत्ता शहर बसाया गया। फोर्ट विलियम के आसपास खुली जगह छोड़ी गई, ताकि हमलावरों पर आसानी से गोलीबारी की जा सके।

इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि कलकत्ता शहर के नियोजन में सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का व्यापक प्रभाव था।

प्रश्न 8 भारत में औपनिवेशिक शासन काल में नगरों की क्या स्थिति थी ? (5)

उत्तर

1 ग्रामीण इलाकों के गरीब रोजगार के लिए शहरों की तरफ भाग रहे थे। कई लोग आकर्षक शहरी जीवन के कारण भी नगरों की ओर खिंचे चले आ रह थे ।

2 औपनिवेशिक शासकों ने नियमित रूप से सर्वेक्षण कराए । सॉख्यिकीय ऑकड़े इकट्ठे किए और समय–समय पर शहरों से संबंधित सरकारी रिपोर्ट प्रकाशित की ।

3 मद्रास, बंबई और कलकत्ता के नक्शे पुराने भारतीय शहरों से काफी हद तक अलग थे । भवनों का स्थापत्य कला बदल गया था ।

4 जिन हिल स्टेशनों में चाय और कॉफी के बागान लगाए गए थे, वहॉ बड़ी संख्या में मजदूर आने लगे ।

5 शहरों में औरतों के लिए अनेक अवसर थे । कुछ सुधारकों ने महिलाओं की शिक्षा का समर्थन किया लेकिन रूढ़िवादियों ने इसका विरोध किया । जैसे–जैसे समय बीता सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं की उपस्थिति बढ़ने लगी, नौकरानी और फैक्ट्टरी मजदूर, शिक्षिका, और फिल्म कलाकार के रूप में शहरों के नए व्यवसायों में दाखिल होने लगी ।

प्रश्न 9 भारत में छावनियों के विकास का वर्णन करें । (10)

उत्तर अंग्रेजी साम्राज्य की सुरक्षा के लिए अंग्रेजी सरकार ने महत्वपूर्ण स्थानों पर छावनियों की स्थापना की । उन्होने कई मूल राज्यों की सीमाओं पर राज्य की उथल–पुथल को नियंत्रित करने तथा शासकों की गतिविधियों पर निगरानी रखने के लिए छावनियॉ बनाई । सन् 1765 ईसवीं में लार्ड रोबर्ट क्लाईव ने अपनी सेना रखने के लिए छावनियॅा बनाने की नीति का निर्माण किया । इन छावनियों में ब्रिटिश सेना को रखकर उन्हें सैनिक प्रशिक्षण दिया जाता था और उनमें सैनिक जीवन व्यतीत करने और अनुशासन में रहने की शिक्षा दी जाती थी । उस समय भारत में 62 छावनियॉ थी । भारत में सबसे महत्वपूर्ण छावनियॉ लाहौर, पेशावर, फिरोज़पुर, आगरा, बरेली, जालंधर, झॉसी, नागपुर, मुंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली आदि थी । भटिंडा में स्थापित की गई नई छावनी देश की 62 छावनियों में से सबसे बड़ी छावनी है । छावनियों पर नियंत्रण रखने वाला सबसे बड़ा अधिकारी डायरेक्टर जनरल होता है । यह छावनियों का प्रशासन तथा छावनी के बाहर तथा भीतर की अचल संपत्ति की देख–रेख करता है । प्रत्येक छावनी का प्रशासन एक छावनी बोर्ड चलाता है । छावनी बोर्ड, एक स्वायत्तशासी संस्था होती है और इसके सभी कार्यो पर केंद्रीय रक्षा मंत्रालय का नियंत्रण होता है । छावनियों पर केंटोनमेंट एक्ट, 1924 द्वारा बनाए गए नियम लागू होते है । छावनी बोर्डो में लोगो द्वारा बनाए गए नियम लागू होते है । छावनी बोर्डो में लोंगो द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों के अतिरिक्त कुछ सरकारी मनोनीत सदस्य भी होते है । नगर का स्टेशन कमांडर बोर्ड का प्रधान होता है । केंद्रीय सरकार, प्राथमिक शिक्षा, सड़कों पर रोशनी का प्रबंध तथा सड़कों की मरम्मत का कार्य करती है ।

प्रश्न 10 बम्बई नगर में भवन किन–किन भवन निर्माण शैलियों के अनुसार बनाए गए ? (10)

उत्तर बम्बई शहर में दिखने वाले विभिन्न औपनिवेशिक भवन निर्माण शैली

(क) नवशास्त्रीय या नियोक्लासिकल शैली

बड़े–बड़े स्तंभों के पीछे रेखागणितीय संरचनाओं का निर्माण इस शैली की विशेषता थी। यह शैली मूल रूप से प्राचीन रोम की भवन निर्माण शैली से निकली थी जिसे यूरोपीय पुनर्जागरण के दौरान पुनर्जीवित, संशोधित और लोकप्रिय किया गया।

1 बम्बई का टाउन हॉल
2 एल्फिस्टन सर्कल या हॉर्निमान सर्कल

(ख)नव–गॉथिक शैली

उॅची उठी हुई छतें, नोकदार मेहराबें और बारीक साज–सज्जा इस शैली की खासियत होती है। गॉथिक शैली का जन्म इमारतों, ख़ासतौर से गिरजों से हुआ था जो मध्यकाल में उत्तरी यूरोप में काफी बनाए गए।

1 सचिवालय,
2 बम्बई विश्वविद्यालय
3 बम्बई उच्च न्यायालय
4 विक्टोरिया टर्मिनस

(ग) इंडो–सारासेनिक शैली

एक नयी मिश्रित स्थापत्य शैली विकसित हुई जिसमें भारतीय और यूरोपीय, दोनों तरह की शैलियों के तत्व थे। इंडो शब्द हिन्दू का संक्षिप्त रूप था जबकि सारासेनिक शब्द का प्रयोग यूरोप के लोग मुसलमानों को संबोधित करने के लिए करते थे।

प्रश्न 11 अनुच्छेद आधारित प्रश्न

निम्नलिखित अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखिएः–

ग्रामीण क्षेत्राों की ओर पलायन

1857 में ब्रिटिश सेना द्वारा शहर पर अधिकार करने के बाद दिल्ली के लोगों ने क्या किया, इसका वर्णन प्रसिद्ध शायर मिर्जा ग़ालिब इस पकार करते है : दुश्मन को पराजित करने और भगा देने के बाद, विजेताओं (ब्रिटिश) ने सभी दिशाओं से शहर को उजाड़ दिया। जो सड़क पर मिले उन्हें काट दिया गया...। दो से तीन दिनों तक कश्मीरी गेट से चाँदनी चौक तक शहर की हर सड़क युद्धभूमि बनी रही। तीन द्वार – अजमेरी, तुर्कमान तथा दिल्ली अभी भी विद्रोहियों के कब्जे में थे...। इस प्रतिशोधी आक्रोश तथा घृणा के नंगे नाच से लोगों के चेहरों का रंग उड़ गया, और बड़ी संख्या में पुरुष और महिलाएँ... इन तीनों द्वारों से हड़बड़ा कर पलायनकरने लगे। शहर के बाहर छोटे गाँवों और देवस्थलों में शरण ले अपनी वापसी के अनुकूल समय का इंतजार करते रहे।

(क) मिर्जा ग़ालिब कौन था ? (1)

उत्तर मिर्जा ग़ालिब एक प्रसिद्ध शायर था ।

(ख) 1857 में दिल्ली में क्या और क्यों हो रहा था ? (2)

उत्तर 1857 के विद्रोह के दौरान दिल्ली पर विद्रोहियो का कब्जा था, परंतु शीघ्र ही उस ब्रिटिश सेना द्वारा कब्जे में कर लिया गया ।

(ग) जब दिल्ली पर ब्रिटिश सेना के द्वारा अधिकार किया जा रहा था, तब कौन से तीन द्वार विद्रोहियों के कब्जे में थे ? (2)

उत्तर तीन द्वार –अजमेरी, तुर्कमान तथा दिल्ली विद्रोहियों के कब्जे में थे।

(घ) ब्रिटिश सेना द्वारा दिल्ली पर अधिकार के दौरान लोगों कि क्या स्थिति थी ? (3)

उत्तर लोगों के चेहरों का रंग उड़ गया था, और बड़ी संख्या में पुरुष और महिलाएँ इन तीनों द्वारों से हड़बड़ा कर पलायनकरने लगे। शहर के बाहर छोटे गाँवों और देवस्थलों में शरण ले अपनी वापसी के अनुकूल समय का इंतजार करते रहे।

पाठ – 13
महात्मा गांधी और राष्ट्रीय आंदोलन
सविनय अवज्ञा और उससे आगे

– गॉधीजी स्वंतत्रता सग्रांम में भाग लेने वाले सभी नेताओं में सर्वाधिक प्रभावशाली और सम्मानित है ।

– मोहनदास करमचंद गॉधी दक्षिण अफ्रीका में दो दशक रहने के बाद जनवरी 1915 में भारत वापस आए ।

– दक्षिण अफ्रीका में गॉधीजी ने पहली बार सत्याग्रह के रूप में जानी गई अंहिसांत्मक विरोध की अपनी विशिष्ठ तकनीक का इस्तेमाल किया और विभिन्न धर्मो के बीच सौहाद्र बढ़ाने का प्रयास किया ।

– गोखले की सलाह से इस भूमि और इसके लोगों को जानने के लिए गॉधीजी ने एक वर्ष की यात्रा की ।

– उनकी पहली महत्वपूर्ण सार्वजनिक उपस्थिति फरवरी 1916 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में के उद्घाटन समारोह में हुई ।

– अपनी भाषण की माध्यम से उन्होंने भारतीय विशिष्ट वर्ग को आडे हाथों लिया और लाखों गरीब भारतीयो का समर्थन किया ।

– उन्होंने सफलता पूर्वक 1917 में चम्पारण सत्याग्रह और 1918 में खेड़ा सत्याग्रह और अहमदाबाद कपडे मिल के मजदूरो का समर्थन किया ।

– 1919 देशभर में रोलेट एक्ट के खिलाफ अभियान, रोलेट सत्याग्रह से गॉधीजी एक सच्चे राष्ट्रीय नेता बने ।

– 1920 जलियॉवाला बाग हत्याकांड के बाद अग्रेंजी शासन के खिलाफ असहयोग आदोंलन, खिलाफत आदोंलन का समर्थन, अग्रेंजो के साथ पूरी तरह असहयोग, स्कूल, कालेज और कचहरियों का बहिष्कार ।

– चौरी चोरा हत्याकांड और आदोंलन वापिस लेना ।

– गॉधीजी एक लोकप्रिय नेता होने के कारण– आम लोगों की तरह वस्त्र पहनते थे, उनकी तरह रहते थे और उनकी तरह ही भाषा बोलते थे ।

– 1924 जेल से रिहा होने के बाद गॉधीजी अपना घ्यान रचनॉत्मक कार्य जैसे, चरखा को लोकप्रिय बनाना, हिन्दू – मुसलमान एकता, छुआछूत को समाप्त करने में लगाया ।

– 1928 साईमन कमी ान, गॉधीजी का राजनीति में पुनः प्रवेश ।

– 1929 लाहोर में काग्रेंस का अधिव ोन, पूर्ण स्वराज्य की मॉग ।

– 1930 दांडी मार्च, नमक कानून का उल्लंघन ।

– देश के विशाल भाग में वन कानून का उल्लंघन, फैक्ट्री कामगरों का हड़ताल, वकीलों का ब्रिटिश अदालतों का बहिष्कार, विद्यार्थियों का सरकारी शिक्षा संस्थानों का बहिष्कार ।

– 1930 गोलमेज सम्मेलन, कांग्रेंस ने बहिष्कार किया ।

– 1931 गॉधी – इर्विन समझौता

– 1935 गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट

– 1937 प्रांतों में चुनाव, 11 में से 8 प्रांतों में कांग्रेंस की सरकारे

– 1939 द्वितीय विश्व युद्व, कांग्रेंसी मंत्रिमंडलों द्वारा इस्तीफा ।

– 1940 मुसलिम लींग के द्वारा प्रथक राष्ट्र की मॉग ।

– 1942 क्रिप्स मिशन की असफलता, भारत छोडों आदोंलन, पूरे भारत में जनआदोंलन ।

– 1946 केबिनेट मिशन, कांग्रेस और मुस्लिम लीग को एक संघीय व्यवस्था पर राजी करने में असफलता, बंगाल बिहार उत्तरप्रदेश और पंजाब में साम्प्रदायिक दंगे

– 1946 लार्ड मांउटबेटन का वायस राय बनना, भारत का विभाजन, औपचारिक सत्ता हस्तातरण, भारत को स्वंतत्रता की प्राप्ति ।

– राजधानी में हो रहे उत्सवों में गॉधीजी की अनुपस्थिति, कलकत्ते में 24 घंटे के उपवास ।

– बंगाल मे शांति स्थापना के लिए अभियान चलाने के बाद गॉधीजी का दिल्ली आंगमन, यहॉ से दंगाग्रस्त पंजाब के जिलों में जाने के बिचार 30 जनवरी 1948 नाथूराम गोडसे द्वारा गॉधीजी को गोली मारकर हत्या कर दी गई ।

अति लघु प्रश्न (02 अंक)

प्रश्नः–1दो प्रमुख नेताओं के नाम लिखिए जिन्होंने विभिन्न देशों के राष्ट्र निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाई ।

उत्तरः– (क)अमेरिका में जार्ज वाशिंगटन (ब) भारत में महात्मा गॉधी

प्रश्नः–2 लाल – बाल – पाल कौन थे ?

उत्तरः–(क) ये आंरभिक उग्र राष्ट्रवादी नेता थे, जिन्होंने अखिल भारतीय स्तर पर राष्ट्रवादी आंदोलन चलाया । (ब) लाल – लाला लाजपत राय, बाल – बाल गंगाधर तिलक पाल विपिन्न चन्द्र पाल

प्रश्नः–3 गॉधीजी द्वारा भारत में किसानों और मजदूरो के लिए चलाए गए दो आंदोलन के नाम लिखिए ।

उत्त्रः– (क) चम्पारण सत्याग्रह – 1917 (नील किसानों के लिए) (ब) अहमदाबाद मिल मजदूर आंदोलन (1918)

प्रश्नः–4 बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में गॉधीजी के भाषण का महत्व बताइए ?

उत्तरः– (क) गॉधीजी ने मजदूर गरीबों की ओर ध्यान न देने के कारण भारतीय विशिष्ट वर्ग को आड़े हाथों लिया (ब) धनी और गरीबो के बीच की विषमता पर उन्होंने चिन्ता प्रकट की, उनके अनुसार देश की मुक्ति केवल किसानो के माध्यम से ही हो सकती हैं।

प्रश्नः– 5 रौलॅट एक्ट क्या है ।

उत्तरः– (क) स्वतंत्रता सग्रांम को कमजोर करने के लिए रौलॅट द्वारा यह कानून बनाया गया था (ब) किसी भी व्यक्ति को बिना जॉच किये कारावास में डाला जा सकता था ।

प्रश्नः– 6 चरखा को राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में क्यों चुना गया था ।

उत्तरः–(क) चरखा स्वावलम्बिता और आत्म सम्मान का प्रतीक है (ब) हजारों बेरोजगार गरीबों को पूरक आमदनी प्रदान करने का साधन ।

प्रश्नः– 7 भारत के राष्ट्रीय आदोंलन मे काग्रेंस की लाहौर अधिवे ान का क्या महत्व था ।

उत्तरः–(क) काग्रेंस ने स्वराज के स्थान पर पूर्ण स्वराज को लक्ष्य बनाया
(ब) 26 जनवरी 1930 को स्वंतत्रता दिवस के रूप में मनाना

प्रश्नः–8 1931 के गॉधी–इर्विन समझौते का उल्लेख कीजिए ?
उत्तरः–(क) सविनय अवज्ञा आदोंलन को स्थगित कर दिया
(ब) इर्विन ने सभी अहिंसक कैदियों को रिहाई की बात मान ली, भारतीयो को नमक बनाने की छूट, गॉधीजी दूसरे गोलमेज सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए राजी ।

प्रश्नः–9 द्वितीय विश्व युद्व के प्रति भारतीय राष्ट्रीय काग्रेंस का दृष्टिकोण क्या था ।

उत्तरः– (क) गॉधीजी और नेहरू दौनों ही हिटलर और नात्सियों के कट्टर आलोचक थे (ब) उन्होंने फैसला लिया कि अगर अग्रेंज युद्व समाप्त होने के बाद भारत को स्वंतत्रता देने पर राजी हो तो काग्रेंस उनके युद्व प्रयासों में सहायता दे सकती है ।

लघु प्रश्न (05) अंक

प्रश्नः– 10 किन कारणों से गॉधीजी ने अंसयोग आदोंलन को चलाया यह आदोंलन क्यों स्थगित करना पड़ा ।

उत्तरः– 1. रौलॅट कानून के विरोध में 2. जलियॉ वाला बाग हत्याकांड के अन्याय का प्रतिकार करना 3. खिलाफत आदोंलन को समर्थन करने के लिए 4. स्वराज्य प्राप्ति के लिए
चौरी – चौरा में हुई हिंसा को देखते हुए गॉधीजी ने असहयोग आदोंलन को स्थगित कर दिया कारण वह अंहिसा के पुजारी थे ।

प्रश्नः–11 दाड़ी मार्च के महत्व को समझाइए ?
उत्तरः–1. ब्रिटि ा भारत के सर्वाधिक घृणित कानूनों में से एक जिसनें नमक के उत्पादन और विक्रय पर राज्य को एकाधिकार दे दिया था का उल्लंघन किया गया था । 2. पहली बार राष्ट्रीय आदोंलन में स्त्रियों ने बढ़ – चढ़ कर भाग लिया 3. देश के विशाल भाग में सरकारी कानूनो का उल्लघंन किया गया 4. अग्रेंजों को अहसास हुआ कि अब उनका राज बहुत दिनों तक नही टिक सकता ।

प्रश्नः–12 पृथक निर्वाचिका की समस्या क्या थी ? इस मुद्दे पर काग्रेंस व दलित वर्गो के बीच क्या मतभेद थे । इस समस्या का क्या समाधान निकाला गया ?

उत्तरः—1. पृथक निर्वाचिका की मॉग दलित वर्ग द्वारा उठाई गई जिसमें वह अपने लिए भी चुनाव क्षेत्रों का आरक्षण चाहते थे । 2. 1931 के दूसरे गोलमेज सम्मेलन में दलित नेता डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने कहां कि काग्रेंस दलितो का प्रतिनिधित्व नही करती 3. उनके अनुसार पृथक निर्वाचिका के द्वारा ही दलितों की आर्थिक सामाजिक दशा को सुधारा जा सकता है । 4. गॉधीजी ने इसका विरोध किया उनका मानना था कि हिन्दु समाज उच्च और दलित वर्ग में बंट जायेगा तथा देश की एकता कमजोर होगी । अंततः पूना समझौते द्वारा काग्रेंस के भीतर ही दलितों को पृथक निर्वाचन क्षेत्र दिये गए तथा पृथक निर्वाचिका की समस्या हल हो गई ।

दीर्घ प्रश्न (10 अंक)

प्रश्नः— 13 गॉधीजी ने किस प्रकार राष्ट्रीय आदोंलन को जन आदोंलन में बदल दिया ?

उत्तरः— 1.सरल, सात्विक जीवन शैली 2. लोगों की भाषा हिन्दी का प्रयोग, 3. चमत्कारी अफवाहे 4. सत्य, अंहिसा, 5.स्वदेशी, बहिष्कार 6. चरखा और खादी को लोकप्रिय बनाना 7. स्त्रियों, दलितों और गरीबों का उद्धार 8. हिन्दू मुस्लिम एकता 9. छुआ — छूत का उन्मूलन 10. समाज के प्रत्येक वर्ग को बराबरी के नजरिये से देखना और सभी को राष्ट्रीय आदोंलन में शामिल करना ।

प्रश्नः—14 ऐसे स्रोतों की व्याख्या कीजिए, जिनसें महात्मा गॉधी के राजनीतिक जीवन तथा भारतीय राष्ट्रीय आदोंलन इतिहास को पुनः सूत्रबद्व कर सकते है ।

उत्तरः— 1. आत्मकथाऍ और जीवनी
2. समकालीन समाचार पत्र
3. सार्वजनिक स्वर
4. निजी लेखन
5. पुलिसकर्मियों तथा अन्य अधिकारियों द्वारा लिखे गए पत्र और रिपोर्ट

प्रश्नः— 15 "गॉधीजी जहॉ भी गए वही उनकी चमत्कारिक शक्तियों की अफवाहे फैली," सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ?

उत्तरः— 1. सात्विक जीवन शैली 2 धोती और चरखा का प्रयोग 3 लोगों की बोलचाल की भाषा हिन्दी का प्रयोग 4. चम्पारन सत्याग्रह 5. असहयोग आदोंलन में उनके द्वारा सत्य एवं अंहिसा का प्रयोग 6. गॉधीजी जहॉ भी गए वही उनकी चमत्कारिक शक्तियों की अफवाहे फैल गई 6. गॉधीजी

के विरोध करने वाले के लिए भंयकर परिणाम की कहानियॉ भी थी।

उदाहरण के लिए आलोचना करने वालो के घर रहस्यात्मक रूप से गिर गए अथवा उनकी फसल चौपट हो गई,

प्रश्नः–16 निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके अंत में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ?

नमक सत्याग्रह क्यों ?
नमक विरोध का प्रतीक क्यों था ? इसके बारे में महात्मा गॉधी ने लिखा है :–

प्रतिदिन प्राप्त होने वाली सूचनाओं से पता चलता है कि कैसें अन्यायपूर्ण तरीके नमक कर को तैयार किया गया है । बिना कर (जो कभी–कभी नमक के मूल्य का चौदह गुना तक होता था) अदा किये गए नमक के प्रयोग को रोकने के लिए सरकार उस नमक को, जिससें वह लाभ पर नहीं बेच पाती थी नष्ट कर देती थी । अतः यह राष्ट्र की अत्याधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता पर कर लगाती है, यह जनता को इसके उत्पादन से रोकती है । और प्रकृति ने जिसे बिना किसी श्रम के उत्पादित किया उसे नष्ट कर देती है । अतः किसी भी वजह से किसी चीज को स्वंय उपयोग न करने देने तथा ऐसे में उस चीज को नष्ट कर देने की इस अन्यायपूर्ण नीति को किसी भी विशेषण द्वारा नहीं बताया जा सकता है । विभिन्न स्त्रोतों से मैं भारत के सभी भागों में इस राष्ट्र सम्पति को बेलगाम ढ़ग से नष्ट किये जाने की कहानियॉ सुन रहा हूॅ । टनों न सही पर कई मन नमक कोकंण तट पर नष्ट कर दिया गया है । दाण्डी से भी इस तरह की बातें पता चली है । जहॉ कही भी ऐसे क्षेत्रों के आसपास रहने वाले लोगों द्वारा अपनी व्यक्तिगत प्रयोग हेतु प्राकृतिक नमक उठा ले जाने की संम्भावना दिखती है । वहॉ तुरंत अधिकारी नियुक्त कर दिये जाते है जिनका एक मात्र कार्य बिनाश करना होता है । इस प्रकार बहुमूल्य राष्ट्रीय सम्पदा को राष्ट्रीय खर्च से ही नष्ट किया जाता है । और लोगों के मुह से नमक छीन लिया जाता है । नमक एकाधिकार एक तरह से चौतरफा अभिशाप है । यह लोगों को बहुमूल्य सुलभ ग्रामउद्योग से बंचित करता है, प्रकृति द्वारा बहुतायत में उत्पादित सम्पदा का यह अतिशय विनाश करता है । इस विनाश का मतलब ही है और अधिक राष्ट्रीय खर्च । चौथा और इस मूर्खता का चरमोत्कर्ष भूखे लोगों से हजार प्रतिशत से अधिक की उगाही है । सामान्य जन की उदासीनता की वजह से ही लम्बें समय से यह कर अस्तित्व में बना रहा है । आज जनता पर्याप्त रूप से जाग चुकी है । अतः इस कर को समाप्त करना होगा । कितनी जल्दी इसे खत्म कर दिया जायेगा यह लोगों की क्षमता पर निर्भर करता है ।

प्रश्नः–1 नमक विरोध का प्रतीक क्यों था ? (2)

उत्तरः– क प्रत्येक भारतीय घर में नमक का प्रयोग अनिवार्य था

ब लेकिन इसके बावजूद भारतीयों को घरेलू प्रयोग के लिए नमक बनाने से रोका गया और उन्हें दुकानों से ऊचे दामों पर खरीदने के लिए बाध्य किया गया

प्रश्नः–2 औपनिवेशिक सरकार के द्वारा नमक को क्यों नष्ट किया जाता था ? (3)

उत्तरः– क अन्यायपूर्ण तरीके से नमक कानून को तैयार किया गया था

ब बिना कर (जो कभी – कभी नमक के मूल्य का चौदह गुना होता था) अदा किये गए नमक के प्रयोग को रोकने के लिए सरकार उस नमक को, जिससे वह लाभ पर नही बेच पाती थी नष्ट कर देती थी ।

प्रश्नः–3 महात्मा गॉधी नमक कर को अन्य करों की तुलना में अधिक दमनात्मक क्यों मानते थे ? (3)

उत्तरः– अ अन्यायपूर्ण तरीके से नमक कानून को तैयार किया गया था
बिना कर (जो कभी – कभी नमक के मूल्य का चौदह गुना होता था) अदा किये गए नमक के प्रयोग को रोकने के लिए सरकार उस नमक को, जिससे वह लाभ पर नही बेच पाती थी नष्ट कर देती थी । ब. प्राकृतिक नमक मिलने वाले क्षेत्र के आसपास व्यक्तिगत प्रयोग के लिए प्राकृतिक नमक उठा ले जाने की सम्भावना दिखने से सरकारी अधिकारी नियुक्त कर दिये जाते थे जिनका एक मात्र कार्य विनाश होता था इस प्रकार बहुमूल्य राष्ट्रीय सम्पदा को राष्ट्रीय खर्चे से नष्ट किया जाता था और लोगों के मुंह से नमक छीन लिया जाता था ।

प्रश्नः– 1 जमीदार समय पर ऋण चुकाने से क्यों चूक जाते थे ?

प्रश्नः– 2 उन पुराने परिवारों का उल्लेख कीजिए, जो राजस्व नही चुका पाते थे

प्रश्नः– 3 पॉचवी रिपोर्ट क्या थी ?

उत्तरः– 1. (क)राजस्व की रकम अत्यधिक थी ।

(ख) 1790 में राजस्व की रकम में वृद्वि होने से इसका खराब प्रभाव कृषि उत्पादन पर पड़ा । किसान समय पर कर नही दे सके अतः जमीदार भी राजस्व नहीं चुका पाते थे ।

(स) उत्पादन हमेशा समान रूप से नहीं होता था इसलिए भू–राजस्व एक समान नही था, परन्तु भू–राजस्व नियमित रूप से देना पड़ता था

उत्तरः– 2. कुछ बाकीदार पुराने परिवार थेः नदिया, राजशाही, विशनपुर आदि । ये सभी बंगाल जिले से सबंधित थे ।

उत्तरः– 3. पॉचवी रिपोर्ट सन् 1813 में ब्रिटिश संसद में पेश की गई थी । जो भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रशासन में तथा क्रियाकलापो के बारे में तैयार की गई थी । यह रिपोर्ट 1,002 पृष्ठों में थी । 800 से अधिक पृष्ठों में जमीदारों और रैयतों की अर्जियॉ भिन्न – भिन्न जिलों के कलेक्टरों की रिपोटे राजस्व विवरण से सबंधित सांख्यिकीय तालिकाऍ और अधिकारियों द्वारा बंगाल और मद्रास के राजस्व तथा न्यायिक प्रशासन पर लिखित टिप्पणियॉ शामिल की गई थी ।

पाठ – 14
विभाजन को समझना

1. बंटवारे के कुछ अनुभव
   – बयानों द्वारा बंटवारे को अनुभव बयानकर्ता पाकिस्तानी शोधकर्ता भारतीय

2. ऐतिहासिक मोह

2.1 बंटवारा या महाध्वस
   – बंटवारे से हिंदू मुस्लिम दिलों को बांटना
   – हिंदू मुस्लिम दंगों की भरमार
   – नस्ली सझाया

2.2 रूढ़ छवियों की ताकत
   – भारत में पाकिस्तान और पाकिस्तान में भारतीय से नफरत का सिलसिला
   – एक–दूसरे पर छींटाकसी
   – गलत स्मृतियों, घृणाक्त, छवियों का दौर
   – सांप्रदायिक संशय और अविश्वास

3. विभाजन क्यों और केसे हुआ

3.1 एक लंबे इतिहास का अंतिम चरण
   – मुस्लिम लीग की स्थापना
   – लखनऊ समझौता 1916
   – आर्य समाज की स्थापना
   – हिंदू महासभा का सक्रिय होना

3.2 1937 में प्रतिक चुनाव और कांग्रेसी मंगल्य
   – हिंदू और मुस्लिम नेताओं की नासमझी

3.3 पाकिस्तान का प्रस्ताव
   – 1940 में मुस्लिम लीग की सुगसुगाहट
   – मुहम्मद अली जिन्ना की भूमिका

3.4 विभाजन का अचानक हो जाना
   – 1940 का मुस्लिम लीग का प्रस्ताव
   – चौधरी रहमत अली, सिकन्दर हयातखान, मुहम्मद इकबाल और जिन्ना के प्रयास

3.5 युद्धोत्तर घटनाक्रम
   – 1946 में दुबारा प्रांतीय चुनाव
   – 1946 में मुस्लिम मतदाताओं के बीच मुस्लिम लीग लोकप्रिय पार्टी

3.6 विभाजन का एक संभावित विकल्प
   – केबिनेट मिशन की स्थापना
   – केबिनेट मिशन की असफलता
   – सीमांत गाँधी की भूमिका – विभाजन के कट्टर विरोधी

3.7 विभाजन की ओर
   – प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस 1946
   – मुख्य शहरों में दंगों का भड़कना

4. कानून व्यवस्था नाश
– दंगों के दौरान हिंसा और आगजनी की घटनाएँ
– कानून व्यवस्था का चरमराना

4.1 महात्मा गाँधी – एक अकेली फैज़
– नौआखली का दंगा
– महात्मा गाँधी द्वारा हृदय परिवर्तन पर जोर

5. बंटवारे में औरतें

5.1 औरतों की बरामदगी
– औरतों के साथ बदसलूकी

5.2 इज्जत की रक्षा
– औरतों की अस्मिता की रक्षा
– अनेक औरतों द्वारा आत्महत्या

6. क्षेत्रीय विविधताएँ
– विभिन्न क्षेत्रों की विभिन्न समस्याएँ
– हिंदू मुस्लिम परिवारों का पलायन

7. मदद मानवता और सद्भावना

8. मौखिक गवाही और इतिहास
– बंटवारे से जुड़ी घटनाओं का सही विवरण
– साहित्यकारों और कलाकारों द्वारा बंटवारे की पीड़ा का वर्णन
– सरकारी दस्तावेजों को भी आधार बनाना

3.3 हमें हजारों सालों तक दबाया गया
– दलित जातियों के अधिकारों की समस्या

4. राज्य की शक्तियाँ
– संघवाद की ओर
– शक्तियों का विभाजन
– सूचियों का निर्माण

4.1 केंद्र बिखर जाएगा
– बहुमत शक्तिशाली केंद्र के पक्ष में

4.2 आज हमें एक शक्तिशाली सरकार की आवश्यकता है
– एक शक्तिशाली केंद्र समय की मांग

5. राष्ट्र की भाषा
– हिंदी और तमिल आमने–सामने
– हिन्दुस्तानी हिंदी राजभाषा

5.1 हिंदी की हिमायत
– हिंदी राजभाषा बनी

5.2 वर्चस्व का भय
– दक्षिण में हिंदी का कड़ा विरोध
– चर्चाओं का दौर शुरू
– हिंदी राजभाषा के रूप में स्वीकार्य

प्रश्न 1. महाध्वंश से क्या तात्पर्य है। 2

उत्तर :– इसका अर्थ है सामूहिक जनसंहार। नाजी शासन के समय जर्मनी मे सरकारी निकायों द्वारा किया गया था।

प्रश्न 2. लखनऊ समझौता क्या था ? 2

उत्तर :– 1916 में लखनऊ में कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के बीच आपसी ताल मेल को लखनऊ समझौता कहा जाता है। यह एक संयुक्त राजनीतिक मंच था।

प्रश्न 3. द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रति भारतीय राश्ट्रीय कांग्रेस का क्या द्रश्टिकोण था ? 2

उत्तर :–. कांग्रेस इस शर्त पर ब्रिटेन की युद्ध में सहायता करने के लिए तैयार थी कि वह युद्ध के बाद भारत को स्वतंत्र कर देने का स्पश्ट घोशणा करे।

प्रश्न 4. भारतीय राश्ट्रीय कांग्रेस ने विभाजन को क्यो स्वीकार किया ? 2

उत्तर :–. क. देश के अनेक प्रांतो में दंगे होने लगे।

ख. चुनावो में मुस्लिम लीग की सफलता।

प्रश्न 5. जिन्ना का द्वि. राश्ट्र सिद्धान्त क्या था ? 2

उत्तर :– जिन्ना ने हिन्दु तथा मुस्लिमों को दो अलग अलग समुदाय बताया।

दोनो समुदाय साथ साथ नहीं रह सकते। उन्हे अलग अलग दो देशो में रहना चाहिए।

प्रश्न 6. 1937 के प्रांतीय चुनाव में संयुक्त प्रांत में सरकार गठन की घटना ने किस प्रकार भारत में मुस्लिम साम्प्रदायिक्ता को बढ़ाया ? 5

उत्तर :– (1) 1937 के प्रांतीय चुनाव में कांग्रेस को पूरा समर्थन मिला।

(2) मुस्लिम लीग भी सरकार में शामिल हेाना चाहती थी। कांग्रेस ने मुस्लिम लीग के प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

(3) मुस्लिम लीग को महसूस हुआ कि वे कभी सरकार नही बना पाएगी।

(4) राजनीतिक सत्ता प्राप्ति के लिए उन्हे भारत का बटवारा एक विकल्प दिखाई देने लगा।

(5) वे स्वयं को भारत के सभी मुस्लमानों की पार्टी तथा कांग्रेस का हिन्दुओं को पार्टी के रूप में प्रचारित करने लगे।

प्रश्न 7:– ब्रिटिश भारत का विभाजन क्यों किया गया ? 5

उत्तर :– 1) अंग्रेजो की फूट डालो व राज्य करो की नीति ।

2) मुस्लिम लीग का दुरूप्रचार कि वे ही मुस्लमानों की एक मात्र प्रतिनिधि है।

3) देसी रियासतों का विभाजन के पक्ष में होना।

4) सांप्रदायिक दगों का होना।

5) मुस्लिम लीग द्वारा 1946 में प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस मनाकर विभाजन की मांग को मजबूत करना।

प्रश्न 8. मौखिक इतिहास की अच्छाइयां तथा कमियों बताइए ? 5

उत्तर :– 1) यह अनुभवो तथा स्मृतियों को समझने का मौका देता है।

2) बंटवारे जैसी घटनाओं का सजीव तथा बहुरंगी वृतांत लिखने का अवसर देता है।

3) मौखिक इतिहास समाज के गरीब व कमजोर लोगों के अनुभवों व भावनाओं का महव्त देता है।

4) मौखिक जानकारियां सटीक नही होती है।

5) निजी अनुभवों के आधार पर सामान्यीकरण करना उचित नही है।

प्रश्न :– 9 भारत विभाजन के परिणाम स्वरूप महिलाओं पर होने वाले प्रभावों की विवेचना कीजिए। 5

उत्तर :– 1) औरतों के अनुभव भयावह तथा दुखदः थे। उनके साथ बलात्कार, लूट, अपहरण की घटनाएं हुई।

2) महिलाओं को बार–बार खरीदा और बेचा गया ।

3) महिलाओं को अजनबियों के साथ जिंदगी बिताने के लिए मजबूर किया गया ।

4) सरकार महिलाओं के प्रति असंवेदनशील रहीं।

5) महिलाओं को अपनी भावनाए प्रकट करने नही दिया गया।

6) महिलाओं की इज्जत की रक्षा के नाम पर उन्हे मार डाला गया।

7) बदला लेने की भावना से दूसरे समुदाय की महिलाओं की बेइज्जती की गई।

8) दंगें के बाद वापस लौटने पर महिलाओं को उनके परिवारों ने स्वीकार नही किया।

9) सिख उनकी मौत को आत्महत्या नहीं अपितु शहादत का दर्जा देते है।अतः उनकी स्मृति में प्रत्येक वर्ष 13 मार्च को दिल्ली के एक गुरूद्वारे मे एक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है।

10) एक बार फिर अपनी जिंदगी के बारे में फैसला लेने के उनके अधिकार को नजरअंदाज कर दिया गया ।

प्रश्न 10. निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यानपूर्वक पढ़ो तथा उसके बाद पुछे गए प्रश्नो का उत्तर दीजिए। 8

एक गोली भी नही चलाई गई

मून ने जो लिखा :–

24 घंटे से भी ज्यादा वक्त दगाई भीड को इस विशाल व्यावसायिक शहर में बेरोक टोक तबाही फैलाने दी गई। बेहतरीन बाजारों को जलाकर राख कर दिया गया जबकि उपद्रव फैलाने वालों के उपर एक गोली भी नही चलाई गई।

जिला मजिस्ट्रेट ने अपने (विशाल पुलिस बल को शहर में मार्च का आदेश दिया और उसका कोई सार्थक इस्तेमाल किए बिना वापस बुला लिया)

1) यह स्त्रोत किस घटना की ओर संकेत करता है ? उपदवियों की भीड़ क्या कर रही थी? 2

2) आगे चलकर 1947 में अमृतसर रक्तपात का नजारा क्यों बना ? 2

3) उत्तेजित भीड़ के प्रति फौज और पुलिस का क्या रूख था ? 2

4) गांधी जी ने सांप्रदायिक सौर्हाद बढ़ाने के लिए कैसे प्रयत्न किया ? 2

उत्तर :– (1) यह भारत विभाजन के समय की एक घटना है।

(2) दंगा करने वाली भीड़ ने बाजारों को जला दिया तथा दुकानो का लूट लिया। प्रशासन का शहर पर कोई नियन्त्रण नही था।

(3) उत्तेजित भीड़ को रोकने का प्रयास नही किया गया। सेना व पुलिस भी अपने सम्प्रदाय के लोगों की मदद कर रही थी। पुलिस दूसरे संप्रदाय पर हमला भी कर रही थी।

(4) गांधीजी ने हिन्दुओं व मुस्लमानों को दूसरे का साथ देने तथा भरोसा रखने के लिए समझाया।

विषय 15 संविधान का निर्माण
महत्वपूर्ण बिंदु

— नेहरू जी का उद्देश्य प्रस्ताव, महत्व

– संविधान निर्माण के पूर्व तात्कालिक समस्यायें – राजनैतिक ऐकीकरण, सांप्रदायिक दंगे, आर्थिक संसांधनों की कमी, विस्थापितों की समस्या – संविधान निर्माण की चुनौती

– संविधान निर्माण – संविधान सभा का गठन अक्टूबर 1946 में कैबिनेट मिशन योजना के अनुसार किया गया

– संविधान सभा में चर्चा – जनमत का प्रभाव, नागरिकों के अधिकारो का निर्धारण, अल्पसंख्यों और दमितों के अधिकारों का प्रशन ।

– राष्ट्रभाषा, भाषा विवाद, गॉधीजी के राष्ट्रभाषा सबंधी विचार, हिन्दी का समर्थन

– संविधान की विशेषताएँ – लिखित एवं विशाल संविधान, केन्द्र – राज्य शक्ति विभाजन, स्वतंत्र न्यायपालिका, धर्मनिर्पेक्षता, संसदीय प्रणाली, शक्तिशाली केन्द्र, वयस्क मताधिकार, मौलिक अधिकार

(02 अंको वाले प्रश्न)

प्रश्नः–1.संविधान सभा का गठन कब और किस योजना के अनुसार किया गया ?

उत्तरः– संविधान सभा का गठन अक्टूबर 1946 ई. में कैबिनेट मिशन योजना के अनुसार किया गया।

प्रश्नः– 2.अखिल भारतीय राज्य जन कान्फ्रेंस का अधिवेशन प्रथम बार कब और किसकी अध्यक्षता में हुआ ?

उत्तरः– अखिल भारतीय राज्य जन कान्फ्रेंस का प्रथम अधिवेशन 1927 ई. में । एलौर के प्रसिद्ध नेता दीवान वहादुर एम.रामचन्द्र राय की अध्यक्षता में हुआ।

प्रश्नः–3.संविधान सभा की प्रथम बैठक कब और किसकी अध्यक्षता में हुई ?

उत्तरः– संविधान सभा की प्रथम बैठक 9 दिसम्बर 1946 ई. को सच्चिदानन्द सिन्हा की अध्यक्षता में हुई।

प्रश्नः–4. प्रारूप समिति का गठन कब किया गया? इसके अध्यक्ष कौन थे?

उत्तरः– प्रारूप समिति का गठन 29 अगस्त, 1947 ई. को किया गया। इसके अध्यक्ष डॉ.बी.आर. अम्बेडकर थे।

प्रश्नः– 5.भारतीय संविधान के दो अवसाद कौन से थे ?

उत्त्रः–1. भारतीय संविधान का मौखिक रूप से अंग्रेजी में होना।

2. किसी भी पद पर खड़े होने के लिए कोई शैक्षणिक योग्यता आवश्यक न होना।

(5 अंको वाले प्रश्न)

प्रश्नः—6.महात्मा गांधी क्यों चाहते थे कि हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा होनी चाहिए?

उत्तरः—1.इसे आसानी से समझा व बोला जा सकता है।

2.इसे भारतीय लोग ज्यादा प्रयोग में लाते थे।

3.यह हिन्दू व उर्दू के मेल से बनी थी।

4.यह बहुसांस्कृतिक भाषा थी।

5.इसमें समय के साथ दूसरी भाषाओं के शब्द शामिल होते गए।

प्रश्नः— 7.हैदराबाद को भारतीय संघ का अंग किस प्रकार बनाया गया?

उत्तरः—1.यह रियासत में लगभग 90 प्रतिशत जनता हिन्दू थी।

2.शासक मुसलमान होता था।

3.हैदराबाद का निज़ाम अपनी रियासत को स्वतंत्र रखना चाहता था।

4.भारत सरकार ने निज़ाम के विरूद्ध सैनिक कार्यवाही करने का निर्णय लिया।

5.चार दिन के संघर्ष के बाद 17 सितम्बर, 1948 ई.को निज़ाम ने आत्मसमर्पण कर दिया और भारतीय संघ में सम्मिलित होना स्वीकार कर लिया।

प्रश्नः— 8.विभिन्न समूहों द्वारा 'अल्पसंख्यक' शब्द को किस प्रकार परिभाषित किया गया?

उत्तरः— 1.कुछ लोग आदिवासियों को मैदानी लोगों से अलग देखकर आदिवासियों को अलग आरक्षण देना चाहते थे।

2.अन्य प्रकार के लोग दमित वर्ग के लोगों को हिन्दूओं से अलग करके देख रहे थे और वह उनके लिए अधिक स्थानों का आरक्षण चाहते थे।

3.कुछ विद्वान मुसलमानों को ही अल्पसंख्यक कह रहे थे।

4.सिक्ख लोग के कुछ सदस्य सिक्ख धर्म में अनुयायियों को अल्पसंख्यक का दर्जा देने और अल्पसंख्यकों को सुविधायें देने की मांग कर रहे थे।

प्रश्नः—9. उद्देश्य प्रस्ताव' में किन आदर्शो पर जोर दिया गया था?

उत्तरः—1. प्रभुता सम्पन्न स्वतंत्र भारत की स्थापना और उसके सभी भागों और सरकार के अंगो को सभी प्रकार की शक्ति और अधिकार जनता से प्राप्त होना।

2. भारत के सभी लोगों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, पद, अवसर और कानून के समक्ष समानता, कानून और सार्वजनिक नैतिकता के अंतर्गत विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, निष्ठा, पूजा, व्यवसाय, संगठन और कार्य की स्वतंत्रता की गारंटी देना।

3.अल्पसंख्यकों, पिछड़े और जनजाति वाले क्षेत्रों, दलित और अन्य वर्गो के लिए सुरक्षा के समुचित उपाय करना।

प्रश्नः— 10. वे कौन सी ऐतिहासिक ताकतें थीं जिन्होंने संविधान का स्वरूप तय किया ?

उत्तरः—1. संविधान का स्वरूप तय करने वाली प्रथम ऐतिहासिक ताकत भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस थी।

2. मुस्लिम लीग ने देश के विभाजन को बढ़ावा दिया।

3. उदारवादी मुसलमान राजनैतिक दलों से जुड़े रहे, उन्होंने भी भारत को धर्म निरपेक्ष बनाए रखने में संविधान के माध्यम से आश्वस्त किया।

4 दलित और हरिजनों के समर्थक नेताओं ने संविधान को कमजोर वर्गो के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समानता और न्याय दिलाने वाला आरक्षण की

व्यवस्था करने वाला, छुआछूत का उन्मूलन करने वाला स्वरूप प्रदान करने में योगदान दिया।

5. एन.जी.रांगा और जयपाल सिंह जैसे आदिवासी नेताओं ने संविधान का स्वरूप तय करते समय इस बात की ओर ध्यान देने के लिए जोर दिया कि उनके समाज का गैर मूलवासियों द्वारा शोषण हुआ है।

प्रश्नः— 11. संविधान सभा के कुछ सदस्यों ने उस समय की राजनीतिक परिस्थिति और एक मजबूत केन्द्र सरकार की जरूरत के बीच क्या संबंध देखा?

उत्तर 1. प्रारंभ में सन्तनम जैसे सदस्यों ने केन्द्र के साथ राज्यों को भी मजबूत करने की बात कहीं।

2. ड्राफ्ट कमेटी के चेयरमेन डॉ. बी.आर.अम्बेडकर ने पहले ही घोषणा की थी कि वे एक शक्तिशाली और एकीकृत केन्द्र 1935 के इण्डिया एक्ट के समान देश में एक शक्तिशाली केन्द्र की स्थापना करना चाहते हैं।

3. 1946 और 1947 में देश के विभिन्न भागों में सांप्रदायिक दंगे और हिंसा के दृश्य दिखाई दे रहे थे।

4. संयुक्त प्रांत के एक सदस्य बालकृष्ण शर्मा ने इस बात पर जोर दिया की केन्द्र का शक्तिशाली होना जरूरी है।

5. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस देश के विभाजन के पूर्व इस बात से सहमत थी कि प्रांतों को पर्याप्त स्वायत्तता दी जायेगी।

6. भारत में आरोपित औपनिवेशिक शासन व्यवस्था चल रही थी। इस दौरान उनके घटित घटनाओं से केंद्रवाद की भावना को बढ़ावा मिला।

(10 अंको वाले प्रश्न)

प्रश्नः—12. संविधान सभा ने भाषा के विवाद को हल करने के लिए क्या रास्ता निकाला ?

उत्तरः—1. 1930 के बाद कांग्रेस ने यह स्वीकार कर लिया था कि हिन्दुस्तानी को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिया जाए।

2. गॉधी जी का मानना था कि हिन्दु और उर्दू के मेल से बनी हिंदुस्तानी भारतीय जनता के बहुत बड़े भाग की भाषा थी और यह विविध संस्कृतियों के आदान–प्रदान से समृद्ध हुई एक साझी भाषा थी।

3. कांग्रेस सदस्य आर.वी.धुलेकर ने इस बात का समर्थन किया की संविधान निर्माण की भाषा हिन्दी होनी चाहिए।

4. कई लोगों ने धुलेकर की बात का विरोध किया। इसके बाद तेज बहस शुरू हो गई।

5. विरोधियों का यह मानना था कि हिन्दी के लिए हो रहा यह प्रचार प्रांतीय भाषाओं की जड़े खोदने का प्रचार है।

6 .समिति ने राष्ट्रीय भाषा के सवाल पर सुझाव दिया कि देवनागरी लिपि में लिखी गई हिन्दी भारत की राजकीय भाषा होगी।

7. सभी सदस्यों ने हिन्दी की हिमायत को स्वीकार किया लेकिन इसके वर्चस्व अस्वीकार कर दिया।

8. मद्रास के श्री टी ए रामलिंगम चेट्टियार ने इस बात पर बल दिया कि जो कुछ भी किया जाय सावधानीपूर्वक किया जाय, यदि आक्रामक होकर किया गया तो हिन्दी का भला नहीं हो पायेगा ।

9. श्री चेट्टियार के अनुसार ''जब हम एक साथ रहना चाहते है और एकीकृत राष्ट्र की स्थापना करना चाहते है तो परस्पर समायोजन होना आवश्यक है।''

10. आगे चलकर देश की सभी भाषाओं को सूचीबद्ध किया गया।

प्रश्नः—13. दमित समूहों की सुरक्षा के पक्ष में किए गए विभिन्न दावों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर 1. संविधान सभा में आसीन दमित जातियों के कुछ प्रतिनिधि सदस्यों का आग्रह था कि अस्पृश्यों की समस्या को केवल संरक्षण और बचाव से हल नहीं किया जा सकता।

2. हरिजन संख्या की दृष्टि से अल्पसंख्यक नहीं है। आबादी में उनका हिस्सा 20—25 प्रतिशत है।

3. प्रारंभ में डॉ. अंबेडकर ने अल्पसंख्यकों के लिए पृथक निर्वाचन की मांग की। परंतु बाद में छोड़ दी।

4. मध्य प्रांत के दमित जातियों के एक प्रतिनिधि श्री के.जे.खाण्डेलकर ने संविधान सभा को कहा कि उनके लोगों के समुदायों के लोगों को हजारों वर्षो तक दबाया गया है।

5. अस्पृश्यता का उन्मूलन किया जाय ।

6. हिन्दू मंदिरों को सभी जातियों के लिए खोल दिया जाय।

7. दमित वर्गों को विधायिकों और सरकारी नौकरियों में आरक्षण दिया जाय।

8. इसके लिए समाज की सोच में बदलाव लाना भी आवश्यक है।

9. सार्वजनिक स्थलों पर उनके साथ भेदभाव न किया जाय।

10. यद्यपि समस्यायें एकदम हल नहीं होगी, लेकिन लोकतांत्रिक जनता ने इन प्रावधानों का स्वागत किया है।

अनुच्छेद पर आधारित प्रश्न

"गोविन्द वल्लभ पन्त का विचार था कि समुदाय और खुद को बीच में रखकर सोचने की आदत को छोड़कर ही निष्ठावान नागरिक बना जा सकता था। उनके शब्दों में—"लोकतन्त्र की सफलता के लिए व्यक्ति को आत्यानुशासन की कला का प्रशिक्षण लेना होगा। लोकतन्त्र में व्यक्ति को अपने लिए कम तथा औरों के लिए अधिक चिन्ता करनी चाहिए। यहॉ खंडित निष्ठा के लिए कोई जगह नहीं है। सारी निष्ठाएँ केवल राज्य पर केन्द्रित होनी चाहिए। यदि किसी लोकतन्त्र में आप प्रतिस्पर्थी निष्ठाएँ रख देते हैं या ऐसी व्यवस्था खड़ी कर देते हैं, जिसमें कोई व्यक्ति या समूह अपने अपव्यय पर अंकुश लगाने की अपेक्षा वृहत्तर अथवा अन्य हितों की जरा भी परवाह नहीं करता, तो ऐसे लोकतन्त्र का डूबना निश्चित है।"

प्रश्नः— 1 पृथक निर्वाचिका से आप क्या समझते हैं? 2

उत्तरः—पृथक निर्वाचिका का तात्पर्य हैं 'पृथक निर्वाचन क्षेत्र।' 1909 ई. के अधिनियम के अन्तर्गत मुसलमानों के लिए पृथक चुनाव क्षेत्रों की व्यवस्था की गई थी। इन क्षेत्रों से केवल मुसलमान ही चुने जाते थे। ब्रिटिश प्रशासकों के अनुसार ऐसा अल्पसंख्यक मुस्लिम सम्प्रदाय के हितों की दृष्टि से किया गया है।

प्रश्नः— 2 संविधान निर्माण के समय पृथक निर्वाचिका की मॉग क्यों की गई? 2

उत्तरः— कुछ लोगों का विचार था कि शासन में अल्पसंख्यकों की एक सार्थक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए पृथक निर्वाचिका के अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं था। अतः उनके द्वारा संविधान निर्माण के समय पृथक निर्वाचिका की मॉग की गई।

प्रश्नः–3 गोविन्द वल्लभ पंत पृथक् निर्वाचिका की मॉग के विरूद्ध क्यों थे? दो कारण दीजिए। 2

उत्तर 1. गोविन्द वल्लभ पन्त का विचार था किः यदि पृथक निर्वाचिका के द्वारा अल्पसंख्यकों को सदा के लिए अलग–अलग कर दिया गया, तो वे कभी भी स्वयं को बहुसंख्यकों में रूपान्तरित नहीं कर पाऍगे।

2. यदि अल्पसंख्यक पृथक निर्वाचिका से जीतकर आते रहें, तो शासन में कभी प्रभावी योगदान नहीं दे पाऍगे।

प्रश्नः–4 गोविन्द वल्लभ पन्त के अनुसार लोकतन्त्र में निष्ठावान नागरिकों में कौन–से तीन प्रमुख अभिलक्षण होने चाहिए? 2

उत्तरः– 1. उसे अपने लिए कम तथा औरों के लिए अधिक चिन्ता करनी चाहिए।

2. उसकी सारी निष्ठाऍ केवल राज्य पर केंद्रित होनी चाहिए।

3. उसे आत्मानुशासन की कला में प्रशिक्षित होना चाहिए

कक्षा – XII
2012-13
'' इतिहास''

SUBJECT- HISTORY

MARKS: 100
TIME:3 HRS

THEME	VERY SHORT ANSWER (2) MARKS EACH	SHORT ANSWER (5) MARKS EACH	LONG ANSWER (8) MARKS EACH	PASSAGE BASED (8) MARKS EACH	SKILL (5) MARKS EACH	TOTAL MARKS	
1 AND 2	2(1)	5(1)	-	8(1)	5(1)	15	
3 AND 4	-	5(2)	-	-	-	10	25
5 AND 6	-	-	10(1)	8(1)	-	18	
7 AND 8	2(1)	5(1)	-	-	5(1)	07	30
9	-	5(1)	-	-	-	5	
10 AND 11		5(2)	-	-	5(1)	10	
12 AND 13	2(1)		10(1)	-	-	12	35
14 AND 15	-	5(1)	-	8(1)	-	13	
MAP	-	-	-	-	10	10	10
GRAND TOTAL	06	40	20	24	10	100	100

There are two map questions:- one for identification and one for location and labeling

आदर्श प्रश्न पत्र – I

2012-13

कक्षा – XII

" इतिहास"

समयः3 घंटे **पूर्णांक 100**

सामान्य निर्देश :

(1) सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने लिखे है।

(2) 2 अंक वाले प्रत्येक प्रश्न (खण्ड क–प्रश्न सं. 1 से 3) का उत्तर 30 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिये।

(3) 5 अंक वाले प्रत्येक प्रश्न (खण्ड ख–भाग 1,2,3 – प्रश्न सं. 4 से 14) का उत्तर 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिये।

(4) 10 अंक वाले प्रत्येक प्रश्न (खण्ड ग–प्रश्न सं. 15 और 16) का उत्तर 500 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिये।

(5) खण्ड घ के प्रश्न तीन स्त्रोतो पर आधारित है।

(6) मानचित्र अपनी उत्तर – पुस्तिका के साथ संलग्न कीजिये।

खण्ड – क

नीचे दिये प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

1. हड़प्पा की लिपि की कोई दो विशेषताएँ लिखिये। 2
2. मुगल काल में किन फसलों को 'जिन्स–ए–कामिल' माना जाता था। और क्यों ? 2
3. गॉधी जी ने नमक को सत्याग्रह के लिए क्यों चुना ? 2

खण्ड – ख

भाग–1

नीचे दिये प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

4. हड़प्पा नगर योजना की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिये। 5
5. मौर्यों के राजनैतिक इतिहास के मुख्य स्त्रोत क्या–क्या हैं। 5
6. आरंभिक राज्यों में शासक निश्चित रूप से क्षत्रिय नहीं होते थे ? व्याख्या करें? 5
7. सॉची के स्तूप के संरक्षण में भोपाल की बेगमों की भूमिका की चर्चा कीजिये। **5**

भाग–2

नीचे दिये प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

8. विजयनगर के किलेबंध क्षेत्र में कृषि को रखने के आपके विचार में क्या फायदे और नुकसान थे ? 3 + 2 = **5**
9. जमींदार कौन थे ? उनके क्या काम थे? 1 + 4 = **5**
10. मुगल साम्राज्य में शाही परिवार की स्त्रियों द्वारा निभाई गई भूमिका का मूल्यांकन कीजिये ? 5

भाग–2

नीचे दिये प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

11. पहाड़ियॉ लोग उन मैदानों पर जहॉ किसान एक स्थान पर बसकर खेती – बाड़ी करते थे, क्यों आक्रमण करते थे और फिर किस प्रकार जमींदारों को शांति खरीदनी पड़ती थी ? व्याख्या कीजिये ? 3 + 2 = **5**
12. विद्रोहियों के बीच एकता स्थापित करने के लिए क्या तरीके अपनाएँ गए ? 5
13. जवाहर लाल नेहरू द्वारा पेश किए गए ''उद्देश्य प्रस्ताव'' में व्यक्त उन आदर्शों की व्याख्या कीजिये? जिनको भारत के संविधान निर्माण के समय ध्यान में रखा जाना था ? **5**
14. नए औपनिवेशक शहरों में किस प्रकार सामाजिक परिवर्तन हुए, व्याख्या कीजिये ? 5

खण्ड – ग

15. सूफीवाद क्या है ? इनके सिद्धांतों की चर्चा कीजिये ? 2+8=10

अथवा

बाबा गुरू नानक कौन थे ? उनके मुख्य उपदेशों का वर्णन कीजिये ?

16. महात्मा गॉधी ने असहयोग आंदोलन क्यों शुरू किया और इसे वापस क्यों लिया ? 10

अथवा

गॉधीजी ने राष्ट्रीय आन्दोलन को जन आन्दोलन में कैसे बदल दिया ?

खण्ड – घ

(स्त्रोत आधारित प्रश्न)

निम्नलिखित अनुच्छेदों (प्रश्न सं. 19–21) को ध्यानपूर्वक पढ़िये और उनके अंत में पुछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजियेः

17. **''गरीब किसान''**

यहॉ बर्नियर द्वारा ग्रामीण अंचल में कृषकों के विषय में दिये गए विवरण से एक उद्धरण किया जा रहा हैः

हिन्दूस्तान के साम्राज्य के विशाल ग्रामीण अंचलों में से कई केवल रेतीली भूमियों या बंजर पर्वत ही हैं यहॉ की खेती अच्छी नहीं है और इन इलाकों की आबादी भी कम है। यहॉ तक कि कृषि योग्य भूमि का एक बड़ा हिस्सा भी श्रमिकों के अभाव में कृषि विहीन रह जाता हैः इनमें से कई श्रमिक गवर्नर द्वारा किए गए बुरे व्यवहार के फलस्वरूप मर जाते है। गरीब लोग जब अपने लोभी स्वामियों की मांगों को पूरा करने में असमर्थ हो जाते है तो उन्हें न केवल जीवन–निर्वहन के साधनों से वंचित कर दिया जाता है। बल्कि उन्हें अपने बच्चों से भी हाथ धोना पड़ता, जिन्हें दास बनाकर लें जाया जाता है। इस प्रकार ऐसा होता है कि इस अत्यंत निरंकुशता से हताश हो किसान गॉव छोड़कर चले जाते है।

इस उद्धरण में बर्नियर राज्य और समाज से संबंधित यूरोप में प्रचलित तत्कालिन विवादों में भाग ले रहा था और उसका प्रयास था कि मूलकालिन भारत से संबंधित उसका विवरण यूरोप में उन लोगों के लिए एक चेतावनी का कार्य करेगा जो निजी स्वामित्व की 'अच्छाईयों' को स्वीकार नहीं करते थे।

(क) बर्नियर के अनुसार भूमि जोतनें की क्या समस्याएँ थी? 2
(ख) किसान भूमि को छोड़कर क्यों चले गए? 2
(ग) किसानों के शोषण के बारे में बर्नियर द्वारा दिए गए कारणों की व्याख्या कीजिए?

(घ) उसके अनुभवों ने यूरोपीय चिंतकों को कैसे प्रभावित किया ? स्पष्ट कीजिये ? 2

अथवा

''जोगी के प्रति श्रद्धा''

यह उद्धरण 1661–62 में औरंगजेब द्वारा एक जोगी को लिखे पत्र का अंश है:
बुलंद मकाम शिवमूरत गुरू आनंद नाथ जियो !

''जनाब–ए–मुहतरम'' (श्रद्धेय) अमन और खुशी से हमेंशा श्री शिव जियो की पनाह में रहें ! पोषाक के लिए वस्त्र और पच्चीस रूपयें की रकम जो भेंट के तौर पर भेजी गई है, आप तक पहुँचेगी.... 'जनाब–ए–मुहतरम' आप हमें लिख सकते है जब भी हमारी मदद की जरूरत हो।

(क) संत अथवा जोगी किस देवता की पूजा करता था ? आपको यह कैसे मालूम हुआ ? 2
(ख) औरंगजेब ने उसके प्रति अपनी श्रद्धा किस प्रकार व्यक्त की? 2
(ग) इस्लाम के पॉच सिद्धांतों को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए ? 2
(घ) इन विश्वव्यापी प्रथाओं ने भारत में क्षेत्रीय प्रभावों को भी किस प्रकार अपना लिया ? दो उदाहरण दीजिए ? 2

18. बहुत समय पश्चात् 1947 में आर.ई.एम. व्हीलर नें, जो भारतीय पूरातात्विक सर्वेक्षण के तत्कालिक डायरेक्टर जनरल थे, इन पूरातात्विक साक्ष्यों का उपमहाद्वीप में ज्ञात प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद के साक्ष्यों से संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने लिखाः
ऋग्वेद में पुर शब्द का उल्लेख है, जिसका अर्थ है प्राचीर, किला या गढ़ आर्यों के युद्ध के देवता इंद्र को पूरंदर अर्थात् गढ़ विध्वंशक कहा गया है।

ये दूर्ग कहॉ है या थे ? पहले यह माना गया था कि ये मिथक मात्र थे.....हड़प्पा में हाल में हुए उत्खननों ने मानों परिदृश्य बदल दिया है। यहॉ हम मुख्यतः अनार्य प्रकार की एक बहुत विकसित सभ्यता पाते है, जिसमें अब प्राप्त जानकारी के अनुसार विशाल किलेबंदी की गई थी..... यह सुदृढ़ रूप से स्थिर सभ्यता कैसे नष्ट हुई ? हो सकता है जलवायु संबंधी आर्थिक अथवा राजनीतिक ह्रास ने इसे कमजोर किया हो, पर अधिक संभावना इस बात की है कि जानबूझकर तथा बड़े पैमाने पर किए गए विनाश ने इसे अंतिम रूप से समाप्त कर दिया। यह मात्र संयोग ही नहीं हो सकता कि मोहनजोदड़ों के अंतिम चरण में आभास होता है कि यहॉ पुरूषों, महिलाओं तथा बच्चों का जनसंहार किया गया था। पारस्थितिक साक्ष्यों के आधार पर इंद्र अभियुक्त माना जाता था।

आर.ए.एम.व्हीलर, हड़प्पा 1946 एशियेंट इंडिया, 1947 से उद्धृत।

(क) ऋग्वेद में पुर के बारे में क्या उल्लेख है? 2
(ख) व्हीलर के अनुसार खुदाईयों से क्या ज्ञात होता है? 2
(ग) इस सभ्यता के विनाश के बारे में आप किस निष्कर्ष पर पहुँचते है? और क्यों ? 3
(घ) आर.ए.एम. व्हीलर कौन था? 1

अथवा

सम्राट के अधिकारी क्या–क्या कार्य करते थे?

यहॉ मेगस्थनीज के विवरण का एक अंश दिया गया है:

साम्राज्य के महान् अधिकारियों में से कुछ ..... नदियों की देख–रेख और भूमि मापन का काम करते है, जैसा कि मिस्त्र में होता था। कुछ प्रमुख नहरों के उपनहरों के लिए छोड़े जाने वाले पानी के मुखद्वार का निरीक्षण करते हैं, ताकि हर स्थान पर पानी की समान पूर्ति हो सके। यही अधिकारी शिकारियों का संचालन करते हैं और शिकारियों के कृत्यों के आधार पर उन्हें इनाम या दण्ड देते हैं। वे कर वसूली करते हैं और भूमि से जूड़े सभी व्यवसायों का निरीक्षण करते हैं, साथ ही लकड़हारों, बढ़ईयों, लोहारों और खननकर्ताओं का भी निरीक्षण करते हैं।

(क) राज्यों के अधिकारियों द्वारा किए जाने वाले कार्यों की सूची बनाइए ? 2
(ख) अशोक के अधीन मौर्य शासन की किन्हीं तीन विशेषताओं पर प्रकाश डालिये ? 3
(ग) यह उद्धरण मौर्य साम्राज्य को समझने में हमारी कितनी सहायता करती है? स्पष्ट कीजिये। 2
(घ) इस साम्राज्य के अध्ययन में कुछ अन्य स्त्रोत क्या हैं? उनमें से चार का उल्लेख कीजिये? 1

19. **''एक गोली भी नहीं चली''**

मून ने जो लिखा :

24 घंटे से भी ज्यादा वक्त तक दंगाई भीड़ को इस विशाल व्यावसायिक शहर में बेरोक–टोक तबाही फैलाने दी गई। बेहतरीन बाजारों को जला कर राख कर दिया गया, जबकि उपद्रव फैलाने वालों के उपर एक गोली भी नहीं चलाई गई। ..... जिला मजिस्ट्रेट ने अपने (विशाल पुलिस) बल को शहर में मार्च का आदेश दे दिया और उसका कोई सार्थक इस्तेमाल किए बिना वापस बुला लिया.....।

(क) यह स्त्रोत किस घटना की ओर संकेत करता है ? वर्णन कीजिये कि उपद्रवियों की भीड़ क्या कर रही थी ? 2
(ख) आगे चलकर 1947 में अमृतसर रक्तपात का नजारा क्यों बना ? 3
(ग) उत्तेजित भीड़ के प्रति फौज और पुलिस का क्या रूख था? 2
(घ) एक उदाहरण देकर बताइये कि गॉधीजी ने साम्प्रदायिक सौहार्द बढ़ाने के लिए कैसे प्रयत्न किया? 1

अथवा

जवाहरलाल नेहरू के 13 दिसंबर 1946 के प्रसिद्ध भाषण के कथन का एक अंशः

''हमने एक स्वतंत्र सम्प्रभु गणराज्य की स्थापना का दृढ़ और पवित्र संकल्प लिया है। भारत का संप्रभु होना नियत है। इसका स्वतंत्र होना और गणराज्य होना भी स्वाभाविक है.....। कुछ मित्रों ने सवाल उठाया है.....''आपने यहॉ लोकतांत्रिक शब्द क्यों नहीं रखा?'' ....स्वाभाविक है कि हमारा लक्ष्य लोकतंत्र है। लोकतंत्र से कम कुछ भी नहीं। यह लोकतंत्र कैसा होगा, उसकी शक्ल–सूरत कैसी होगी, यह एक अलग मसला है....? आज के लोकतंत्रों ने दुनिया की प्रगति में जबरदस्त भूमिका निभाई है और उनमें से बहुत सारे यूरोप तथा अन्य स्थानों के देश है .....। परंतु यह संदेहजनक हो सकता है कि अगर उन्हें पूरी तरह लोकतांत्रिक बने रहना है, तो न जाने कब लोकतंत्रों को अपनी शक्ल –सूरत थोड़ी बहुत बदलनी पड़ती। मैं आशा करता हूँ कि किसी कथित लोकतांत्रिक देश की एक खास लोकतांत्रिक प्रणाली या किसी संस्थान विशेष की हम सिर्फ नकल करने वाले नही है। हो सकता है कि.....।

(क) संविधान की किन तीन मूल तत्वों की ओर नेहरू जी संकेत कर रहे थें? 1

(ख) वे भारत द्वारा अन्य रा''ट्रों के संविधानों की नकल करने के विरूद्ध क्यों थे? 3

(ग) इस भा''ण के प्रारंभिक अंश में उन्होंने अतीत और अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांतियों का उल्लेख क्यों किया था ? 2

(घ) 13 दिसंबर 1946 को नेहरू ने किस दस्तावेज को प्रस्तूत किया? इसके माध्यम से भारतीय नागरिकों को दी गई किसी एक गारंटी का उल्लेख कीजिए। 2

20. भारत के दिए हुए राजनीतिक रेखा मानचित्र पर निम्नलिखित महाजनपदों तथा नगरों को चिन्हित कीजिए और उनके नाम लिखिएः 5
कन्नौज, पाटलिपुत्र, उज्जयिनी, चेर, सातवाहन।

अथवा

भारत को दिये हुए राजनीतिक रेखा मानचित्र पर 1857 के विद्रोह के किन्हीं पॉच प्रमुख स्थलों को नाम सहित दर्शाइए? 5

21. भारत के दिये हुये राजनीतिक रेखा मानचित्र पर अंकित भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के पॉच स्थानों 1 से 5 तक को पहचालिये तथा उनके नाम लिखिये ? 5

HISTORY-XII (2011-12) MODEL "Q" PAPER -I

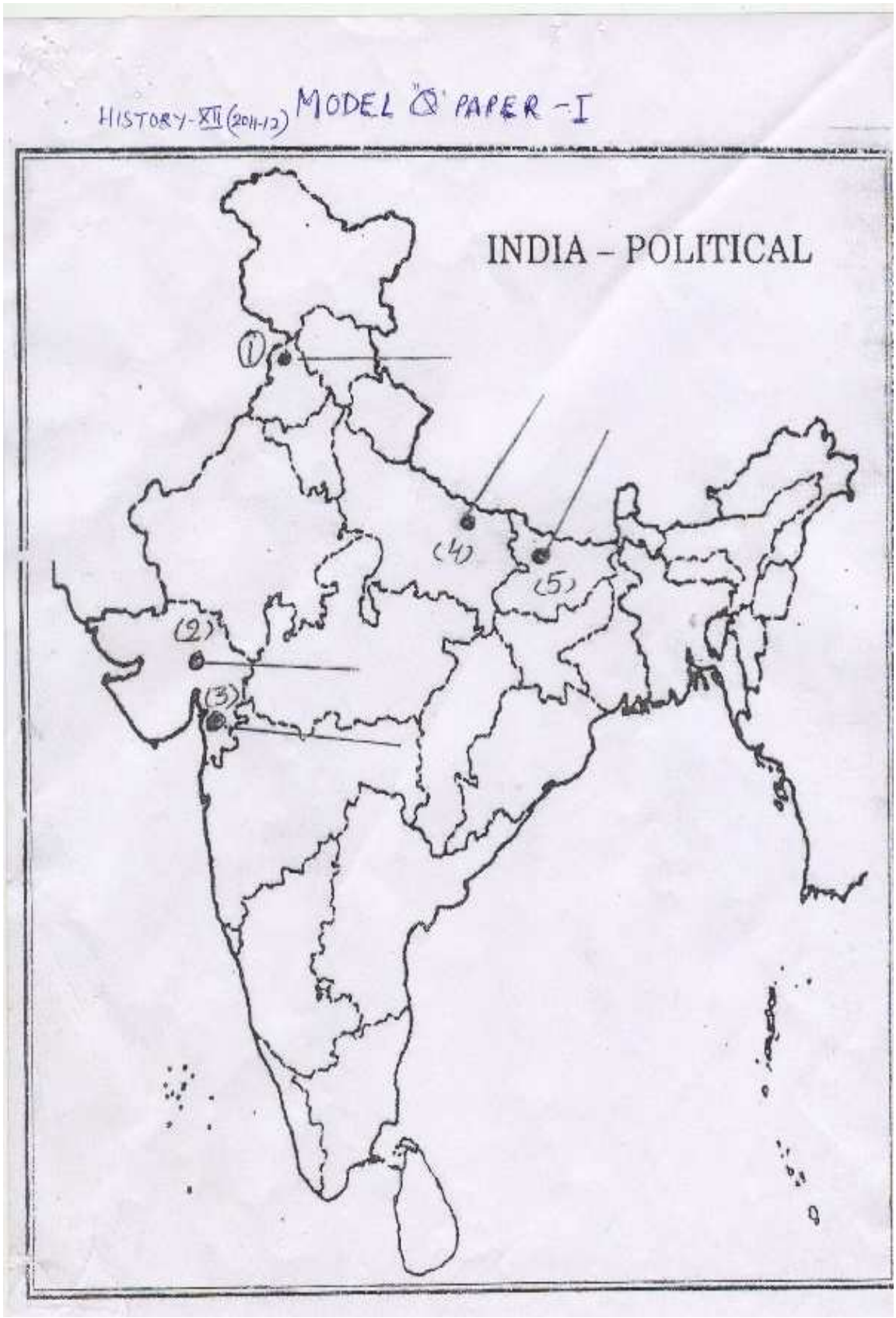

आदर्श प्रश्न पत्र II

2012-13

विषय –इतिहास

कक्षा – बारहवीं

BLUE PRINT

Class : XII
Subject : History

Marks : 100 marks
Time : 3 hours

Theme	Very Short Answer (2)	Short Answer (5)	Long Answer (8)	Passage-based (8)	Skill (5)	Total	
1 and 2	2(1)	-	-	8(1)	5(1)*	10	25
3 and 4	-	15(3)	-	-	-	15	
5 and 6	2(1)	-	-	8(1)	-	10	30
7 and 8		5(1)	10(1)	-	5(1)*	15	
9		5(1)	-	-	-	5	
10 and 11		10(2)		-	5(1)*	10	35
12 and 13	2(1)	-	10(1)	-	-	12	
14 and 15	-	5(1)	-	8(1)	-	13	
Map					10		10
Total	06	40	20	24	10	100	

There are two map questions one for identification (no choice) themes 7 and 1 for location and labeling (choice) themes 2 or 11.

आदर्श प्रश्न पत्र – II

2012-13

विषय – इतिहास

कक्षा – बारहवीं

निर्धारित समय : 3 घण्टे **अधिकतम अंक : 100**

सामान्य निर्देशः

(i) सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने लिखे है।

(ii) 2 अंक वाले प्रत्येक प्रश्न (खंड क–प्रश्न 1 से 3) का उत्तर 30 शब्दों से अधिक नही होना चाहिए।

(iii) 5 अंक वाले प्रत्येक प्रश्न (खंड ख–भाग I, II, III - प्रश्न 4 से 14) का उत्तर 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

(iv) 10 अंक वाले प्रश्न (खंड ग– प्रश्न 15 से 16) का उत्तर 500 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

(v) खंड घ का प्रश्न तीन स्त्रोतों पर आधारित है।

(vi) मानचित्र को उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न कीजिए (खण्ड–य)।

खण्ड–क

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

Q.1. प्रसिद्ध प्रयाग प्रशस्ति की रचना किसने की? इसकी भाषा क्या थी? 2

Q.2. भारत के बारे में लिखते समय अलबिरूनी को कौन सी दो समस्याओं का सामना करना पड़ा? 2

Q.3. किसान महात्मा गांधी को किस तरह देखते थे? 2

खण्ड–ख

निम्नलिखित में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

Q.4. हड़प्पा संस्कृति की कुछ विशिष्टताओं का वर्णन कीजिए? 5

Q.5. प्राचीन काल के सामाजिक मूल्यों के अध्ययन करने हेतु महाभारत एक स्त्रोत है, इस कथन की पुष्टि उचित तर्को द्वारा कीजिए? 5

Q.6. सॉची क्यों बच गया जबकि अमरावती नष्ट हो गया? आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए? 5

Q.7. आप ऐसा क्यों सोचते है कि महात्मा बुद्ध न अपने अनुयायियों को परामर्श दिया कि स्वय अपने लिए ज्योति बनें? 5

भाग–II

निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

Q.8. आपके विचार में महानवमी डिब्बा से सम्बन्ध अनुष्ठानों का क्या महत्व था? 5

Q.9. मुगल काल में कृषि उत्पादन में महिलाओं की भूमिका का विवरण दीजिए? 5

Q.10. मुगलों और ऑटोमनों के पारस्परिक सम्बन्धों का संक्षेप में वर्णन कीजिए? 5

भाग–III

निम्नलिखित में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

Q.11. संथालों ने ब्रिटिश शासन के विरूद्ध विद्रोह क्यों किया? 5

Q.12. 1857 के विद्रोह की असफलता के क्या कारण थे? 5

Q.13. ब्रिटिश नीति के कोई पॉच तरीके बताईए जिसने अवध के ताल्लुकदारों को प्रभावित किया? 5

Q.14. भारत विभाजन का भारतीय महिलाओं पर जो प्रभाव पड़ा उसका आंकलन करें? 5

खण्ड–घ

भाग–I

Q.15. कमल महल और हाथियों के अस्तबल जैसे भवनों का स्थापत्य हमें उनके बनवाने वाले शासकों के विषय में क्या बताता है? 10

OR / अथवा

कृषि इतिहास लिखने के लिए आइन को स्त्रोत के रूप में इस्तेमाल करने में कौन सी समस्याएँ हैं? इतिहासकार इन समस्याओं से कैसे निपटते है?

Q.16. औपनिवेशिक शासन के दौरान किन्ही चार परिवर्तनों को बताइए जो नये शहरों के सामाजिक जीवन में आए थे? 10

OR / अथवा

महात्मा गॉधी के आगमन ने किस प्रकार राष्ट्रीय आन्दोलन के आधार को विस्तृत किया, समझाइए?

खण्ड–घ (स्त्रोत आधारित प्रश्न)

निम्नलिखित अनुच्छेदों (प्रश्न सं. 19 से 21) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उनके अंत में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए?

Q.17 निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उसके बाद पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

''प्रभावती गुप्त और दंगुन गाँव''

प्रभावती गुप्त ने अपने अभिलेख में यह कहा है:

प्रभावती ग्राम कुटुंबिनों (गॉव के गृहस्थ और कृषक), ब्राहम्णों, और दुगुन गांव के अन्य वासियों को आदेश देती है.....

''आपको ज्ञात हो कि कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि को धार्मिक पुण्य प्राप्ति के लिए इस ग्राम को जल अपर्ण के सज्ञथ आर्चाय चनास्वामी को दान किया गया है। आपको इनके सभी आदेशों का पालन करना चाहिए।

एक अहार के लिए उपयुक्त निम्नलिखित रियायतों का निर्देश भी देती हूँ। इस गॉव में पुलिस या सैनिक प्रवेश नहीं करेंगे। दौर पर आने वाले शासकीय अधिकारियों का यह गॉव घास देने और आसन में प्रयुक्त होने वाली जानवरों की खाल और कोयला देने के दायित्व से मुक्त है। साथ ही वे मदिरा खरीदने और नमक हेतु खुदाई करने के राजसी अधिकार को कार्यान्वित किए जाने से मुक्त है। इस गॉव को खनिज पदार्थ और खदिर वृक्ष के उत्पादन देने की भी छूट है। फूल और दूध देने से भी छूट है। इस गॉव का दान इसके भीतर की संपत्ति और बड़े छोटे सभी करों सहित किया गया है।''

इस राज्यादेश को 13वें राज्य वर्ष में लिखा गया है और इसे चक्रदास ने उत्कीर्ण किया है।

a) इस अभिलेख को किसने जारी किया? 1

b) वह जमीन दान क्यों करना चाहती थी? यह दान किसने प्राप्त किया? 2

c) एक अग्रहार भूमि को किन करों से मुक्त रखा जाता था? 2

d) इस स्त्रोत के महत्व को लिखिए? (कोई तीन) 3

अथवा

निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए?

''पुरावस्तुओं की पहचान कैसे की जाती है?''

भोजन तैयार करने की प्रक्रिया में अनाज पीसने के यंत्र तथा उन्हें आपस में मिलाने, मिश्रण करने तथा पकाने के लिए बरतनों की आवश्यकता थी। इन सभी को पत्थर, धातु मिट्टी से बनाया जाता था। यहॉ एक महत्वपूर्ण हड़प्पा स्थल मोहनजोदड़ों में हुए उत्खननों पर सबसे आरंभिक रिपोर्टों में से एक से कुछ उद्धारण दिए जा रहे है–

अवतल चक्कियां..... बड़ी संख्या में मिली हैं..... और ऐसा प्रतीत होता है कि अनाज पीसने के लिए प्रयुक्त एक मात्र साधन थीं। साधारणतः ये चक्कियां स्थूलतः कठारे, कंकरीले, अग्निज अथवा बलुआ पत्थर से निर्मित थीं और आमतौर पर इनसे अत्याधिक प्रयोग के संकेत मिलतें हैं। चूंकि इन चक्कियों के तल सामान्यतया उत्तल हैं, निश्चित रूप से इन्हें जमीन में अथवा मिट्टी में जमाकर रखा जाता होगा। जिससे इन्हें हिलने से रोका जा सकें। दो मुख्य प्रकार की चक्कियॉ मिली है। एक वे हैं जिन पर एक दूसरा छोटा पत्थर आगे–पीछे चलाया जाता था, जिससे निचला पत्थर खोखला हो गया था, तथा दूसरी वे हैं जिनका प्रयोग संभवतः केवल सालन या तरी बनाने के लिए जड़ी बूटियों तथा मसालों को कूटने के लिए किया जाता था, इन दूसरे प्रकार के पत्थरों को हमारे श्रमिकों द्वारा 'सालन पत्थर, का नाम दिया गया है तथा हमारे बावर्ची ने एक यही पत्थर रसोई प्रयोग के लिए संग्रहालय से उधार माँगा है।

a) मुख्य दो प्रकार की चक्कियाँ कौन सी है? 2

b) ये चक्कियां किस से निर्मित थीं? 2

c) इन्हे सालन पत्थर क्यों कहा जाता है? 1

d) उन दो तरीकों का वर्णन कीजिए जिसके द्वारा पुरातत्वविद इन खोजों को वर्गीकृत करते है तथा एक तरीका बताइए जिससे वे इसके उपयोग को निर्धारित करते हैं? 3

Q.18.

घोड़े पर और पैदल

डाक व्यवस्था का वर्णन इब्न बतूता इस प्रकार करता है।

भारत में दो प्रकार की डाक व्यवस्था है। अश्व डाक व्यवस्था जिसे उलुक कहां जाता है, हर चार मील की दूरी पर स्थापित राजकीय घोड़ों द्वारा चालित होती है। पैदल डाक व्यवस्था के प्रति मील का एक तिहाई होता है..... अब, हर तीन मील पर घनी आबादी वाला एक गॉव होता है। जिसके बाहर तीन मंडप होते है जिनमें लोग कार्य आरंभ करने के लिए तैयार बैठे रहते है। उनमें से प्रत्येक के पास दो हाथ लम्बी एक छड़ होती है। जिसके ऊपर ताबें की घंटियां लगी होती हैं। जब संदेश वाहक शहर से यात्रा आरंभ करता है तो एक हाथ पत्र तथा दूसरे में घंटियों सहित छड़ लिए वह क्षमतानुसार तेज भागता हैं जब मंडप में बैठे लोग घंटियां की आवाज सुनते है तो वे तैयार हो जाते है। जैसे ही संदेश वाहक पास पहुंचता है, उनमें से एक उससे पत्र लेता है और वह छड़ हिलाते हुए पूरी ताकत से दौड़ता है, जब तक वह अगले दावा तक नही पहुॅच जाता। पत्र के अपने गंतव्य स्थान तक पहुंचने तक यही प्रक्रिया चलती रहती हैं यह पैदल डाक व्यवस्था अश्व डाक व्यवस्था से अधिक तीव्र होती है, और इसका प्रयोग अकसर खुरासान के फलों के परिवहन के लिए होता है, जिन्हें भारत में बहुत पसंद किया जाता है।

a) दो प्रकार के डाक व्यवस्था के नाम लिखिए? 1

b) पैदल डाक व्यवस्था किस प्रकार कार्य करती थीं? 3

c) इब्नबतूता को क्यों लगता था कि भारत में डाक व्यवस्था उत्तम थीं? 3

d) चौदहवी शताब्दी में राज्य व्यापारियों को किस प्रकार प्रोत्साहित करते थें? 1

अथवा

निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए?

मुगलशहजादी जहॉआरा की तीर्थयात्रा 1643

निम्नलिखित गद्यांश जहॉआरा द्वारा रचित शेख मुइनद्दीन चिश्ती की जीवनी मुनिस अलअख्याह (यानी आत्मा का विश्वस्त) से लिया गया हैं अल्लाहताला की तारीफ के बाद। यह फकीरा जहॉआरा। राजधानी आगरा से अपने पिता (बादशाह शाहजहॉ) के संग पाक औरबेजोड़ अजमेर के लिए निकली.... मैं इस बात के लिए वायदापरस्त थी कि हर रोज और हर मुकाम पर मैं दो बार की अख्तियारी नमाज अदा करूंगी... बहुत दिन.... मैं रात को बाघ के चमड़े पर नहीं सोई और अपने पैर मुकद्दस दरगाह की तरफ नही फैलाए, न ही मैने अपनी पीठ उनकी तरफ की। मैं पेड़ के नीचे दिन गुजारती थी।

वीरवार को रमजान के मुकद्यस महीने के चौथे रोज मुझे चिराग और इतर में डूबे दरगाह की जियारत की खुशी हासिल हुई... चूंकि दिन की रोशनी की एक छड़ी बाकी थी मैं दरगाह के भीतर गई और अपने जर्द चेहरे को चौखट की धूल से रगडा दरवाजे से मुकद्यस दरगाह तक मैं नंगे पांव वहॉ की जमीन को चूमती हुई गई। गुंबद के भीतर रोशनी से भरी दरगाह में मैने मजार के चारों ओर सात फेरे लिए। आखिर में अपने हाथों से मुकद्यस दरगाह पर मैने सबसे उम्दा इतर छिड़का। चूंकि गुलाबी दुपट्टा जो मेरे सिर पर था, में उतार चुकी थी इसलिए उसे मैने मुकद्यस मजार के ऊपर रखा।

a) जहॉआरा ने किस प्रकार शेख के प्रति अपनी निष्ठा दिखाई? 2

b) दरगाह अनेक भक्तों को क्यों आकर्षित करता था? 2

c) हम किस प्रकार जानते है कि अकबर भी संत के प्रति गहरा सम्मान रखता था? 2

d) जियारत या तीर्थ यात्रा की अन्य गतिविधियॉ क्या थी? 2

Q.19.

निम्नलिखित अवतरण को ध्यानर्वूक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिएः

मुस्लिम लीग का प्रस्ताव : 1940

मुस्लिम लीग के 1940 वाले प्रस्ताव की मांग थीः–

'कि भौगोलिक दृ ट से सटी हुई इकाईयों को क्षेत्रों के रूप में चिन्हित किया जाए, जिन्हें बनाने में जरूरत के हिसाब से इलाकों का फिर से ऐसा समायोजन किया जाए कि हिंदुस्तान के उत्तर–पश्चिम और पूर्वी क्षेत्रों जैसे जिन हिस्सों में मुसलमानों की संख्या ज्यादा है, उन्हें इकट्ठा करके 'स्वतंत्र राज्य' बना दिया जाए जिनमें ाामिल इकाईयां स्वाधीन और स्वायत्त होंगी।'

प्रश्न 01 क्या इस प्रस्ताव में पाकिस्तान की मांग की गई है ? तर्क सहित समझाइए। 2

प्रश्न 02 यह प्रस्ताव किसने लिखा ? 2

प्रश्न 03 मुस्लिम लीग ने किस तरह की स्वायत्ता की मांग की ? 2

प्रश्न 04 प्रस्ताव में किन क्षेत्रों की स्वायत्ता की मांग की गई ? 2

अथवा

''खडित निष्ठा के लिए कोई जगह नही''

गोविंद वल्लभ पंत ने कहा कि निष्ठावान नागरिक बनने के लिए लोगों को समुदाय और खुद को बीच में रख कर सोचने की आद्त छोड़नी होगीः

लोकतंत्र की सफलता के लिए व्यक्ति को आत्मानुशासन की कला का प्रशिक्षण लेना होगा – लोकतंत्र में व्यक्ति को अपने लिए कम तथा औरों के लिए ज्यादा फिक्र करनी चाहिए। यहॉ खंडित निष्ठा के लिए कोई जगह नहीं है। सारी निष्ठाऍ केवल राज्य पर केंद्रित होनी चाहिए। यदि किसी लोकतंत्र में आप प्रतिस्पर्धी

निष्ठाएँ रख देते हैं या ऐसी व्यवस्था खड़ी कर देते हैं, जिसमें कोई व्यक्ति या समूह अपने अपव्यय पर अंकुश लगाने की बजाय बृहत्तर या अन्य हितों की जरा भी परवाह नहीं करता, तो ऐसे लोकतंत्र का डूबना निश्चित है।

a) गोविन्द वल्लभ पंत के अनुसार प्रजातंत्र में एक निष्ठावादी नागरिक के तीन अभिलक्षण क्या है? 3

b) पृथक निर्वाचिका से आप क्या समझते है? 1

c) संविधान लिखते समय पृथक निर्वाचिका की मॉग क्यों की गई? 2

d) जी.बी. पंत इस माँग के विरूद्ध क्यों थे? दो कारण लिखिए? 2

Part - E (खण्ड–य)

Q.20. भारत के दिए हुए राजनीतिक रेखा–मानचित्र पर निम्नलिखित महाजनपदों तथा नगरों को चिन्हित कीजिए और उनके नाम लिखिएः 5
सातवाहन, चोल, उज्जैयनी, राजगिर, मथुरा।

अथवा

भारत के दिए हुए राजनीतिक रेखा–मानचित्र पर 1857 के विद्रोह के निम्नलिखित केन्द्रों को चिन्हित कीजिए तथा उनके नाम लिखिएः
दिल्ली, लखनऊ, आरा, जबलपुर, आगरा

Q.21. भारत के लिए हुए राजनीतिक रेखा मानचित्र पर 14वीं से 18वीं शताब्दी के मध्य के दक्षिण भारत के पॉच महत्वपूर्ण स्थान संख्या 1, 2, 3, 4, 5 दिखाए गए हैं। उन्हें पहचानिए तथा उनके नाम उनके समीप खींची गई रेखाओं पर लिखिए। 5

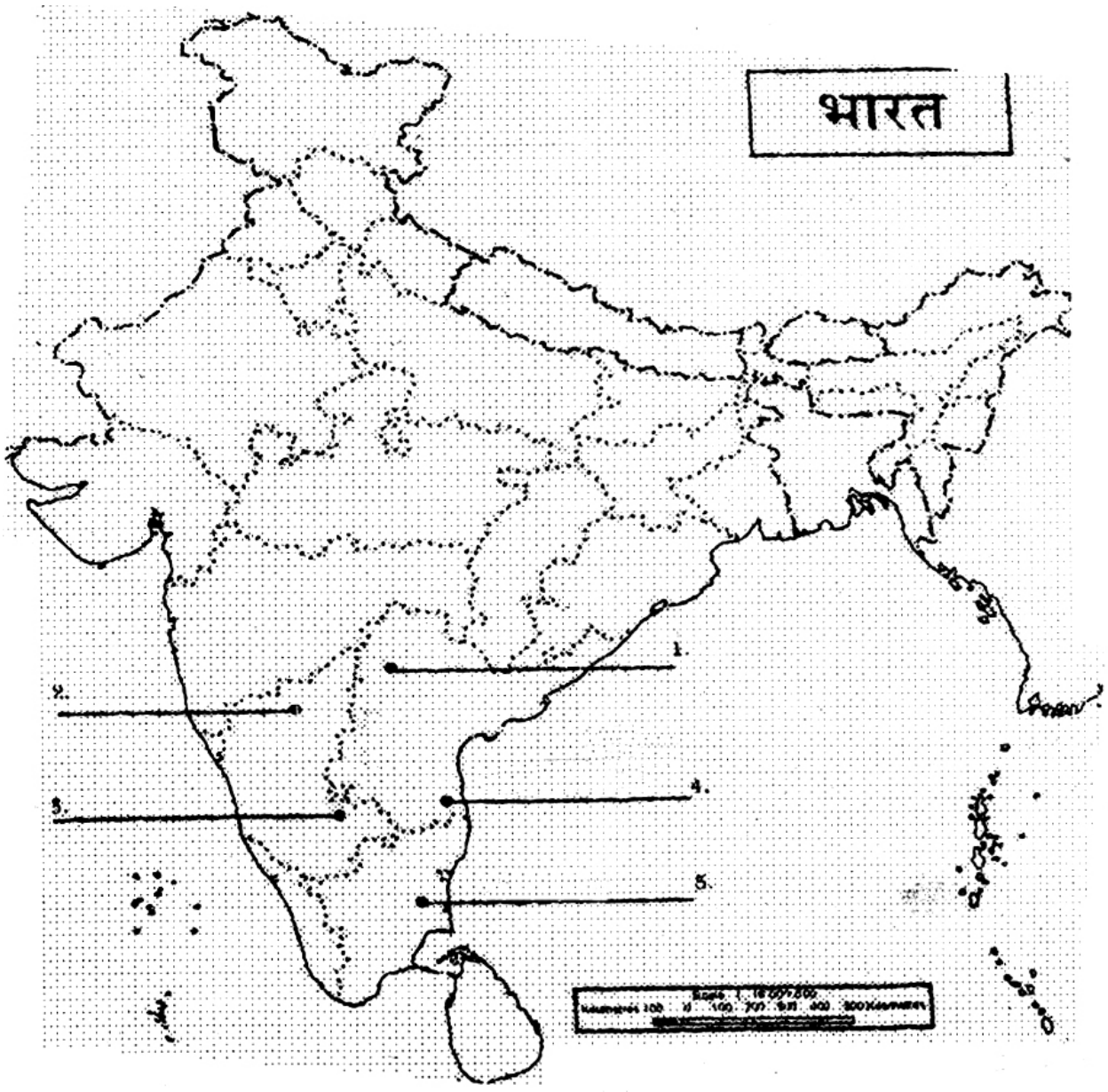
भारत
1.
2.
3.
4.
5.

आदर्श प्रश्न पत्र II
विषय –इतिहास
कक्षा – बारहवीं

अंक योजना

खण्ड–क

Ans.1. गुप्तों के राजकवि हरिषेण ने संस्कृत भाषा में की। 1+1= 2

Ans.2. अलबिरूनी की समस्याः संस्कृत भाषा और उसका अनुवाद, धार्मिक अवस्था और प्रथाएँ। 1+1= 2

Ans.3. किसानों ने गॉधी को एक हमदर्द, सुधारक और उद्धारक के रूप में देखा, उन्हें चमत्कारी शक्तियॉ से युक्त माना। 1+1= 2

खण्ड–ख

भाग–I

Ans.4. नियोजित शहर, उचित, जल निकासी व्यवस्था, चौड़ी सड़कें, वस्त्रों और आभूषणों की जानकारी, लिपि का प्रयोग, मुहरों की प्राप्ति, फसलों को उगाना, अन्य सभ्यताओं से व्यापार–वाणिज्य, मूर्तिकला में निपुणता। 1x5= 5

Ans.5. पितृसत्तात्मक परिवार, गुरू का महत्व, माता की आज्ञा सर्वोपरि होना, बर्हिगोत्र विवाह को मान्यता, बड़ों का आदर, कर्म की महत्ता। 1x5= 5

Ans.6. अमरावती स्तूप की खोज सबसे पहले होना, विद्वानों द्वारा उस स्तूप के महत्व को न समझना, स्तूप के अवशेषों को अंग्रेजों द्वारा उठाकर ले जाना, संरक्षण प्राप्त न होना, स्तूप प्राप्ति के मूल स्थान को सुरक्षित न करना। 1x5= 5

Ans.7. महात्मा बुद्ध ने जन्म मृत्यु के चक्र से मुक्ति, आत्मज्ञान और निर्वाण के लिए व्यक्ति केन्द्रित हस्तक्षेप और सम्यक कर्म की कल्पना की। निर्वाण का अर्थ– अहं और इच्छा का अंत होना बौद्ध परम्परा के अनुसार शिष्यों को अन्तिम निर्देश था। स्वयं ही ज्योति बनो क्योंकि तुम्हें स्वयं ही अपनी मुक्ति का रास्ता ढूंढना है। 1x5= 5

भाग–II

Ans.8. विजयनगर शहर के सबसे ऊँचे स्थान पर महानवमी डिब्बा विशाल मंच।
अनुष्ठान– सितम्बर व अक्टूबर के शरद मास में दशहरा, नवरात्री या महानवमी के अवसर। अनुष्ठानों को मूर्तिपूजा, अश्व पूजा, जानवरों की बलि, नृत्य, कुश्ती प्रतियोगिता, घोड़ों, हाथियों, रथों और सैनिकों की शोभा यात्रा, राजा को दी जाने वाली भेंट, इस अवसर के आकर्षण थे। राजा भव्य समारोह का निरीक्षण भी करता था। 1x5= 5

Ans.9. कृषि उत्पादन में पुरूषों की बराबरी से बुआई, तिराई, कटाई करना, दस्तकारी के सभी कार्य सूत कातना, कपड़ों पर कढ़ाई एवं बर्तन बनाना, महिलाओं की

बाजार में सक्रिय हिस्सेदारी, पिता की संपत्ति पर अधिकार, जमींदारी भी उत्तराधिकार में मिलना। 1x5= 5

Ans.10. राजनैतिक सम्बन्ध, व्यापारिक सम्बन्ध, तीर्थयात्रियों का स्वतंत्र आवागमन, मुगलों द्वारा बहुमूल्य वस्तुओं का निर्यात करना, अर्जित आय धर्मस्थलों पर दान में खर्च करना, मक्का और मदीना का आटोमन अरब के क्षेत्र में स्थित होना प्रमुख आवागमन आकर्षण होना। 1x5= 5

भाग–III

Ans.11. संथालों की भूमि की नाप जोख होना, स्थायी किसान बनने की मजबूरी, भूमि पर भारी लगान होना, उर्वर जमीनों का अभाव, साहूकारों के अत्याचार, स्वतंत्र जीवन पर रोक। 1x5= 5

Ans.12. समय से पहले प्रारम्भ, सीमित साधन, समान उद्देश्यों का अभाव, कुछ ही क्षेत्रों तक सीमित, डलहौजी की विलय नीति, सामाजिक–आर्थिक असंतोष 1x5= 5

Ans.13. सहायक संधि के परिणाम स्वरूप, विलय की नीति, किसानों और सैनिकों के असंतोष, नस्लीय भेदभाव होना और प्रशासन में अंग्रेजों की अनिश्चित लगान व्यवस्था, ताल्लुकदारो के प्रभाव में कमी आना, जमीनें छिन जाना, सत्ता छिनने से सामाजिक व्यवस्था नष्ट होना। 1x5= 5

Ans.14. महिलाओं के ऊपर खराब प्रभाव रहे लूटपाट, हत्या, बलात्कार, बार बार बेचना, खरीदना आदि कार्य उनके साथ हुए। अजनबियों के साथ नई जिंदगी के लिए मजबूर,, सुहाग या गोद का उजड़ना, परिवार द्वारा अस्वीकारना, पेट भरने के लिए वेश्यावृत्ति जैसे निंदनीय व्यवसाय अपनाना पड़ा। पुरूष, स्त्रियों की पवित्रता बनाए रखने के लिए उन्हें स्वयं भी मार डालते थे। 1x5= 5

खण्ड–घ

भाग–I

Ans.15. विजय नगर के भव्य भवनों में से एक कमल महल। इस महल का प्रयोग राजा और परिवार के लोगों द्वारा किया जाता था। महल के दीवारों पर मूर्तियाँ सुरक्षित है और महल के अंदर दीवारों पर रामायण के दृश्य अंकित हैं, जो विजयनगर के राजाओं की स्थापत्य रूचि को दर्शाते हैं। कमल महल के समीप हाथियों को रखने का स्थान था। अमर–नायक भी प्रतिवर्ष राजा को भेंट देते थे। यह सभी धनराशि विशाल भवन निर्माण में लगाई गई। वास्तुकला में इन्डो इस्लामिक शैली का प्रयोग होता था। 4+4= 8

अथवा

मुगलकालीन कृषि इतिहास लिखने में आइन–ए–अकबरी मुख्य स्त्रोत, संक्षेप में आइन–लेखक अबुलफजल। समस्याऐं– जोड़ करने में कई गल्तियॉ हैं, संख्यात्मक आंकड़ों में विषमताऍ, क्षेत्रीयता की समस्या है। इतिहासकार इसे असामान्य एवं अनोखा दस्तावेज मानते हैं। इतिहासकार आइन की अन्य

सूचनाओं जैसे लोगों, व्यवसायों पेशों, साम्राज्य की व्यवस्था, उच्चाधिकारियों के बारे में सामग्री एकत्र कर इन समस्याओं को सुलझाते हैं। 4+4= 8

Ans.16. यातायात के साधनों में वृद्धि– बसों और ट्रकों का चलन, सार्वजनिक स्थानों में वृद्धि–टाऊनहाल, सार्वजनिक पार्क, सिनेमा हाल आदि, नए सामाजिक समूहों का उदय जेसे क्लर्कों, शिक्षकों, वकीलों, डाक्टरों की बढ़ती मांग, शहरों में महिलाओं के लिए नए अवसर– मजदूर, शिक्षिका, रंगकर्मी, फिल्म कलाकार, मेहनतकश गरीबों का नया वर्ग– शहर की ओर आकर्षित। 4x2= 8

अथवा

क्षेत्रीय आन्दोलन– चंपारण, अहमदाबाद एवं खेड़ा आंदोलन, राष्ट्रीय आंदोलन– असहयोग, सविनय, अवज्ञा एवं भारत छोड़ों, गांधी के अस्त्र– सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, गांधी के लक्ष्य– छूआछूत मिटाना, हिंदू–मुस्लिम एकता, नारियॉ की स्थिति में सुधार लाना। 4x2= 8

खण्ड–घ (स्त्रोत आधारित प्रश्न)

Ans.17. 1– प्रभावती गुप्त ने 1

2– कृषि को बढ़ाने भूमिदान, दान दिया आचार्य चनाल स्वामी को 2

3– गांव में सेना का प्रवेश वर्जित, दौरे के अधिकारी की मांग को पूरा करने की आवश्यकता नहीं 2

4– प्रभावती भूस्वामिनी थी, भू–दान भी किया, गांव की जनता को अनुदान मिलता था। 3

अथवा

1– चक्कियों के प्रकार एक वे है जिन पर छोटा पत्थर रखकर चलाया जाता था जिससे निचला पत्थर खोखला होता जाता था । दूसरा जिसका प्रयोग सॉलन या करी बनाने या मसाला कूटने के लिए होता था। 2

2– कठोर, कंकरीले, अग्निज तथा बलुआ पत्थर से। 2

3– श्रमिकों ने सालन नाम दिया क्योंकि सालन के लिए मसाला कूटने होता है। 1

4– पहले का संबंध रोजमर्रा से, अनुष्ठानिक प्रयोग से पुरातत्वविद खंडित वस्तुओं को जमाकर उन्हें वर्गीकृत करते हैं। 3

Ans.18. 1– अश्वडाक व्यवस्था, पैदल डाक व्यवस्था 1

2– पैदल डाक व्यवस्था का वर्णन करना है, प्रारंभ से गंतव्य तक 3

3– इब्नबतूता इस प्रणाली को प्रभावशाली मानता था, शासक को सूचना, व्यापारियों का माल एवं संदेश देती थी, तीव्र भी थी। 3

4– व्यापारिक मार्गों पर सराय तथा विश्रामगृह की व्यवस्था राज्य करता था। 1

अथवा

1– हर मुकाम पर दो बार नमाज पढ़ना, दरगाह की तरफ पैर पीठ न करना, पेड़ के नीचे दिन गुजारना। 1

2– दरगाह एवं उसकी पवित्रता मुख्य आकर्षण। 2

3– अकबर ने फतेहपुर सीकरी में दरगाह बनवाई, वह 14 बार अजमेर शरीफ गया, दान–भेंट भी देता था। 2

4– नृत्य एवं संगीत, खासतौर पर कव्वाली।

Ans.19 1- प्रस्ताव में पंजाब, अफगान, कश्मीर, सिंध व ब्लूचिस्तान के मुस्लिम बहुल इलाकों की स्वायत्ता की मांग की गई।

2. मुस्लिम लीग मुस्लिम बहुल इलाकों में मुस्लिम लोगों के लिए सीमित स्वायत्ता चाहते

थे। उन्होंने धर्म या समुदाय के आधार पर अलग देश की मांग इस प्रस्ताव में नहीं की।

3. पंजाब के मुख्यमंत्री सिकन्दर हयात खान ने।

4 नहीं, क्योंकि प्रस्ताव में पाकिस्तान ाब्द का जिक्र नहीं है।

अथवा

1– अपनी कम तथा दूसरों की फ्रिक ज्यादा, नागरिक के बारे में सोचना तथा निष्ठा खंडित नहीं होना चाहिए। 3

2– वर्ग विशेष या समुदाय विशेष के लिए अलग निर्वाचिका की व्यवस्था। 1

3– अल्पसंख्यक, दलित समुदाय के हितों की रक्षा एवं विकास हेतु। 2

4– क्योंकि इससे नागरिकों की निष्ठा खंडित होता है तथा देश की एकता को खतरा होता है। 2

खण्ड–य

Q.20. मानचित्र कार्य

Q.21. मानचित्र कार्य 1. गोलकुड़ा 2. विजयनगर 3. कोलार 4. चद्रगिरी 5. तंजाबुर

आदर्श प्रश्न पत्र III

2012-13

विषय –इतिहास

कक्षा – बारहवीं

SUBJECT- HISTORY BLUE PRINT

MARKS: 100 MARKS TIME: 3 HRS

THEME	VERY SHORT ANSWER (2) MARKS EACH	SHORT ANSWER (5) MARKS EACH	LONG ANSWER (8) MARKS EACH	PASSAGE BASED (8) MARKS EACH	SKILL (5) MARKS EACH	TOTAL MARKS	
1 AND 2	2(1)			8(1)	5(1)	10	
3 AND 4		5(3)				15	25
5 AND 6	2(1)			8(1)		10	
7 AND 8		5(1)	10(1)			15	30
9		5(1)				5	
10 AND 11		5(2)			5(1)	10	
12 AND 13	2(1)		10(1)		5(1)	12	35
14 AND 15		5(1)		8(1)		13	
MAP						10	10
GRAND TOTAL	06	40	20	24	10	100	100

There are two map questions: - one for identification (Chapter No 13) and one for location and labelling chapter No. 2&11

आदर्श प्रश्न पत्र

2012-13

कक्षा – बारहवीं

विषय – इतिहास

समय :– 3 घंटे अधिकतम अंक – 100

सामान्य निर्देश

1– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने लिखे हैं।

2– 2 अंक वाले प्रत्येक प्रश्न (खंड क प्रश्न– 1 से 3) का उत्तर 30 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

3– 5 अंक वाले प्रत्येक प्रश्न (खंड ख अनुभाग– 1,2,3,– प्रश्न 4 से 14) का उत्तर 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

4– 10 अंको वाले प्रत्येक प्रश्न (खंड ग प्रश्न 15 से 16) का उत्तर 500 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

5– खंड घ के प्रश्न तीन स्त्रोतों पर आधरित हैं।

6– मानचित्र अपनी उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न कीजिए।

खंड क

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

1– चहुन्दड़ों में किए जाने वाले कोई दो शिल्प कला के नाम लिखिए। (2)

2– सूफीवाद के दो सिद्वांत बताइए। (2)

3– सत्याग्रह के अर्थ को स्पष्ट कीजिए। (2)

खंड–ख अनुभाग–1

निम्नलिखित में से किहीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए

4– महाभारत का आलोचनात्मक महत्व बताइए। (5)

5– भोपाल की बेगमों का सांची के स्तूप की सुरक्षा में किए जाने वाली भूमिका को बताइए। (5)

6– महाभारत काल की वर्ण व्यवस्था विश्लेषण कीजिए। (5)

7– जैनधर्म की मुख्य शिक्षाएं क्या हैं ? (5)

अनुभाग– 2

निम्नलिखित में से किहीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए

8– महानवमी डिब्बा से संबंधित अनुष्ठानों का क्या महत्व था? (5)

9– मुगल कालीन राजस्व प्रणाली की मुख्य विशेषताओं को बताइए। (5)

10– मुगल साम्राज में शाही परिवार की स्त्रियों द्वारा निभाई गई भूमिका का मूल्यांकन कीजिए। (5)

अनुभाग–3

निम्नलिखित में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए

11– स्थाई बंदोबस्त प्रणाली को अंग्रेजों के द्वारा क्यों शुरु किया गया? (5)

12– 1875 के दक्कन विद्रोह के क्या कारण थे? (5)

13– लोग अफवाहों पर क्यों विश्वास करते है? 1820 से 1875 की ऐतिहासिक घटना को इस संदर्भ में संक्षेप में बताइए। (5)

14– भारत के बटवारे व जर्मन महाध्वंश की तुलना कीजिए। (5)

ख़ड– ग

15– मुगल साम्राज्य के प्रांतीय प्रशासन की मुख्य विशेष्ताओं को बताइए। इन प्रांतो को केंद्र के द्वारा किस प्रकार नियंत्रित किया जाता था ? (10)

अथवा

एक महत्वपूण राजसी केंद्र के रुप में विजय नगर साम्राज्य का महत्व तथा इसकी महत्वपूर्ण संरचना पर भी प्रकाश डालिए।

16– कैसे सार्वजनिक स्थान औपनिवेश्कि शहरों के उदय का कारण बने? और वहाँ कौन सी गतिविधियाँ की जाने लगी? (10)

अथवा

कैसे असहयेाग आंदोलन प्रतिरोध का प्रतिरुप बना?

खंड घ स्त्रोत आधारित प्रश्न

निम्नलिखित अनुच्छेदों को पढ़िए और उनके अंत में पूछे गए प्रश्नों (19से 21)के उत्तर सावधानी से दीजिए –

17 . समुद्रगुप्त की प्रशस्ति

यह अंश प्रयाग प्रशस्ति से लिया गया है

संसार में उसका कोई विरोध नहीं था। अपने अनेक सद्गुणों से पूर्ण सैकड़ों सत्कर्मों वाले उस राजा ने अन्य राजाओं की कीर्ति को अपने पैरों के तलुवों से पोंछ डाला था। वही 'पुरुष' (सर्वश्रेष्ठ) है,अच्छी बातों को फैलाने वाला और बुरे का नाश करने वाला होने के कारण उसे जानना कठिन है। वही ऐसा है जिसके कोमल हृद्य को केवल भक्ति और विनम्रता से जीता जा सकता है। उसमें सहानुभूति है वह लाखों गायों का दानी है, उसका मन अभागों, गरीबों, दीन–दुखियों असहायों, के उत्थान के लिए प्रेरित है। वह दैदीप्यमान है और मानवता के प्रति करुणा का साक्षात रुप है। वह धन के देवता कुबेर, समुद्रों के देवता वरुण, वर्षा के देवता इंद्र तथा मृत्यु के देवता यम के समान है।

(क) यह कौनसी प्रशस्ति है ? (2)

(ख) यह उदाहरण कहां से लिया गया है ? इसके लेखक कौन हैं ? (2)
(ग) किस शासक की उपलब्धियों का बखान किया गया है ? (2)
(घ) इस शासक को भारतीय नेपोलियन क्यों कहा गया है ? (2)

अथवा

मृतको की गली

मृतकों की गली एक छोटी–सी गली है जो चौड़ाई में तीन से छैः फीट तक है, वह स्थान जहां से गली बाईं ओर पश्चिम दिशा में मुड़ती है वहां, एक व्यस्क की खोपड़ी के हिस्से, छाती और उपरी भुजा की कुछ अस्थियां खोजी गई, सभी बहुत भुरभुरी अवस्था में थी। यह शरीर पीठ के बल गली के विकर्ण के रुप में चार फुट दो इंच की गहराई पर पड़ी थी। पश्चिम की ओर पंद्रह इंच पर एक छोटी–सी खोपड़ी के कुछ टुकड़े थे। इन्हीं अवशेषों के कारण इसे ''मृतकों की गली'' नाम दिया गया।

स्त्रोत जॉन मार्शल, मोहनजोदड़ो और सिंधु सभ्यता 1931

1925 में मोहनजोदड़ों के उसी भाग से 16 लोगों के अस्थि पंजर उनके गहनों

सहित प्राप्त हुए। जो उन्होंने मृत्यु के समय पहने हुए थे।

(क) उस गली को मृतकों की गली क्यों कहा जाता है ? (2)
(ख) इस सूचना से कुछ विद्वानों और पुरातत्ववेत्ताओं ने क्या निष्कर्ष निकाला ? (2)
(ग) जॉन मार्शल कौन थे ? वह खुदाई के लिए क्यों प्रवृत्त हुए ? (2)
(घ) कभी–कभी प्रारंभिक अनुमान क्यों उलट दी जाती हैं ? (2)

18. खंभात में एक चर्च

(यह अंश 1598 में अकबर द्वारा जारी एक फरमान 'शाही आदेश' से लिया गया है।)

चूंकि हमारे खास और पवित्र ध्यान में यह बात पहुंचाई गई है कि ईसा के पवित्र समाज के पादरी खंभात की खाड़ी (गुजरात) में एक प्रार्थना घर (ईबादतखान) का निर्माण करना चाहते हैं। इसलिए एक महान आदेश पत्र जारी किया जाता है कि खंभात के उच्चाधिकारी उनके आड़े न आए, बल्कि उन्हें चर्च बनाने दें, ताकि वे अपने ढंग से पूजा कर सकें।

यह आवश्यक है कि सम्राट के आदेश का पूरा पालन हो।

(क) पादरी क्या करना चाहते थे ? (2)
(ख) अकबर ने उनकी इच्छा पूरी करने के लिए क्या व्यवस्था की ? (2)
(ग) मुस्लिम शासकों को कौन सलाह देते थे ? (1)
(घ) इस संदर्भ में स्थिति कैसे उलझी और शासक कैसे उसके अनुकूल बने ? (3)

अथवा

घोसले से निकलता पक्षी

(यह अंश 'रिहला' से लिया गया है)

वीरवार को मैं अपने जन्मस्थान तैंजियर से चला.....मैं अकेला ही चला– न कोई मेरे साथ अनुयायी था। न कोई कारवां, जिनका साथ मैं करता, किंतु मेरे भीतर एक कभी पराजित न होने वाली प्रेरणा थी जो मुझे खींचकर ले जा रही थीं, लंबे समय से मन में दबी एक आकांक्षा थी कि मैं कभी इस महान शरण स्थलों की यात्रा करुं। इसलिए मैने अपनी प्रतिज्ञा को दृढ़ किया कि अपने प्रियजनों, स्त्रियों, पुरुषों को छोड़ दूं। मैने अपने घर ऐसे ही त्याग दिया जैसे पक्षी अपना घोसला त्याग देते हैं। उस समय मेरी उम्र 22 वर्ष की थीं।

घर छोड़ने के तीस वर्ष बाद 1354 में इब्नबतूता घर लौटा।

(क) इब्नबतूता ने किस इच्छा के कारण घर छोड़ा ? (2)

(ख) भारत आने से पहले और उसके बाद उसने कहां–कहां यात्रा की ?(2)

(ग) उसे भारत में यात्रा करना कठिन क्यों लगा ? (2)

(घ) उसने भारतीय नगरों के बारे में क्या लिखा ? (2)

19.

''मेरा मानना है कि पृथक निर्वाचिका अल्पसंख्यकों के लिए आत्मघाती साबित होगी''
27 अगस्त 1947 को संविधान सभा की बहस में गोविन्द बल्लभ पंत ने कहा था : मेरा मानना है कि पृथक निर्वाचिका अल्पसंख्यकों के लिए आत्मघाती साबित होगी और उन्हे बहुत भारी नुकसान पहुंचाएगी। अगर उन्हे हमेशा के लिए अलग–थलग कर दिया गया तो वे कभी भी खुद को बहुसंख्यकों मे रूपांतरित नहीं की पाएंगें। निराशा का भाव भ्रुंरू से ही उन्हे अपंग बना देगा। आप क्या चाहते हैं और हमारा अंतिम उद्देश्य क्या है? क्या अल्पसंख्यक हमे ाा अल्पसंख्यकों के रूप में ही रहना चाहते हैं या वे भी एक दिन एक महान राट्र का अभिन्न अंग बनने और उसकी नियति को निर्धारित व नियंत्रित करनें का सपना देख सकते हैं? मेरा विचार है कि अगर उन्हे शेष समुदाय से अलग रखा जाता है और ऐसे हवाबंद कमरे में काटकर रखा जाता है जहां उन्हे हवा के लिए भी औरों पर निर्भर रहना पड़ेगा तो यह उनके लिए भयानक रूप से खतरनाक होगा। अगर आप अल्पसंख्यक पृथक निर्वाचिकाओं से जीतकर आते रहे तो कभी प्रभावी योगदान नहीं दे पाएंगे।

1.पृथक निर्वाचिका अल्पसंख्यकों के लिए किस प्रकार आत्मघाती साबित होगी? जी.बी. पंत के विचारों की व्याख्या कीजिए।

2.पृथक निर्वाचिका का बनना क्या अल्पसंख्यकों की समस्या का हल हो सकता है? यदि हां तो कैसे?

3.अल्पसंख्यको की इस समस्या को हल करनें का कोई एक रास्ता सुझाइए।

अथवा

'खंडित निष्ठा के लिए कोई जगह नहीं'

गोविंद वल्लभ पंत ने कहा कि निष्ठावान नागरिक बनने के लिए लोगों को समुदाय और खुद को बीच में रखकर सोचने की आदत छोड़नी होगी।

लोकतंत्र की सफलता के लिए व्यक्ति को आत्मानुशासन की कला का प्रशिक्षण लेना होगा। लोकतंत्र में व्यक्ति को अपने लिए कम तथा औरों के लिए ज्यादा फिक करनी चाहिए। यहां खंडित निष्ठा के लिए कोई जगह नहीं। सारी निष्ठाएं केवल राज्य में केंद्रित होनी चाहिए। यदि किसी लोकतंत्र में आप प्रतिस्पर्धी निष्ठाएं रख देते हैं या ऐसी व्यवस्था खड़ी कर देते हैं जिसमें कोई व्यक्ति या समूह अपने अपव्यय पर अंकुश लगाने की बजाए वृहत्तर या अन्य हितों की जरा भी

परवाह नहीं करता तो ऐसे लोकतंत्र का डूबना निश्चित है।

(क) जी.वी. पंत के अनुसार लोकतंत्र में एक निष्ठावान नागरिक के तीन लक्षण बताइए। (1)

(ख) 'पृथकनिर्वाचिका' से आप क्या समझते हैं ? (2)

(ग) संविधान के निर्माण के दौरान पृथक निर्वाचिका की मांग क्यों की गई थी ? (2)

(घ) जी.वी.पंत इस मांग के विरुद्ध क्यों थे ? दो कारण बताइए। (3)

खंड 'य'

20. भारत के रेखा मानचित्र में गांधार, पांचाल, मगध, अवंति तथा वज्जि को दर्शा कर नामांकित कीजिए। (5)

अथवा

भारत के रेखामानचित्र में 1857 के विद्रोह के पांच महत्त्वपूर्ण केंद्रों का दर्शा कर नामांकित कीजिए।

21. दिए गए भारत के रेखामानचित्र में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के पांच केंद्र 1 से 5 चिन्हित किए गए हैं। उन्हें पहचानिए और उनके नाम पास में दी गई रेखा पर लिखिए। (5)

For question no. 23

MODEL 'Q' PAPER - 3

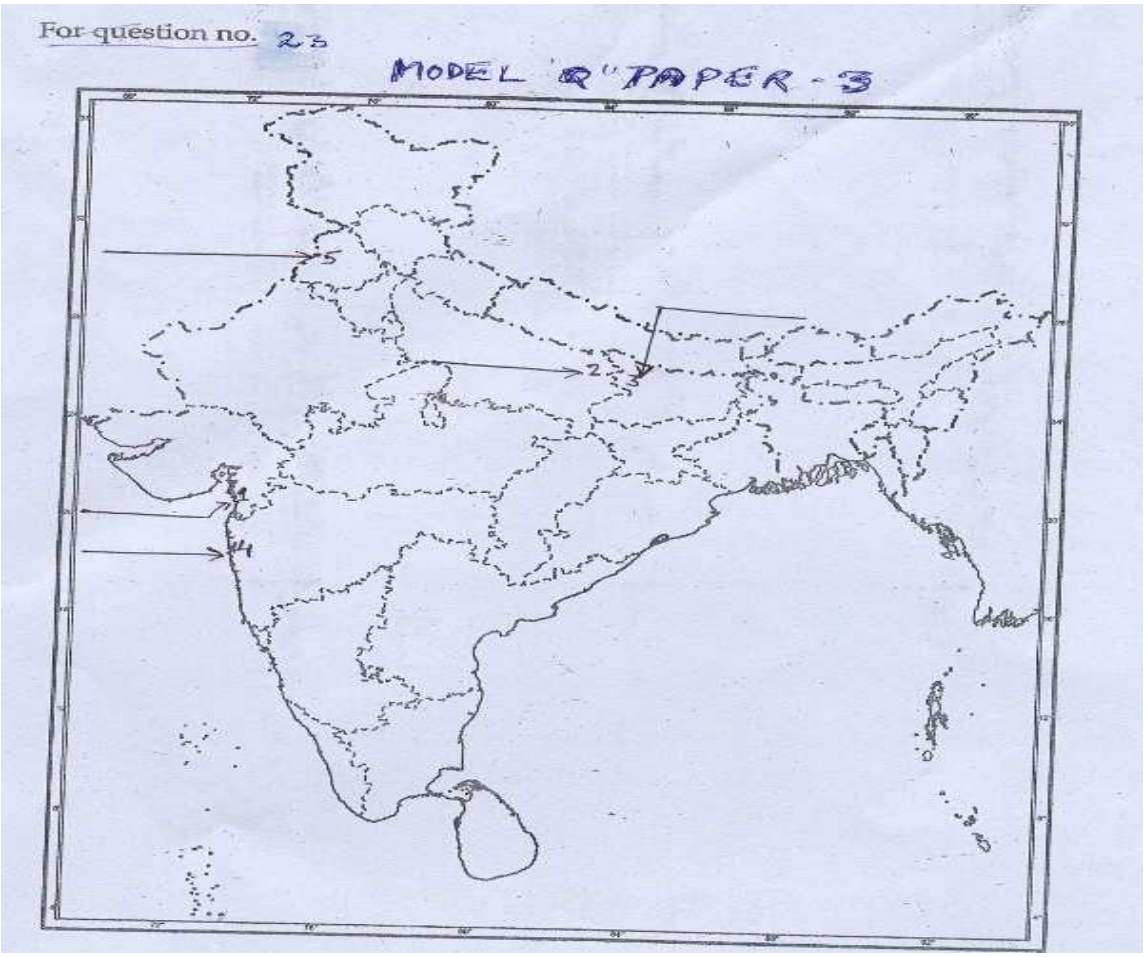

बोर्ड प्रश्न पत्र 2011–12 (सेट 61/2)

अंक योजना

Part A/खंड – 'क'

नीचे दिये गये सभी प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्र.1 माता–पिता की मृत्यु के बाद पैतृक जायदाद का विभाजन मनुस्मृति के अनुसार किस प्रकार होता था ?

2

उ.2 (1) जायदाद का माता–पिता की मृत्यु के बाद सभी पुत्रों में समान रूप से बटंवारा किया
जाना चाहिए ।
(2) स्त्रियां इस पैतृक संसाधन में हिस्सेदारी की मांग नहीं कर सकती थीं।

प्र.2 ''जियारत'' पद की व्याख्या कीजिये । इसक उदेश्य का उल्लेख कीजिये ।

2

उ. (1) ''जियारत'' मुस्लिमों द्वारा की गई तीर्थ यात्रा को कहा जाता है।
(2) उदेश्य – इस अवसर पर संत के आध्यात्मिक आर्शीवाद यानी बरकत की कामना
की जाती है।

प्र.3 पर्वतीय सैरगाह औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के लिए किस प्रकार महत्वपूर्ण थे? एक उदाहरण
दीजिए।

2

उ. (1) पर्वतीय सैरगाह के पास के इलाकों में चाय और काफी के बागानों की स्थापना की
गई
(2) मैदानी इलाकों से बड़ी संख्या में मजदूर वहां आने लगे ।

Part B / खंड – 'ख'

Section I / खंड – 1

प्र.4 खरोष्ठी लिपी को कैसे पढ़ा गया ? स्पष्ट कीजिये ।

5

उ. (1) 1830 के दशक में ईस्ट इंडिया कंपनी के एक अधिकारी जेम्स प्रिंसेप ने ब्राहम्मी और

खरोष्ठी लिपियों का अर्थ निकाला ।

(2) इस शोध से आंरम्भिक भारत के राजनैतिक इतिहास के अध्ययन को नयी दिशा मिली।

(3) इस क्षेत्र में शासन कने वाले हिन्द यूनानी राजाओं द्वारा बनवाये गये सिक्कों से जानकारी हासिल करने में आसानी हुई।

(4) इन सिक्कों में राजाओं के नाम यूनानी और खरोष्ठी में लिखे गये है।

(5) प्रिंसेप ने खरोष्ठी में लिखे अभिलेखों की भाषा की पहचान प्राकृत के रूप में की गई थी इसलिए लंबे अभिलेखों को पढ़ना सरल हो गया ।

प्र.5 हड़प्पा स्थलों की कब्रों में मिली वस्तुओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए 5

उ. (1) कुछ कब्रों से मृदभाण्ड तथा आभूषण मिले है।

(2) पुरूष, महिला दोनों के आभूषण मिले है।

(3) शंख छल्ले जैस्पर के मनके, तांबे के दर्पण आदि मिले है।

(4) ऐसा लगता है कि हड़प्पा सभ्यता के निवासियों का मृतकों के साथ बहुमूल्य वस्तुएं दफनाने में विश्वास नहीं था ।

(5) कब्र से मिली वस्तुओं से ज्ञान होता है कि उनके समाज के वर्गीकरण किये गये थे।

प्र.6 ''जाति प्रथा के भीतर आत्मज्ञान होना बहुधा एक जटिल प्रक्रिया'' कैसे थी? 5

उ. (1) उदाहरण– सातवहन स्वयं को ब्राम्हण वर्ग का बताते थे जबकि ब्राम्हणीय शास्त्र के अनुसार राजा को क्षत्रिय होना चाहिए।

(2) वे चतुर्वणीय व्यवस्था की मर्यादा बनाये रखने का दावा करते थे किंतु साथ ही उन लोगों से वैवाहिक संबंध भी स्थापित करते थे जो इस वर्ण व्यवस्था से ही बाहर थे।

(3) वह अंतर्विवाह पध्दति का पालन करते थे न कि बाल–विवाह प्रणाली का जो ब्राम्हणीय ग्रंथों में प्रस्तावित है।

(4) शास्त्रों के अनुसार केवल क्षत्रिय ही राजा हो सकते थे।

(5) बाद के बौध्द ग्रंथों में यह इंगित किया गया है कि मौर्य क्षत्रिय थे किंतु ब्राम्हणीय ग्रंथ उन्हें निम्नकुल का मानते थे।

प्र.7 ''मुक्तिदाता की कल्पना केवल बौध्द धर्म तक ही सीमित नहीं थी'' टिप्पणी कीजिये 5

उ. (1) इस तरह के विश्वास एक अलग ढ़ग से उन परम्पराओं में भी विकसित हो रहे थे जिन्हें आज हिन्दू धर्म के रूप में जाना जाता है।

(2) इसमें ''वैष्णव'' और ''शैव'' परंम्पराएं शामिल है।

(3) इनके अंतर्गत एक विशेष देवता की पूजा को एक खास महत्व दिया जाता है।

(4) वैष्णववाद के कई अवतारों के इर्दे गिर्द पूजा पध्दतियां विकसित हुई।

(5) यह माना जाता था कि पापियों के बढ़ते प्रभाव के चलते जब दुनियां में

अव्यवस्था और नाश की स्थित आ जाती थी तब विश्व की रक्षा के लिए भगवान अलग–अलग रूपों में अवतार लेते थे।

Section II / खंड – 2

निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए

प्र.8 ''मुगलों के आधीन अभिजात–वर्ग के सदस्यों के लिए शाही सेवा, शक्ति, धन तथा उच्चतम संम्भव प्रतिष्ठा प्राप्त करने का एक साधन थी'' इसक कथन को विवेचनापूर्वक जांच कीजिये। 5

उ. (1) इतिवृतों ने मुगल संभ्रात वर्गो के बीच हैसियत को निर्धारित करने वालें नियमों का बड़ी सुस्पष्टता से सामने रखा गया है।

(2) दरबार में किसी की हैसियत इस बात से निर्धारित होती थी की वह शासक के कितना पास और दूर बैठा है।

(3) किसी भी दरबारी को शासक द्वारा दिया गया स्थान बादशाह की नजर में उसकी महत्ता का प्रतीक था ।

(4) योग्य व्यक्तियों को पदविया देना मुगल राज्यतंत्र का एक महत्वपूर्ण पक्ष था। दरबारी पदानुक्रम में किसी व्यक्ति की उन्नती को उसके द्वारा धारण की जाने वाली पदवियों से जाना जा सकता था।

(5) अन्य पुरस्कारों में सम्मान का जामा भी शामिल था जिसे पहले कभी न कभी बादशाह द्वारा पहना गया हुआ था ''सरप्पा'' पगड़ी और पटका शामिल था। बादशाह विशेष आभूषण भी प्रदान करता था ।

प्र.9 कृषि समाज में महिलाओं को महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में कैसे रखा जाता है? संक्षेप में वर्णन कीजिए। 5

उ. (1) महिला और पुरूष कंधे से कंधा मिलाकर खेतों में काम करते थे।

(2) महिलाए बुआई, मिराई और कटाई के साथ–साथ पकी हुई फसलों का दाना निकालने का काम करती थीं।

(3) सूत कातन, बरतन बनाने के लिए मिट्टी को साफ करने और गूंथने और कपड़ों पर कढ़ाई जैसे दस्तकारी के काम उत्पादन के ऐसे पहलू थे जो महिलाओं के श्रम पर निर्भर था।

(4) उत्पादन के लिए महिलाओं के श्रम की मांग होती थी।

(5) किसान और दस्तकार महिलाओं खेतों में काम के अलावा अपने मालिकों के घर और बाजार के कार्य भी करती थीं।

प्र.10 विजय नगर की भौगोलिक स्थिति के विषय में चौंकाने वाले किन्हीं पांच तथ्यों की संक्षेप में व्याख्या कीजिये। 5

उ. (1) तुंगभद्रा नदी के द्वारा निर्मित यहां पर प्राकृतिक कुंड है।

(2) आस पास कर भूदृश्य रमणीय ग्रेनाईट की पहाडियों से परिपूर्ण है।

(3) पहड़ियों से कई जलधाराएं आकर नदी में मिलती है।
(4) लगभग सभी धाराओं के साथ साथ बांध बनाकर हौज बनाये गये।
(5) यहां प्रायद्वीप के सबसे शुष्क क्षेत्रों में से एक था।

Section III / खंड – 3

निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए

प्र.11 पहाड़ी लोग कौन थे? वे 19वीं शताब्दी में बुकानन के राजमहल की पहाड़ियों के दौरे के प्रति इतने आशंकित क्यो थे? स्पष्ट कीजिए। 5

उ. (1) पहाड़ी लोग राजमहल की पहाड़ी में रहने वाले आदिवासी लोग थे।
(2) ये जंगल की उपज पर गुजारा करते थे, झूम खेती करते थे।
(3) पहाड़ी इसलिए आशंकित थे क्योंकि अंग्रेजों ने जंगला की कटाई–सफाई के काम को प्रोत्साहित किया और जमीदारों जोतदारों ने परती भूमि को धान के खेतों में बदल दिया ।
(4) अंग्रेजों के लिए स्थाई कृषि का विस्तार आवश्यक था क्योंकि उससे राजस्व के स्त्रोतों में वृध्दि हो सकती थी, नियति के लिए फसल पैदा हो सकती थी।
(5) अंग्रेजों द्वारा एक स्थायी सुव्यवस्थित समाज की स्थापना हो सकती थी वे जंगलों को उजाड़ मानते थे और वनवासियों को असम्य बर्बर उपद्रवी और क्रूर समझते थे । जिन पर शासन करना उनके लिए कठिन था।

प्र.12 ब्रिटिश सरकार द्वारा व्यापार पर एकाधिकार जमाने के फलस्वरूप भारतीय व्यापरियों पर अत्यंत बुरा प्रभाव किस प्रकार पड़ा जैसा की 25 अगस्त 1857 की आजमगढ़ योजना में बताया गया था ? व्याख्या कीजिए। 5

उ. (1) ब्रिटिश सरकार ने मील, कपड़े, जहाज व्यवसाय जैसी तमाम बेहतरीन और बहुमूल्य चीजों के व्यापार पर एकाधिकार स्थापित कर लिया था।
(2) अब छोटी–मोटी चीजों का व्यापार ही लोगों के लिए रह गया था
(3) डाक खर्च, नाका वसूली और स्कूलों के लिए चंदे के नाम पर व्यापारियों के मुनाफे मे से हिस्सा लिया जाने लगा ।
(4) तमाम रियासतों के बाद भी व्यापरी को किसी भी व्यक्ति की शिकायत पर गिरफ्तार किया जा सकता था। उन्हें बेइज्जत किया जाता था।
(5) कहा जाता था कि जब बादशाही सरकार बनेगी तो इन सभी फरेबी तौर तरीकों को खत्म किया जायेगा। इसलिए हर व्यापारी का जिम्मेदारी है कि वह युध्द में हिस्सा ले और बादशाह सरकार की हर तरह से मदत करें।

प्र.13 ''एक कम्युनिस्ट सदस्य सोमनाथ लाहिड़ी को संविधान सभा की चर्चाओं पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद का स्याह (काला) साया दिखाई देता था'' इस कथन की विवेचनापूर्ण जांच कीजिये तथा उत्तर के समर्थन में अपने विचार प्रस्तुत कीजिये। 5

उ. (1) सोमनाथ लाहिड़ी ने सदस्यों तथा आम भारतीयों से आग्रह किया कि वे साम्राज्यवादी शासन के प्रभाव से खुद को पूरी तरह आजाद करें।

(2) संविधान सभा को सारा काम वायसराय तथा लंदन में बैठी ब्रिटिश सरकार की देख रेख में करना पड़ता था ।

(3) सोमनाथ लहिड़ी ने समझाया की संविधान सभा अंग्रेजों की बनाई गयी है तथा –

(4) संविधान सभा अंग्रेजो की योजना को साकार करने का काम कर रही है।

(5) ब्रिटिश सरकार ने संविधान सभा के काम काज पर काफी शर्ते भी लगा दी थी।

प्र.14 अनेक इतिहासकार मौखिक इतिहास के बारे मे शंकालु है।'' इस कथन की विवेचनापूर्ण जांच कीजिये। 5

उ. (1) यह कथन सत्य है क्योंकि यह इतिहास केवल स्मृतियों पर आधारित होता है।

(2) इसे पूरी तरह विश्वसनीय नहीं माना जा सकता ।

(3) यह आसानी से उपलब्ध नहीं होता ।

(4) यह क्रमवार नहीं होता ।

(5) यह इतिहास अपेक्षित होता है।

Part C/खण्ड ग

प्र.15 ब्रिटिश द्वारा सार्वजनिक भवनों के लिए औपनिवेशिक शहरों में प्रयुक्त किन्ही तीन वस्तुशिल्पियों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए। 10

उ. (1) नवशास्त्रीय या मियोक्लासिकल शैली –

(1) बड़े–बड़े स्तंभें के पीछे रेखागणित संरचनाओं का निर्माण इस शैली की विशेषता थी

(2) यह शैली मूल रूप से रोम की प्राचीन भवन निर्माण शैली से निकली है।

(3) इस शैली को भारत के लिए विशेष अनुकूल माना जाता था

उदाहरण – (1) 1833 में बंबई का टाउनहाल

(2) 1860 में बनाई गई एल्फिरटन सर्कल

(2) गार्थिक शैली –

(1) इस शैली में उंची उठी हुई छतें, मांकेदार महराबे और बारिक साजसज्जा थी।

(2) इसका जन्म मध्यकालीन गिरजा से हुआ था।

(3) इसे इंग्लैड में 19वीं शताब्दी के मध्य में दुबारा अपनाया गया ।

उदाहरण – (1) सचिवालय

(2) बंबई विश्वविद्यालय , उच्च न्यायालय आदि

(3) इंडो–सारासेनिक शैली –

(1) 20वीं सदी की शुरूआत में नयी मिश्रित स्थापत्य शैली का विकास हुआ

(2) इसमे भारतीय यूरोपीय दोनो शैली का मिश्रण था।
(3) इंडो शब्द हिन्दु शब्द का संक्षिप्त रूप था।यूरोप के लोग मुसलमानों के लिए ''सारासेन'' शब्दों का प्रयोग करते थे।
(4) मध्यकालिन इमारतों गुम्बद , छतरी जालियों मेहराबों में यह शैली दिखाई पड़ती है।

उदाहरण – (1) 1911 गेट वे आफ इंडिया
(2) ताजमहल होटल

अथवा

प्र.15 भारत छोड़ों आंदोलन सही अर्थों में एक जन आंदोलन कैसे था? स्पष्ट कीजिए। 10

उ. (1) यह आंदोलन वास्तव में एक व्यापक जन–आंदोलन था।
(2) इसमें लाखों भारतीयों ने प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष भाग लिया।
(3) इस आंदोलन में युवाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया।
(4) छात्रों ने कालेज छोडकर जेल का रास्ता अपनाया ।
(5) महिलाओं ने भी बढ़ चढ़ कर भाग लिया । उदा0– अरूणा, आसफ अली, सरोजनी नायडु
(6) सभी बड़े नेताओं को जेल में डाल दिया गया तब भी सामान्य जनता की सक्रियता से आंदोलन सक्रिय रहा ।
(7) जयप्रकाश नारायण जैसे समाजवादी नेताओं ने भूमिगत होकर सक्रिय भूमिका निभाई
(8) पश्चिम सतारा, पूर्वी मिदनापुर में समानांन्तर (स्वतंत्र) सरकार की स्थापना की गयी।
(9) आंदोलन इतना व्यापक था इसे दबाने के प्रयास में अंग्रेजों को एक वर्ष लग गये।
(10) यह एक व्यापक प्रभावशाली शक्तिशाली सक्रिय जन आंदोलन था इसके गहरे असर के कारण ही अततः 1947 में भारत को आजादी मिल पाई।

प्र.16 अमर नायक प्रणाली विजयनगर साम्राज्य की एक प्रमुख राजनीतिक खोज कैसी थी स्पष्ट कीजिये । 1529 में कृष्ण देव राय की मृत्यु के पश्चात राजकीय ढ़ाचे में तनाव क्यों उत्पन्न होने लगा ? 10

उ. (1) अमर नायक सैनिक कमांडर थे।
(2) इन्हें राय द्वारा प्रशासन के लिए राज्य क्षेत्र दिये जाते थे।
(3) वे किसानों शिल्पकारों तथा व्यापारियों से भू राजस्व तथा अन्य कर वसूल किया करते थे।
(4) वे राजस्व का कुछ भाग अपने व्यक्तिगत खर्च के लिए अपने पास रख लेते

थे।

(5) यह दल विजयनगर शासकों को एक प्रभावी सैनिक शक्ति प्रदान करने में सहायक होते थे।

(6) कृष्णदेव की 1529 में मृत्यु के पश्चात उनके उत्तराधिकारियों का विद्रोह नायको, सेनापतियों की चुनौती का सामना करना पड़ा ।

(7) 1542 में केन्द्र का नियंत्रण अराविदु वंश के हाथ में चला गया ।

(8) अराविदु 17 वीं सदी तक सत्ता पर कब्जा बना रहा ।

(9) दमन के सुल्तानों के कारण समीकरण बदलते रहे।

(10) 1565 में विजयनगर की तालीकोटा के युध्द में हार हो गयी।

अथवा

प्र.16 'आइन' के अनुसार अकबर के शासन के दौरान प्रशासन और सेना के संगठन की व्याख्या कीजिए। 10

उ. **प्रशासन**

(1) मुगल साम्राज्य प्रांतो (सूबों) में बंटा हुआ था।

(2) मंत्रियों के आधीन 'दीवान' , 'बख्शी' और सद होते थे।

(3) प्रांतीय शासन का प्रमुख गर्वनर (सूबेदार) होता था।

(4) सूबेदार सीधे बादशाह से सम्पर्क रखता था।

(5) प्रत्येक सूबा कई सरकारों में बंटा हुआ था।

(6) परगना (उप–जिला) स्तर पर स्थानीय प्रशासन की देखरेख कानूनगो ''चौधरी'' और काजी द्वारा की जाती थी ।

सेना का संगठन

(1) अधिकारियों के दर्जो और पदों मे दो ओहदे होते थे – जांत, संवार

(2) दोनों पदों में धुड़सवार रखना आवश्यक थे जो 1000 से उपर भी हो सकते थे।

(3) प्रत्येक सैन्य कमांडर धुड़सवारों की भर्ती करता था उन्हें हाथियों के साथ प्रशिक्षण देता था।

(4) घुड़सवार फौज मुगल फौज का आवश्यक अंग थी।

(5) घुड़सवार सिपाही शाही निशान वाले उत्कृष्ट घोड़े रखता था।

भाग 3 / SET 61/1

प्र.12 1820 ई0 से 1848 ई0 के बीच अंग्रेज अफसर सिपाहियों के साथ दोस्ताना संबंध रखने पर खासा जोर कैसे देते थे ? संक्षेप में वर्णन करों।

उ. (1) 1820 के दशक में अंग्रेज अफसर सिपाहियों के साथ मित्रवत व्यवहार करते

थे।

(2) उनके साथ मनोरंजन मल्लयुध्द, तलवारबाजी, और शिकार पर जाते थे।

(3) बहुत सारे अंग्रेज भारजीय भाषाएं, रीति रिवाज और संस्कृति जानते थे।

(4) अंग्रेज अफसर कड़क भी होते थे और अभिभावकों की भूमिका भी निभाते थे।

(5) 1940 के दशक में स्थिति बदलने लगी अंग्रेजों में श्रेष्ठता, नस्ली भेदभाव बढ़ने लगा। वे हिंसा और अपमान करने पर उतर आए।

खंड क / SET 1

उ.1 (1) ब्राम्हणों में वर्ण व्यवस्था (जाति प्रथा) का कठोरता से पालन किया ।

(2) संस्कृत भाषा का प्रयोग किया ।

उ.2 (1) 12वीं सदी के आस–पास इस्लामी दूनियां में सूफी सिलसिलों का गठन होने लगा।

(2) सिलसिलों का शब्दिक अर्थ है जंजीर जो राख और मुरीद के बीच एक निरंतर रिश्ते का द्योतक है। जिसकी पहली कड़ी मुहम्मद से जुड़ी है।

उ.3 (1) हिल स्टेशनों की स्थापना और बसावट का संबंध सबसे पहले ब्रिटिश सेना की जरूरतों से था।

(2) ये हिल स्टेशन फौजियों को ठहराने, सरहद की चौकसी करने और दुश्मन के खिलाफ हमला बोलने के लिए महत्वपूर्ण स्थान थे।

खंड ख / Part 1

उ.6 (1) यह सत्य है कि बहुत से रीति रिवाज, धार्मिक विश्वास और व्यवहार, इमारतों, मूर्तियों या चित्रकला के द्वारा स्थायी दृश्य माध्यमों के रूप में दर्ज नहीं किये गये है।

(2) इनमें दिन – प्रतिदिन और विशिष्ठ अवसरों के रीति रिवाज शामिल है।

(3) संम्भव है कि धार्मिक गतिविधियों और दार्शनिक मान्यताओं की उनकी सक्रिय परंपरा रही है।

(4) यद्यपि जो भी चीजें दर्ज की गयी है उनसे अपार ज्ञान प्राप्त हुआ।

(5) उन्हें ऐतिहासिक स्त्रोतों के रूप में महत्व दिया गया है।

Part B / खंड ख

SET –I

उ.7 (1) इतिहासकार महाभारत ग्रंथ की विषय वस्तु को दो मुख्य शाीर्षकों अख्यांन तथा उपदेशात्मक के अंतर्गत रखते है।

(2) आख्यान में कहानियों का संग्रह हैं।

(3) उपदेशात्मक भाग में सामाजिक आचार – विचार के मानदंडों का चित्रण है।

(4) यह विभाजन अपने में पूरी तरह एकाकी नहीं है – उपदेशात्मक अंश में कहानियां भी होती है और बहुधा आख्यानों में समाज के लिये सबक निहित रहता है।

(5) अधिकांश इतिहासकार एकमत है कि महाभारत वस्तुतः एक भाग में नाटकीय कथानक था जिसमें उपदेशात्मक अंश बाद में जोड़े गये।

Part I / सेट I

उ.9 (1) उत्तर भारत के औसत किसान के पास शायद ही कभी एक जोड़ी बैल और दो हल से ज्यादा कुछ था।

(2) ज्यादातर किसानों के पास यह भी नहीं होता था।

(3) खेती व्यक्तिगत मिलकियत के सिंध्दांत पर आधारित थी।

(4) किसानों की जमीन उसी तरह खरीदी और बेची जाती थी जैसे दूसरे संम्पति मालिको की ।

(5) हल जोतने वाले खेतिहर किसान हर जमीन की हदों पर मिट्टी, ईंट, कांटों से पहचान के लिए निशान लगाते थे।

उ.11 (1) जोतदार अधिक प्रभावशील इसलिए थे क्योंकि वे गांव में रहते थे।

(2) जोतदार गांवों में गरीबों के काफी बड़े वर्ग पर सीधा नियंत्रण रखते थे।

(3) जमींदारों द्वारा गांव की जमा (लगान) बढ़ाने पर जोतदार बहुत विरोध करते थे।

(4) वे जमींदारों के अधिकारियों के कार्यो में भी बाधा डालते थे।

(5) जमींदारों को राजस्व का भुगतान भी जानबूझ कर देर से करते थे।

Part A / सेट III

उ.1 (1) धुमक्कड पशु–पालकों को ''मलेच्छ'' कह कर हेय दृष्टि से देखा जाता था। इनमे असंस्कृत भाषी भी आते थे।

(2) शवों की अंत्येष्टि और मृत पशुओं को छूने वालों को दूषित माना जाता था, इन्हें चंडाल कहा जाता था।

उ.2 (1) सुल्तान जानते थे कि उनकी अधिकांश प्रज्ञा इस्लाम धर्म मानने वाली नहीं है। इसलिए वे सूफी और संतों का समर्थन चाहते थे।

(2) क्योंकि सूफी संत आध्यात्मिक सत्ता को अल्लाह से उदभूत मानते थे और उलेमा द्वारा शरिया की व्याख्या पर निर्भर नहीं थे।

उ.3 (1) ब्लैकटाउन (कालो की) भारतीयों के बेतरतीब, घनी बनावट वालें कस्बें में हुआ करते थे। इनमें अराजकता, गंदगी और बिमारी के स्त्रोत थे।

(2) व्हाइटाउन में सिविल लाइन नाम के नये शहरी इलाके विकसित किये यहां केवल गोरो को बसाया गया ।यहां चौड़ी सड़के, बंगले, बगीचे, बाजार और चर्च हुआ करते थे।

Part B, Section I / सेट III

उ.6 (1) गौतम बुध्द की शिक्षाएं सरल और लोकप्रिय थी

(2) संस्कृत भाषा के बजाय आम लोगों की भाषा का प्रयोग अपने उपदेशों और
शिक्षा के लिए किया गया ।

(3) जाति प्रथा का विरोध किया इस कारण निम्न जाति के लोगों ने इस धर्म
को अपना लिया ।

(4) बौध्द भिक्षुओं का चरित्रवान होना बौध्द धर्म के प्रचार–प्रसार के लिये मददगार साबित हुआ।

(5) राजाओं द्वारा बौध्द धर्म को संरक्षण और सम्मान दिया गया । उदाहरण –
राजा हर्ष और अशोक द्वारा बौध्द धर्म का पालन करना ।

उ.7 (1) बी बी लाल को हस्तिनापुर में आबादी के पांच स्तरों के साक्ष्य मिले थे,
इनमें दूसरा और तिसरा विश्लेषण के लिए महत्वपूर्ण है।

(2) दूसरे स्तर (12 वीं से 7वीं सदी ई.पू.) पर मिलने वाले घरों के बारे में लाल के अनुसार – जिस सीमित क्षेत्र में उत्खनन हुआ वहां से आवास गृहों की कोई निश्चित परियोजना नहीं मिलती किंतु मिट्टी की बनी दीवारों और कच्ची मिट्टी की ईंटे अवश्य मिलती है।

(3) सरकंडे की छाप वाले मिट्टी के पलस्तर की खोज इस बात की ओर इशारा करती है कि कुछ धरों की दीवारे सरकंडा की बनी थी जिन मिट्टी का पलस्तर चढ़ा दिया जाता था।

(4) तीसरे स्तर (6 से 3 शताब्दी ईपू.) पर घर कच्ची और कुछ पक्की ईटों के बने हुए थे।

(5) घरों में शोषक–घट और ईंटों के नाले गंदे पाने के निकास के लिए

इस्तेमाल किये जाते थे तथा वलय कूपों का इस्तेमाल कुंओं और मल की निकासी वाले गार्तों, दोनो ही रूपों में किया जाता था।

Part II / सेट II

उ.9 (1) महिलाओं ने ऊंची जातियों या राज्य के अधिकारियों के खिलाफ राज्य के अधिकारियेां के खिलाफ जबरन कर उगाही या बेगार वसूली की शिकायत की थी।

(2) अक्सर सामूहिक तौर पर भी ऐसी अर्जिया दी जाती थीं इनमें किसी जाति विशेष या संम्प्रदाय के लोग संभ्रात समूहों की मांग के खिलाफ अपना विरोध जताते थे।

(3) बहुत ज्यादा कर की मांग से किसानों का दैनिक गुजारा जोखिम मे पड़ जाता था। खासकर सूखे तथा अन्य विपदाओं के समय।

(4) उनकी नजरों में जिंदा रहने के लिए न्यूनतम बुनियादी साधन उनका हक था।

(5) वे समझते थे कि ग्राम पंचायत को इसकी सुनवाई करके सुनिश्चित करना चाहिए कि राज्य अपना नैतिक फर्ज अदा करे और न्याय करे।

Part III / सेट III

उ.11 (1) पहाड़ियों द्वारा आक्रमण ज्यादातर अकाल और अभाव के समय अपने आपको जीवित रखने लिए किये जाते थे।

(2) ये हमले मैदानों में बसे हुए समुदायों पर अपनी ताकत दिखाने का एक तरीका भी था।

(3) ऐसे आक्रमण बाहरी लोगों के साथ अपने राजनैतिक संबंध बनाने के लिए भी किये जाते थे।

(4) मैदानों में रहने वाले जमींदारों को अक्सर इन पहाड़ियों मुखियाओं का नियमित रूप से खिराज देकर शांती खरीदनी पड़ती थी।

(5) व्यापारी लोग भी इन पहाड़ियों द्वारा निंयत्रित मार्गों को इस्तेमाल करने के लिए कुछ पृथक–कर भी दिया करते थे।

उ.12 (1) विद्रोह के दौरान अवध मिलिट्री कैप्टेन हियर्से की सुरक्षा का जिम्मा भारतीय सिपाहियों पर था।

(2) इफ्फेंट्री की दलील थी कि उन्होने अपने सभी गोरे अफसरों को मार दिया है इसलिए हियर्स को भी गिरफ्तार किया जाये और मार दिया जाये, किंतु मिलिट्री पुलिस ने मना कर दिया।

(3) अततः यह तय किया गया कि देश अफसरों की पंचायत बुलाकर निर्णय किया जावे ।

(4) सिपाही एक साथ एक ही जीवन शैली को अपनाकर रह रहे थे।

(5) लगभग सभी एक जाति विचार धारा के थे, लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अपने भविष्य के लिए सामूहिक फैसले ले रहे थे।

खंड घ (स्त्रोत आधारित प्र.) /

उ.17 निम्नलिखित उध्दहरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके अंत में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

बाध सदृश्य पति

उ.1 हिडिम्बा एक राक्षसी थी । उसे पांडवो के पास उन्हें पकड़कर लाने के लिए भेजा गया पर वह भीम को देखकर मोहित हो गई और उसने भीम से विवाह का प्रस्ताव रखा

उ.2 वह कुंती से बोली 'हे उत्तम देवी, मैने मित्र, बांधव और अपने धर्म का भी परित्याग कर दिया है और आपके बाघ सदृश्य पुत्र का अपने पति के रूप में चयन किया हैकृ चाहे आप मुझे मूर्ख समझे अथवा अपनी समर्पित दासी, कृपया मुझे अपने साथ ले तथा आपका पुत्र मेरा पति हो''

उ.3 पांडव जुंये में अपना सब कुछ हार चुके थे इसलिए उन्हें जंगल मे भेजा गया ।

उ.4 भीम इस शर्त पर विवाह के लिए तैयार हो गए कि भीम दिनभर हिडिम्बा के साथ रहकर रात्रि में पांडवों के पास आ जायेंगें।

अथवा

अग्नि की प्रर्थना

उ.1 क्योंकि अग्नि आहुति को देवताओं तक ले जाने का माध्यम थी।

उ.2 प्रार्थना वैदिक संस्कृत में की जाती थी। यह देवताओं से अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए की जाती थी।

उ.3 यज्ञ किसी निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किये जाते थे। यज्ञों की अनेक विधियां आरम्भ हो गई थी। यज्ञ विशेष मंत्रोंच्चार के साथ अग्नि में आहुतियां डाल कर किये जाते थे।

उ.4 यज्ञ के उद्देश्य –

(1) खाद्य पदार्थों के लिए

(2) धनप्राप्ति हेतु
(3) पुष्टिवर्धक गाय हेतु
(4) वंश बढ़ाने के लिए पुत्र हेतु

उ.18 निम्नलिखित उध्दहरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके अंत में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए

मुगल सेना के साथ यात्रा

उ.1 बर्नियर एक फ्रांसिसी यात्री था। वह एक चिकित्सक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक तथा इतिहासकार था। वह मुगल दरबार से नजदीकी रूप से जुड़ा था

उ.2 यात्रा पर जाने का उसका उद्देश्य मुगल साम्राज्य के बारे में जानकारी हासिल करना था। साम्राज्य के विभिन्न नगरों के लोगों की जीवन शैली के बारे में जानना चाहता था।
उससे दो अच्छे तुर्कमान घोड़े देखने की अपेक्षा की जाती थी तथा सेना के कूच में आवश्यक दैनिक उपयोग की वस्तुऐं रखना अपेक्षित था।

उ.3 हम यात्रा पर जाते समय निम्नांकित आवश्यक सामान ले जाना चाहेंगें।
1. खाने का सामान
2. दो चादर
3. डायरी, पेन, मोबाइल, कैमरा
4. टूथ ब्रश, टूथ पेस्ट, पेपर सोप
5. अपने कपड़े

अथवा

शाही भेट अस्वीकार

उ.1 स्थानीय शासक ने दो बगीचे और बहुत सी जमीन का पट्टा शेख साहब को भेंजा है साथ ही इनके रख रखाव के लिए औजार व आवश्यक वस्तुएं भेजी है।
उ.2 उलुग खान ने शेख को कुछ धनराशि और 4 गांवों का पट्टा भेंट किया ।
उ.3 निजामुद्दीन औलिया ने भेंट स्वीकार करने से इसलिए मना किया क्योंकि वे कहते है कि हमारे कोई भी आध्यात्मिक गुरू ने इस तरह का काम नहीं किया । उनका मानना था यह भेंट उन लोगों को दी जाय जिन्हें इनकी कामना है।

उ.19 निम्नलिखित उध्दहरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके अंत में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए

अंगूरों की एक छोटी सी टोकरी

उ.1 खुशदेव एक सिख डाक्टर थे। वे टीबी के विशेषज्ञ थे। 1949 में उन्हें कराची आमंत्रित किया गया ।

उ.2 खुशदेव सिंह की करांची यात्रा के दौरान उनके मित्र पूरा समय उनके साथ रहें। बिछुड़ने से पहले उन्होंने अपने मित्र को अंगूरों की एक छोटी सी टोकरी भी भेंट की जो उनके स्नेह का प्रतीक थी।

उ.3 खुशदेव सिंह एक कोमल ह्दय तथा मानवता प्रेमी डाक्टर थे। विभाजन की हिंसा के दौरान उन्होंने असंख्य प्रवासी मुसलमानों , सिखों और हिंदुओं को बिना भेदभाव के भोजन, आश्रय व सुरक्षा प्रदान की ।

उ.4 मौखिक इतिहास लिखने के लिए कई उदाहरण प्रस्तुत करता है यह पूर्णतः सत्य होता है जो कि इतिहासकारों की भूतकाल की घटनाओं की पुनः रचना करने में सहायक होता है।

अथवा

राष्ट्रीय भाषा की क्या विशेषताएं होनी चाहिए?

उ.1 गांधी जी के अनुसार यह हिन्दूस्तानी न तो संस्कृतनिष्ठ हिन्दी होनी चाहिए और न फ़ारसीनिष्ठ उर्दू। यह दोनो का सुंदर मिश्रण होना चाहिए। उसे विभिन्न क्षेत्रिय भाषाओं से शब्द खुलकर उधार लेने चाहिए। विदेशी भाषाओं के ऐसे शब्द लेने में कोई हर्ज नहीं है जो हमारी राष्ट्रीय भाषा में अच्छी तरह और आसानी से घुलमिल सकते है।इस प्रकार हमारी राष्ट्रीय भाषा एक समृध्द और शक्तिशाली भाषा होनी चाहिए जो मानवीय विचारों और भावनाओं के पूरे समुच्चय को अभिव्यक्ति दे सके।

उ.2 महात्मा गांधी का यह मानना था कि हरेक को ऐसी भाषा बोलनी चाहिए जिसे लोग आसानी से समझ सके। हिन्दी और उर्दू के मेल से बनी हिन्दुस्तानी भारतीय जनता के बहुत बड़े हिस्से की भाषा थी

उ.3 समय के साथ हिन्दुस्तानी भाषा में बहुत तरह के स्त्रोंतों से नये–नये शब्द और अर्थ इसमे समाते गये। यह बहुसांस्कृतिक भाषा विविध समुदायों के बीच संचार की आदर्श भाषा है। यह हिन्दु और मुसलमानों को, उत्तर और दक्षिण के लोगों को एकजुट करती है।

LIST OF MAPS

Book 1:

1. P-2 Mature Harappan sites :
   Harappa, Banawali, Kalibangan, Balakot, Rakhigadi, Dholavira, Nageshwar, Lothal, Mohenjodaro, Chanhudaro, Kot Diji
2. P-30 Mahajanapada and cities :
   Vajji, Magadha, Koshala, Kuru, Panchala, Gandhara, Avanti, Rajgir, Ujjain, Taxila, Varanasi
3. P-33 Distribution of Ashokan incriptions :
   i. Pataliputra – Capital of Ashoka
   ii. Major Rock Edicts – Girnar, Sopara, Sanchi, Kalasi, Shishupalgarh
   iii. Pillar incriptions – Sanchi, Topra, Meerut, Pillar, Kaushambi
   iv. Kingdom of Cholas, Keralaputras and Pandyas

4. P-43 Important kingdoms and towns :
   i. Kushans, Shakas, Satvahana, Vakatakas, Gupta
   ii. Cities/towns : Mathura, Kanauj, Puhar, Brahukachchha

5. P-95 Major Buddhist Sites :
   Nagarjunakonda, Sanchi, Amaravati, Lumbini

Book 2:

1. P-174 Bidar, Golconda, Bijapur, Vijayanagar, Chandragiri, Kanchipuram, Mysore, Thanjavur, Kolar
2. P-214 Territories under Babur, Akbar and Aurangzeb :
   Delhi, Agra, Panipat, Amber, Ajmer, Lahore, Goa.

Book 3:

1. P-297 Territories/cities under British Control in 1857 :
   Punjab, Sindh, Bombay, Madras, Fort St. David, Masulipatnam, Berar, Bengal, Bihar, Orrisa, Avadh, Surat, Calcutta, Dacca, Chitagong, Patna, Benaras, Allahabad and Lucknow
2. P-305 Main centres of the Revolt :
   Delhi, Meerut, Jhansi, Lucknow, Kanpur, Azamgarh, Calcutta, Benaras, Jabalpur, Agra.
3. P-305 Important centres of the national movement :
   Champaran, Kheda, Ahmedabad, Benaras, Amritsar, Chauri-Chaura, Lahore, Bardoli, Dandi, Bombay (Quit India Resolution), Karachi.

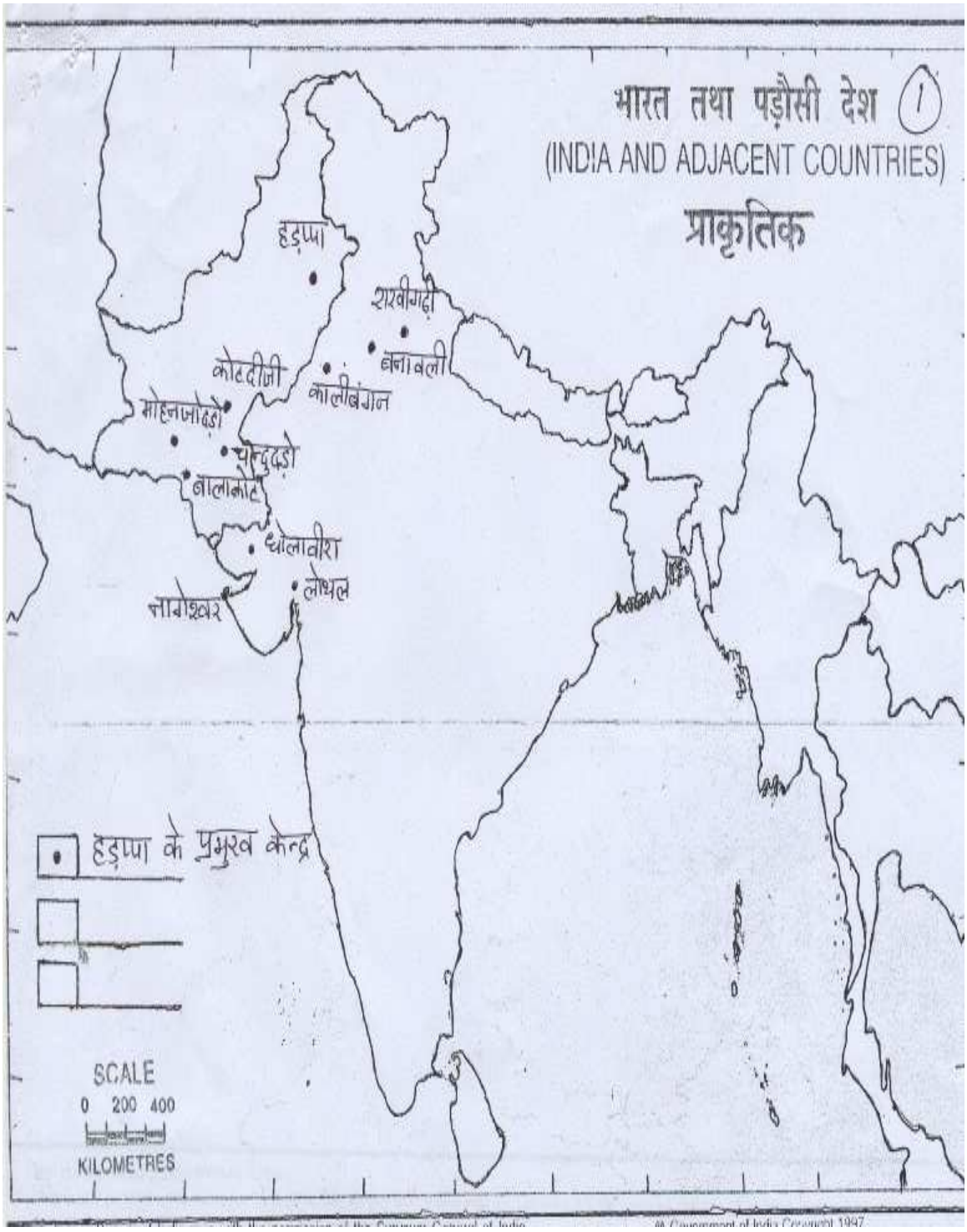
भारत तथा पड़ौसी देश (1)
(INDIA AND ADJACENT COUNTRIES)
प्राकृतिक
हड़प्पा
शरवीगढ़ी
बनावली
कोटदीजी
कालीबंगन
मोहनजोदड़ो
चन्हुदड़ो
जालाकोट
धोलावीरा
लोथल
नागेश्वर
हड़प्पा के प्रमुख केन्द्र
SCALE
0 200 400
KILOMETRES

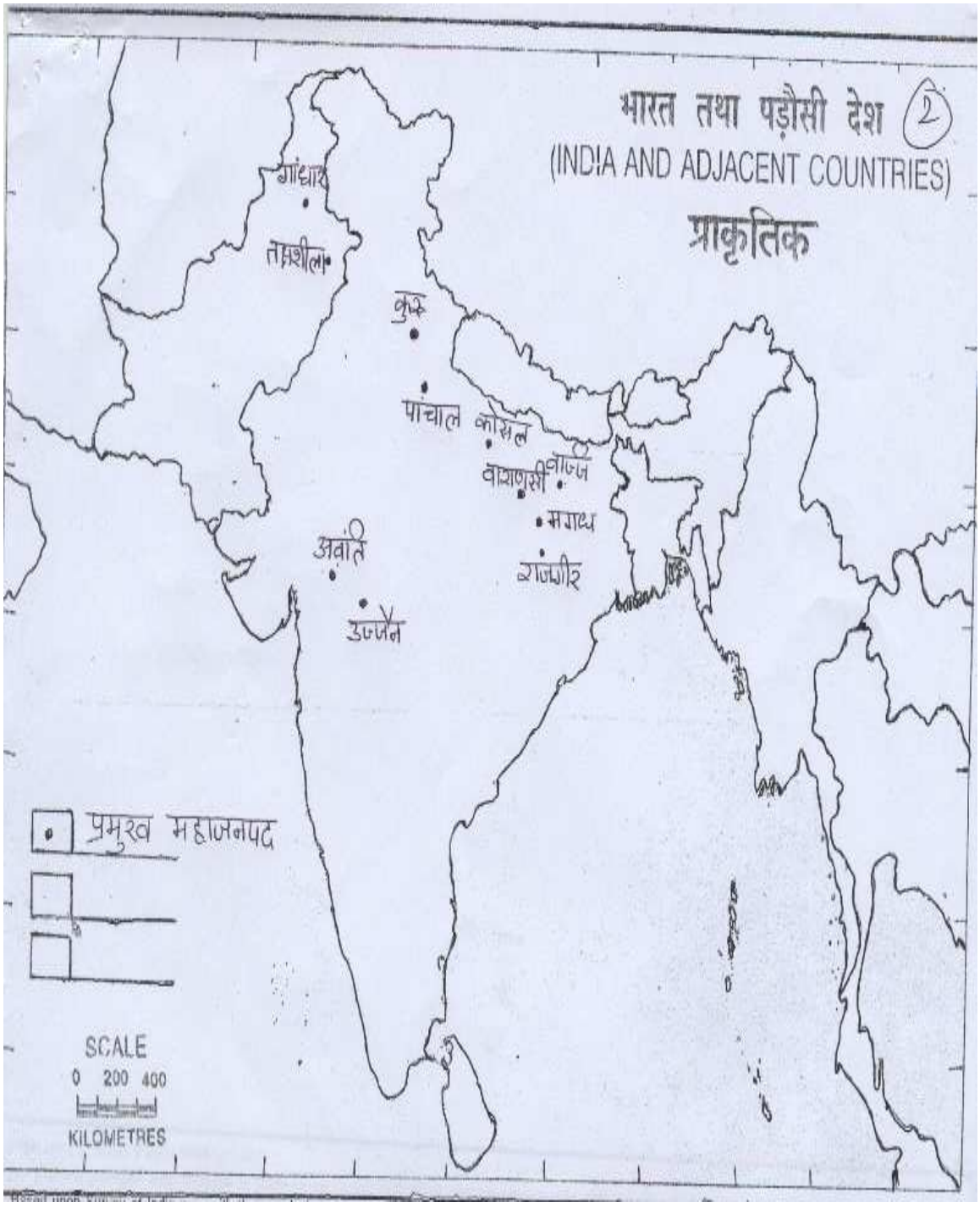
भारत तथा पड़ौसी देश (2)
(INDIA AND ADJACENT COUNTRIES)
प्राकृतिक
गांधार
तक्षशिला
कुरु
पांचाल
कोसल
वाराणसी
वज्जि
मगध
राजगीर
अवंति
उज्जैन
प्रमुख महाजनपद
SCALE
0 200 400
KILOMETRES

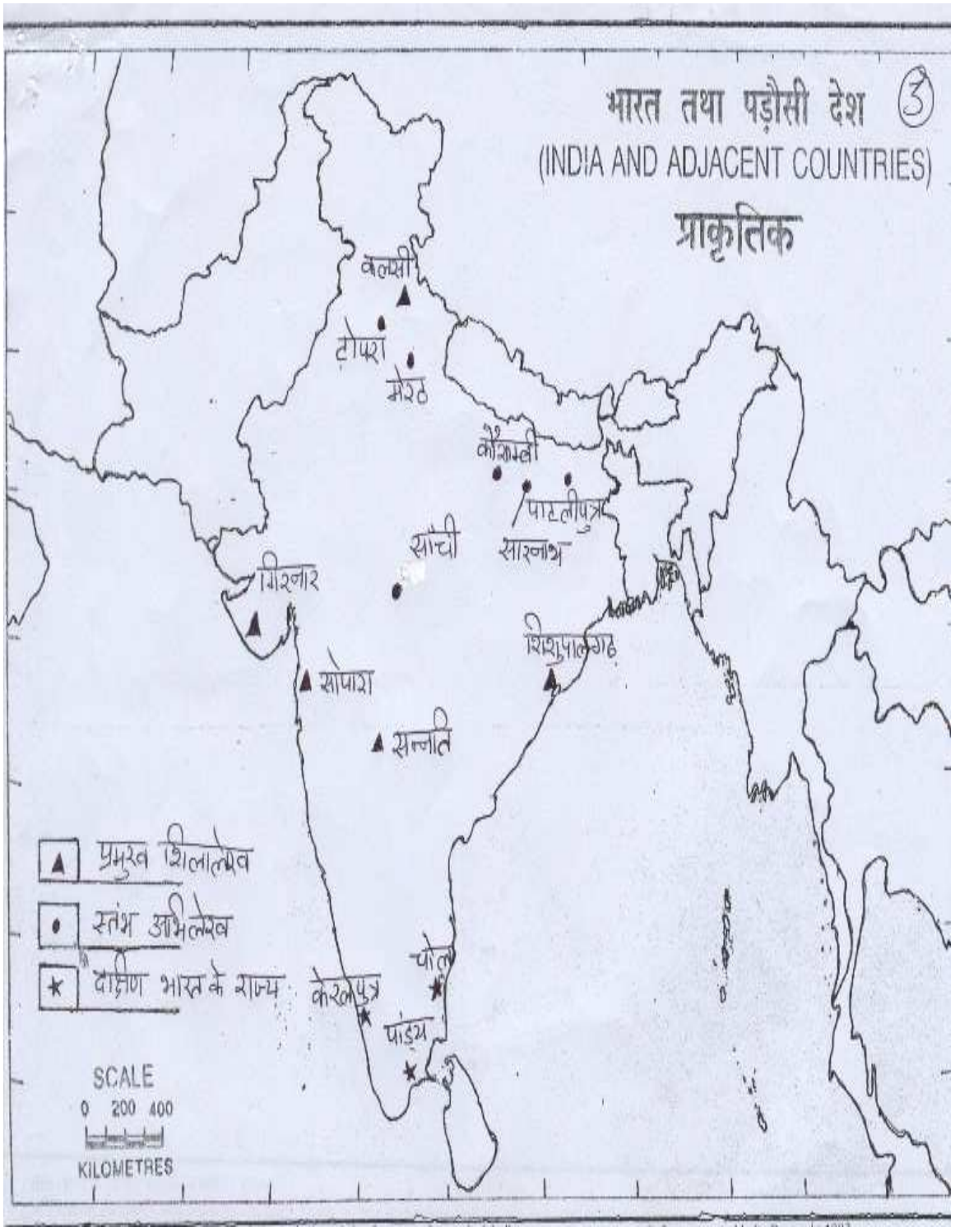
भारत तथा पड़ौसी देश ③
(INDIA AND ADJACENT COUNTRIES)
प्राकृतिक
वल्लभी
टोपरा
मेरठ
कौशाम्बी
पाटलीपुत्र
साँची
सारनाथ
गिरनार
शिशुपालगढ़
सोपारा
सन्नति
प्रमुख शिलालेख
स्तंभ अभिलेख
दक्षिण भारत के राज्य
चोल
केरलपुत्र
पांड्य
SCALE
0 200 400
KILOMETRES

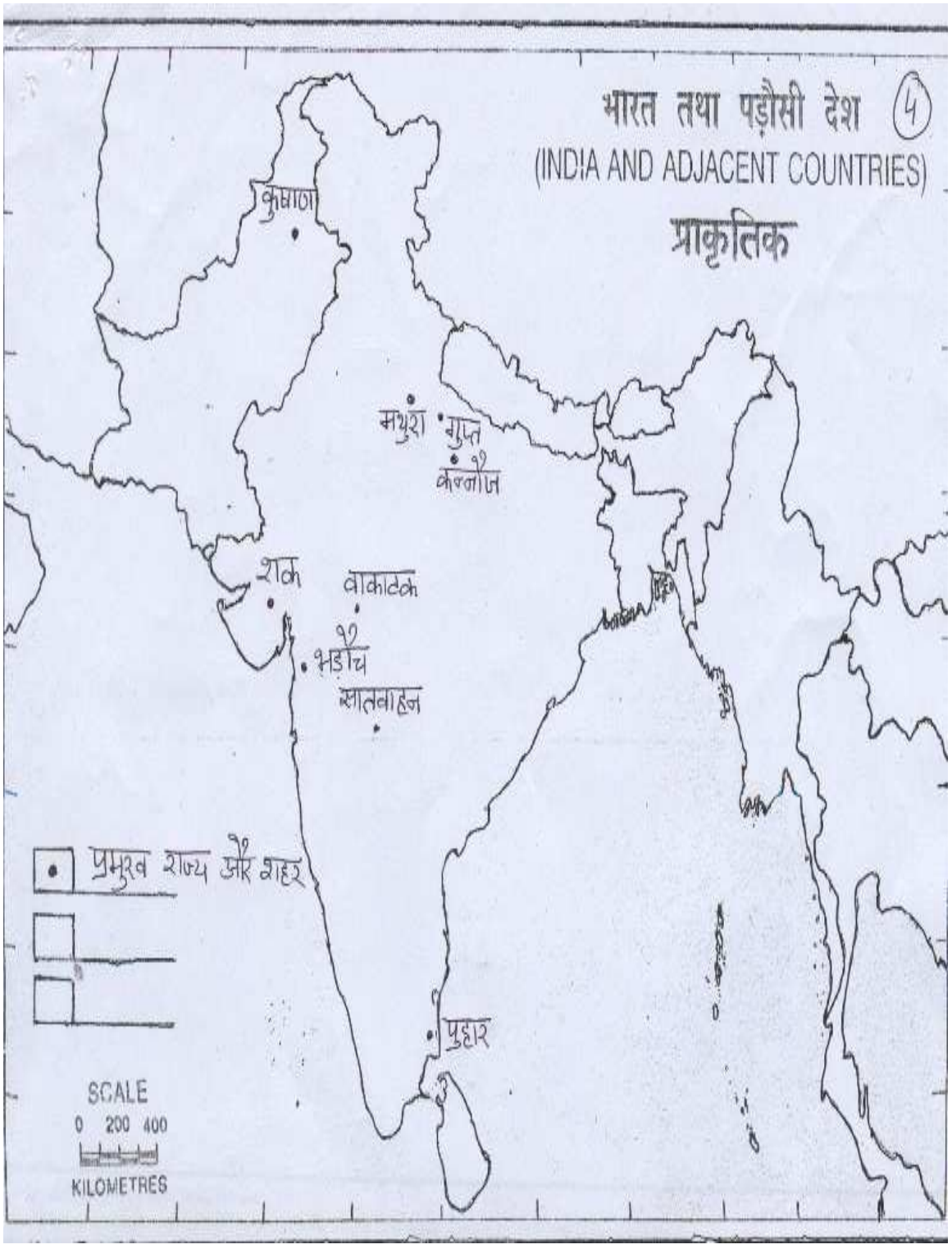
भारत तथा पड़ौसी देश (4)
(INDIA AND ADJACENT COUNTRIES)
प्राकृतिक
कुषाण
मथुरा
गुप्त
कन्नौज
शक
वाकाटक
भड़ौच
सातवाहन
प्रमुख राज्य और शहर
पुहार
SCALE
0 200 400
KILOMETRES

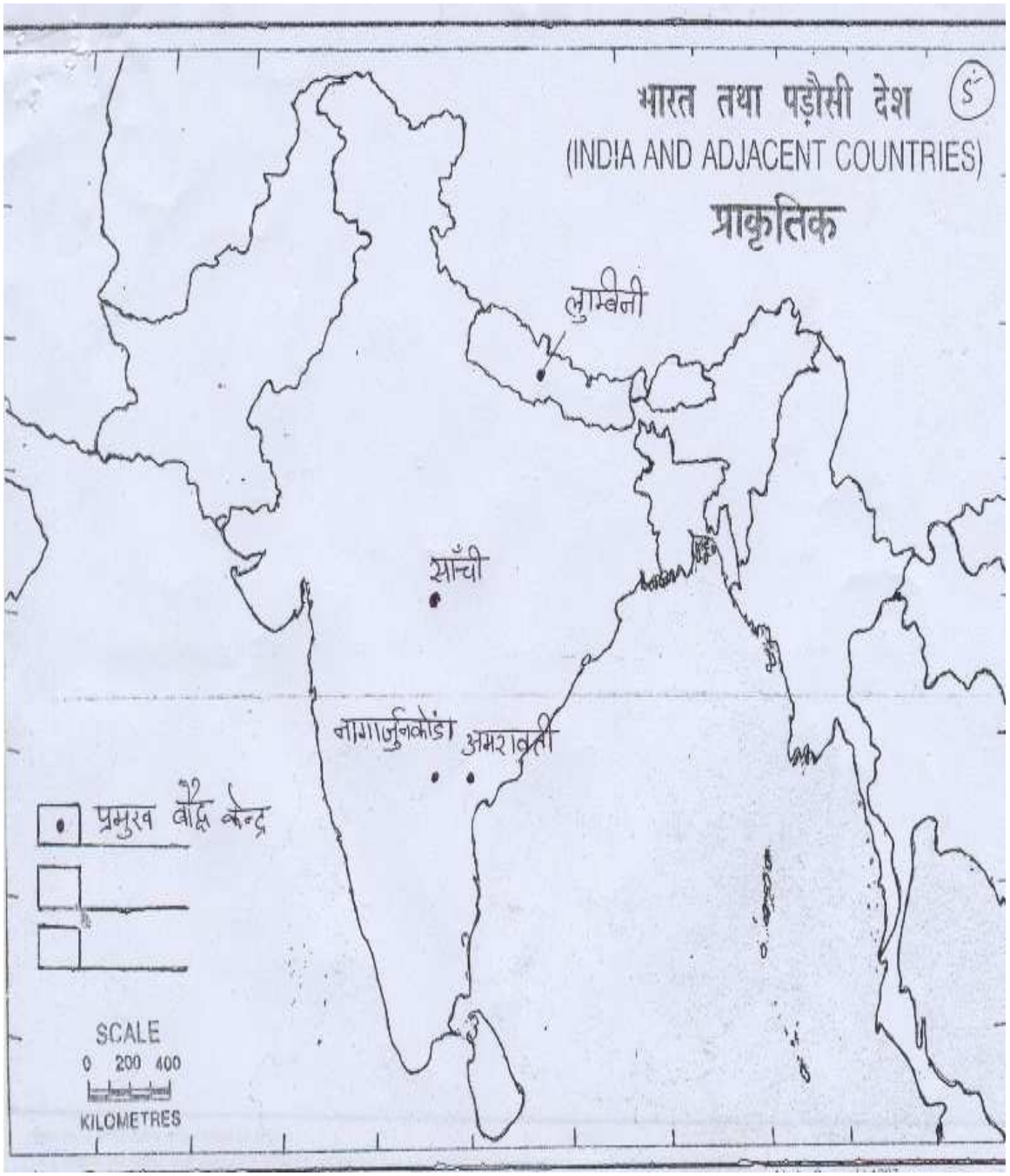
भारत तथा पड़ौसी देश
(INDIA AND ADJACENT COUNTRIES)
प्राकृतिक
लुम्बिनी
साँची
नागार्जुनकोंडा
अमरावती
प्रमुख बौद्ध केन्द्र
SCALE
0 200 400
KILOMETRES

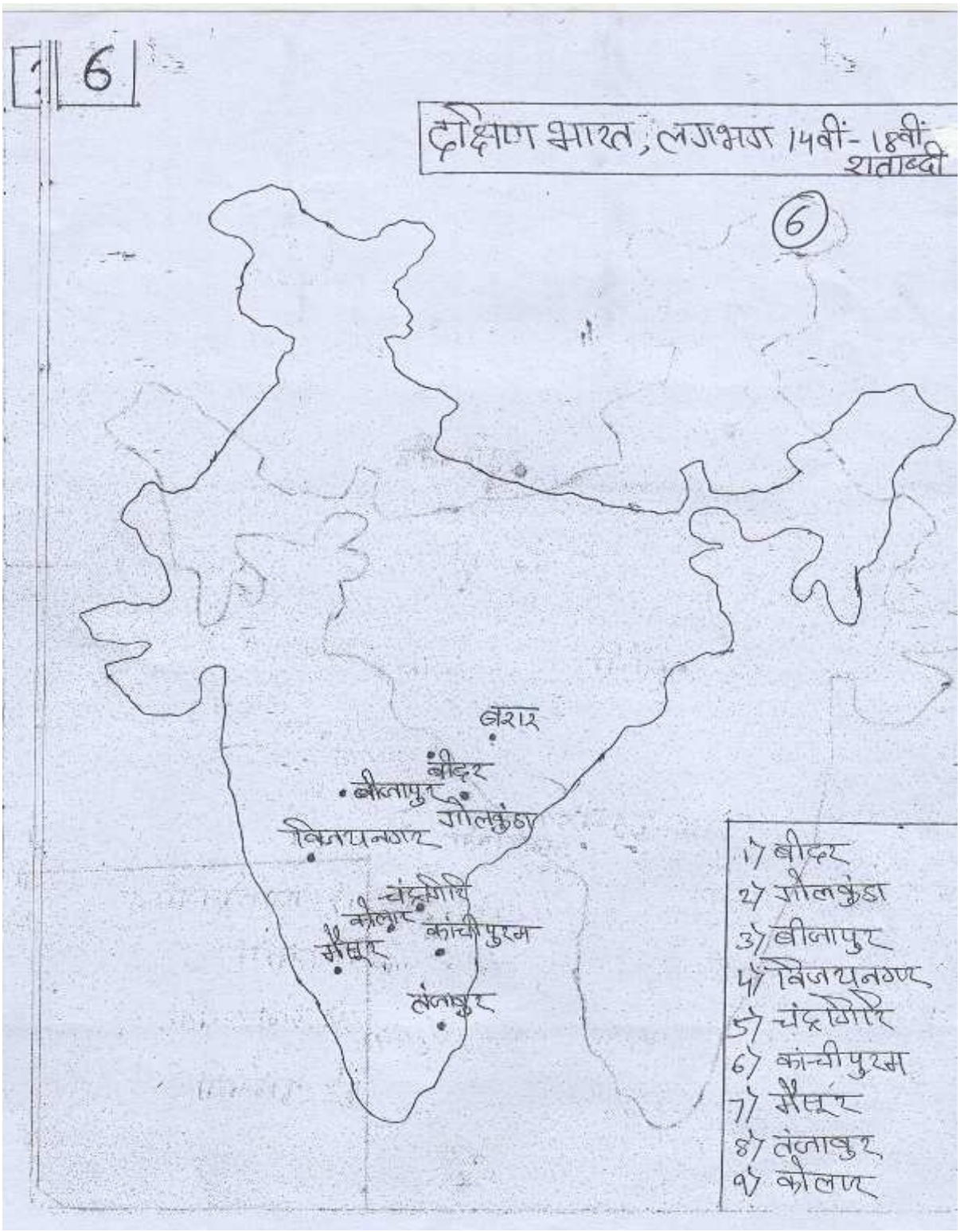

6
दक्षिण भारत, लगभग 15वीं-18वीं शताब्दी
6
बरार
बीदर
बीजापुर
गोलकुंडा
विजयनगर
चंद्रगिरि
कोलार
कांचीपुरम
मैसूर
तंजावुर
1) बीदर
2) गोलकुंडा
3) बीजापुर
4) विजयनगर
5) चंद्रगिरि
6) कांचीपुरम
7) मैसूर
8) तंजावुर
9) कोलार

7

बाबर, अकबर और औरंगजेब के अधीन राज्य

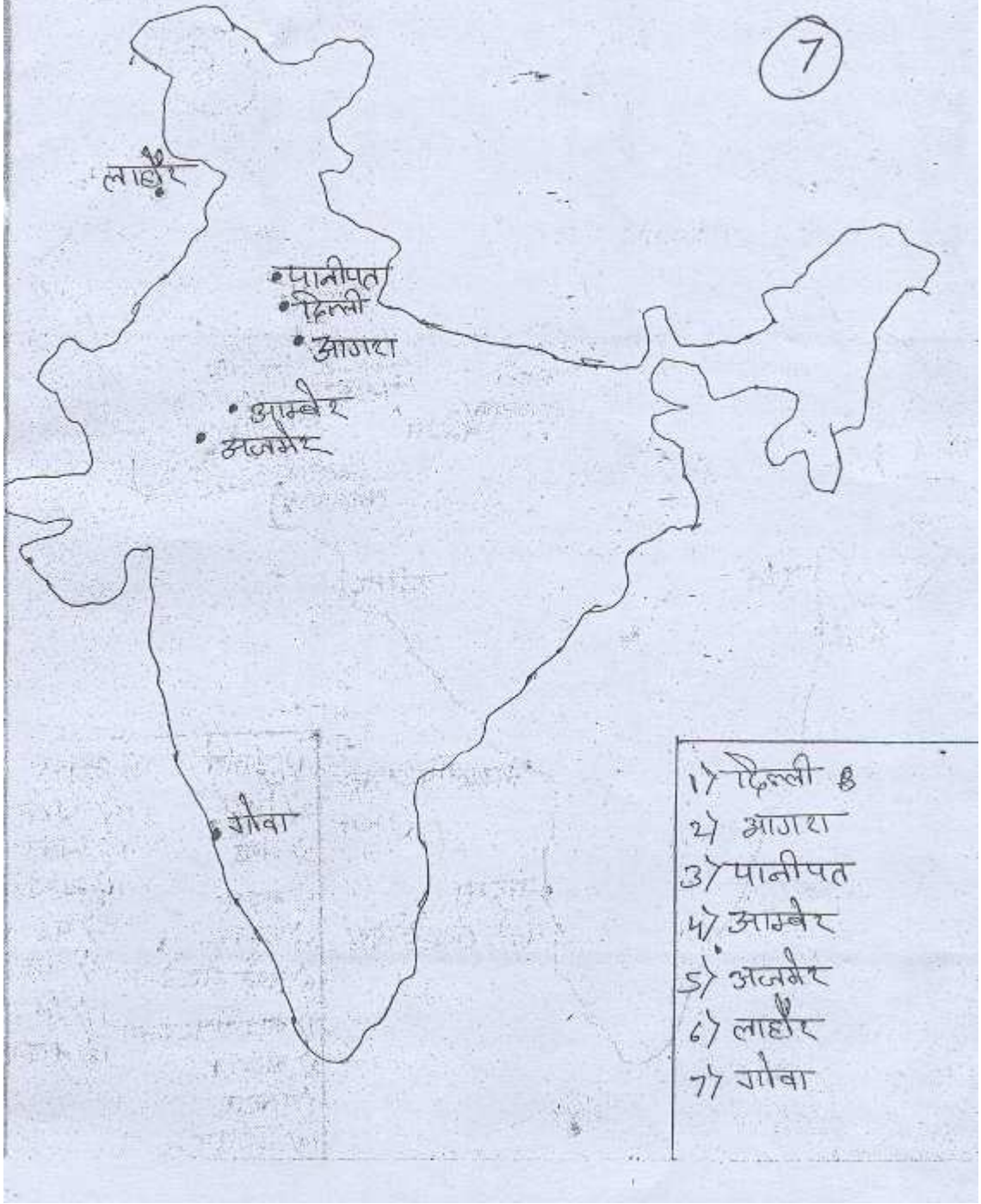

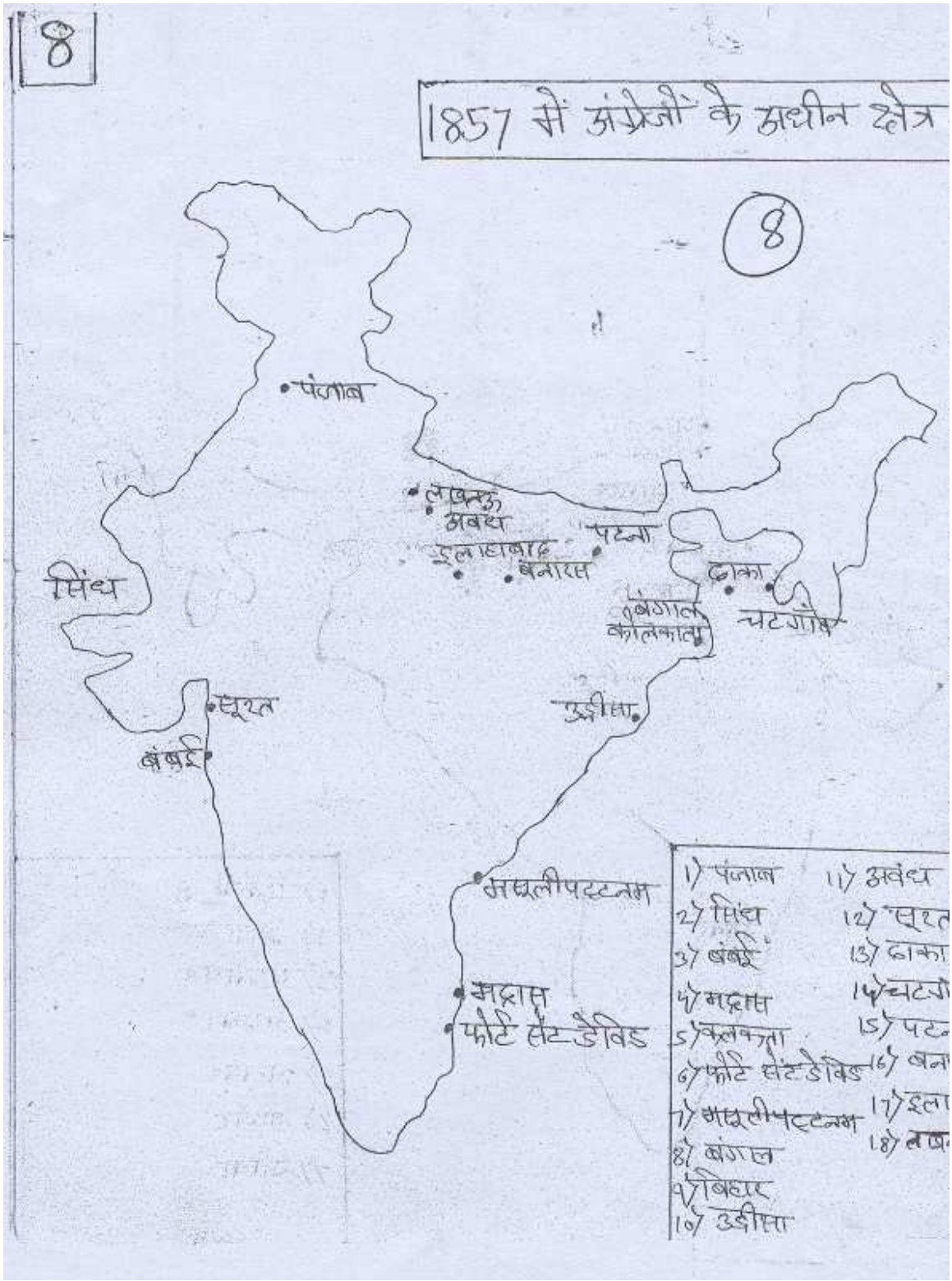
8
1857 में अंग्रेजों के अधीन क्षेत्र
8
पंजाब
लखनऊ
अवध
इलाहाबाद
बनारस
पटना
ढाका
सिंध
बंगाल
कलकत्ता
चटगाँव
सूरत
उड़ीसा
बंबई
मछलीपट्टनम
मद्रास
फोर्ट सेंट डेविड
1) पंजाब
2) सिंध
3) बंबई
4) मद्रास
5) कलकत्ता
6) फोर्ट सेंट डेविड
7) मछलीपट्टनम
8) बंगाल
9) बिहार
10) उड़ीसा
11) अवध
12) सूरत
13) ढाका
14) चटगाँ
15) पट
16) बन
17) इला
18) लख

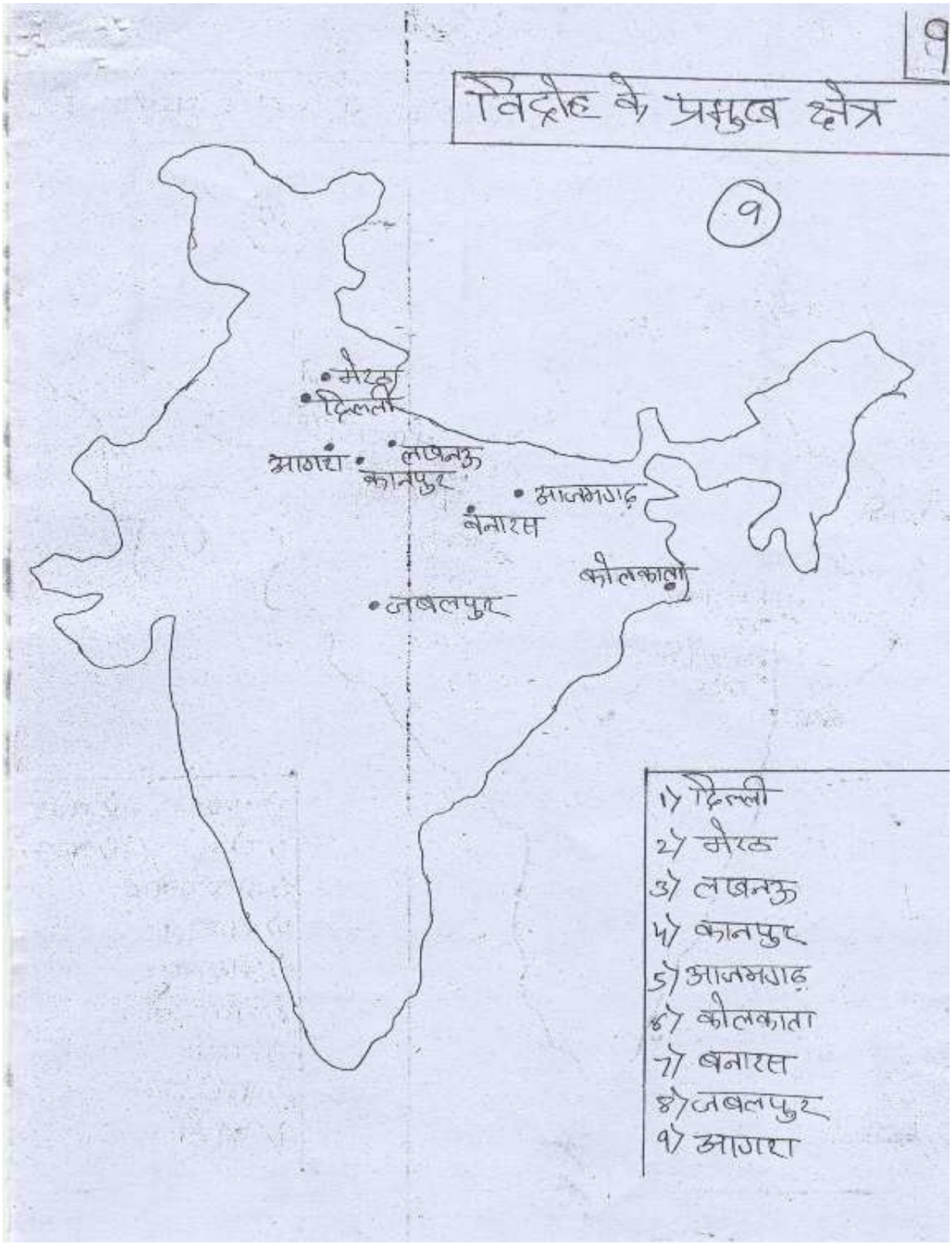
9
विद्रोह के प्रमुख क्षेत्र
(9)
मेरठ
दिल्ली
आगरा
लखनऊ
कानपुर
आजमगढ़
बनारस
कोलकाता
जबलपुर
1) दिल्ली
2) मेरठ
3) लखनऊ
4) कानपुर
5) आजमगढ़
6) कोलकाता
7) बनारस
8) जबलपुर
9) आगरा

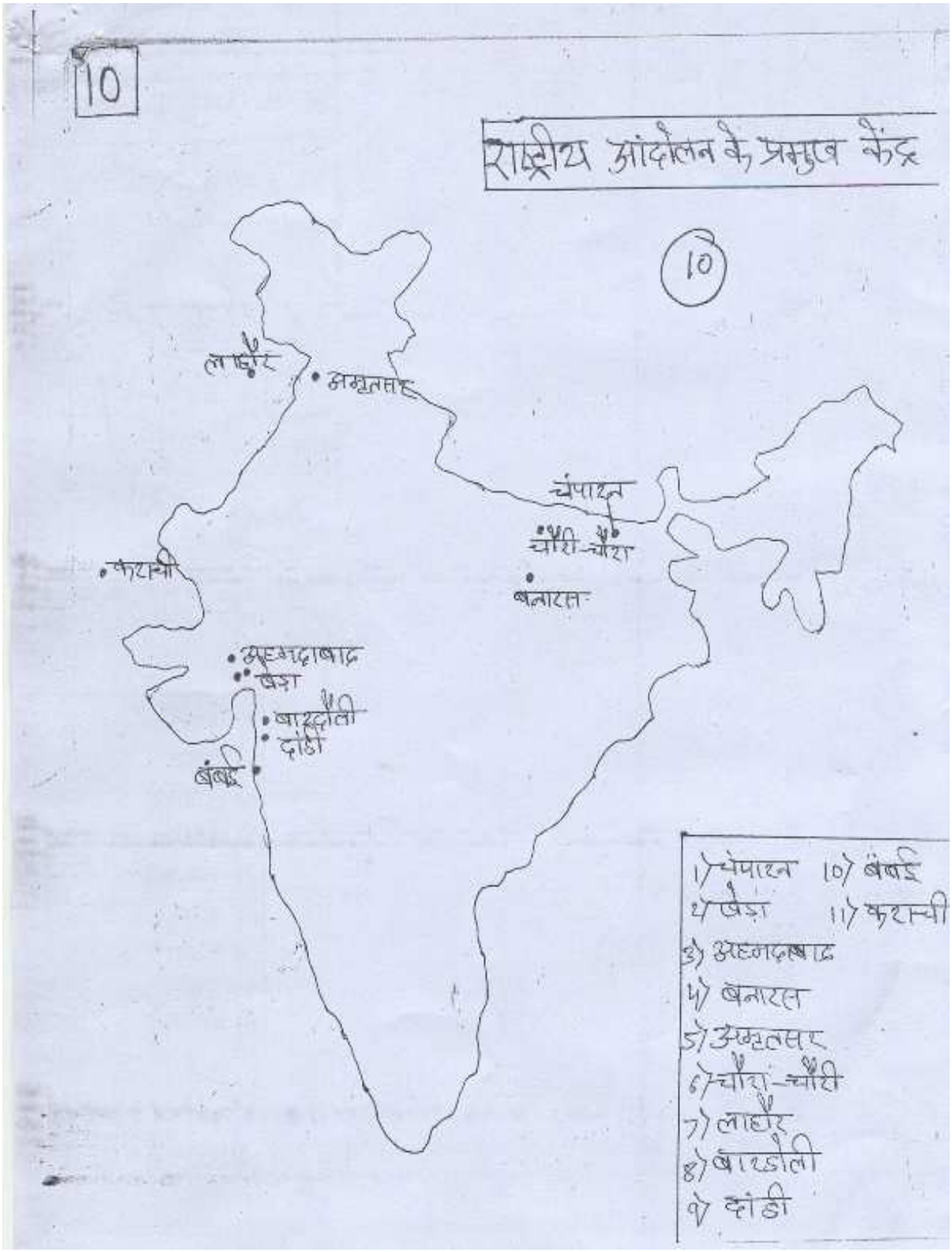
10
राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख केंद्र
10
लाहौर
अमृतसर
चंपारन
चौरी-चौरा
कराची
बनारस
अहमदाबाद
खेड़ा
बारडोली
दांडी
बंबई
1) चंपारन 10) बंबई
2) खेड़ा 11) कराची
3) अहमदाबाद
4) बनारस
5) अमृतसर
6) चौरा-चौरी
7) लाहौर
8) बारडोली
9) दांडी